R.N.I. No.HIN/2002/8718 www.aksnews.com M.P./BHOPAL/642/2021-23

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

अक्स

वर्ष : 22 । अंक : 06
16 से 31 दिसम्बर 2023
पृष्ठ : 48
मूल्य : 25 रु.

भाजपा ने सोशल इंजीनियरिंग से बदली राजनीतिक परंपरा

विष्णु, मोहन और भजन... के सिर सजा सत्ता का ताज

अपने एक दांव से मिशन 2024 को साधा भाजपा ने

इंडिया गठबंधन के सारे समीकरणों पर फेरा पानी

ANU SALES CORPORATION

We Deal in Pathology & Medical Equipment

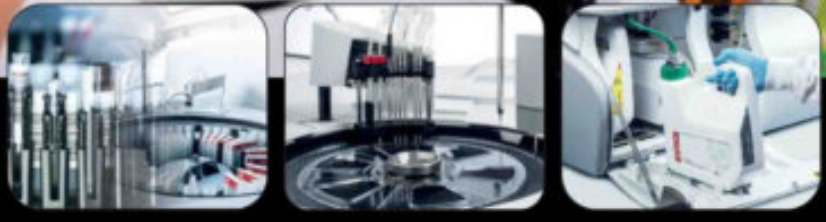

BA200

BioSystems

The Highest Flexibility

Address : M-179, Gautam Nagar,
Near Chetak Bridge, Bhopal-462023

9329556524, 9329556530 Email : ascbhopal@gmail.com

इस अंक में

विडंबना

9 | बेपटरी हुई किसान ट्रेन

देश के एक कोने से दूसरे कोने तक किसानों द्वारा उत्पादित सब्जियों और फलों को सस्ती दर पर समय पर पहुंचाने के लिए सरकार ने किसान ट्रेन योजना शुरू की थी, लेकिन यह योजना अब लगभग बेपटरी हो गई है।

राजपथ

10–11 | 100 दिनी फॉर्मूला हिट

मप्र में इस बार भाजपा ने पुरानी परंपरा को तोड़ते हुए नई रणनीति और नए अंदाज से चुनाव लड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि मप्र में भाजपा को प्रचंड बहुमत मिला है। कांग्रेस को पटखनी देकर भाजपा सूबे में 163 सीटों पर...

राजकाज

13 | अब विभीषणों पर नजर...

विधानसभा चुनाव में उम्मीद से अधिक सीटें जीतकर भाजपा फिर से सत्ता में वापसी कर चुकी है। इसके बाद भाजपा संगठन की नजर अब विभीषणों पर लग गई है। यही वजह है कि अब पार्टी ने ऐसे नेताओं की सूची जिलों से मांगी है। दरअसल चुनावी...

खेती-किसानी

15 | घातक साबित हो रही...

किसान को अन्नदाता कहा जाता है, लेकिन आज के समय में हमारे देश के किसानों को सस्ती और सुलभ खाद देने के नाम पर आत्मनिर्भर लिखे खाद के बोरों में चीन द्वारा निर्मित की उर्वरक खाद मिल रही है। चीन में बन रही खाद के बोरों पर फोटो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लगी है। यह सब...

आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

भाजपा ने मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में नए चेहरों को मौका देकर मिशन 2024 के लिए बड़ा दांव खेला है। मप्र में डॉ. मोहन यादव, छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय और राजस्थान में भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री चुना गया है। तीनों नए चेहरे हैं और अलग-अलग जातियों से आते हैं। मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को बड़ी उम्मीदों के साथ मुख्यमंत्री पद की कुर्सी सौंपी गई है। उनके सामने चुनौतियां भी बड़ी हैं। अब देखना यह है कि वे इन चुनौतियों से मप्र में विकास की गंगा किस प्रकार बहाते हैं।

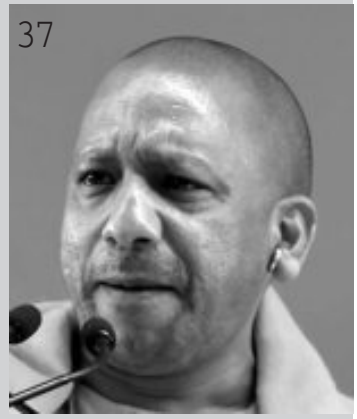

राजनीति

30–31 | भाजपा में नई पौध को महत्व

चाणक्य नीति से लेकर राजनीतिक विज्ञान तक सब में सत्ता के संदर्भ में केवल एकसमान विचार चलता है और उन सबका सार भी केवल एक ही है। सार यह कि सत्ता के लिए सर उठाने वालों के आसपास के या करीबी किसी बेहद कमजोर को ही सर्वाधिक सामर्थ्यवान बना दो, ताकि ताकतवर लोगों...

महाराष्ट्र

35 | नवाब को लेकर रार

महाराष्ट्र की राजनीति अक्सर चर्चाओं में रहती है। कभी शिवसेना तो कभी एनसीपी के दो फाड़ होने का मामला लगातार सुर्खियों में रहा है। इस बीच अब महाराष्ट्र की शिंदे-फडणवीस सरकार में तकरार नजर आने लगी है। कारण, डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने दूसरे डिप्टी...

बिहार

38 | राहुल-नीतीश में उलझी...

बिहार कांग्रेस के एक और विधायक ने नीतीश कुमार के हाथ में नेतृत्व देने की बात कहकर बिहार की राजनीति में हलचल मचा दी है। यह कोई पहली बार नहीं, कुछ ही दिन पहले कांग्रेस की एक और महिला विधायक ने नीतीश कुमार को पीएम का...

6-7 अंदर की बात
41 महिला जगत
42 अध्यात्म
43 कहानी
44 खेल
45 फिल्म
46 व्यंग्य

अपनी बात

नई सरकार... भारी पड़ेगा वित्तीय भार

मप्र में डॉ. मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाकर जहां भाजपा आलाकमान ने सभी को चौंका दिया है, वहीं नई सरकार और नए मुख्यमंत्री के सामने चुनौतियों का पहाड़ भी खड़ा हो गया है। सबसे बड़ी चुनौती वित्तीय संकट की है। सरकार के सामने खड़ी इस महाचुनौती पर ये पंक्तियां खरी उतरती हैं...

आहिस्ता चल ऐ जिंदगी, कई कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ दर्द मिटाना बाकी है, कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

जी, हां...नए मुख्यमंत्री प्रदेश और यहां की जनता के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं। इसकी झलक उन्होंने कई अवसरों पर दे दी है। लेकिन नई सरकार पर योजनाओं का वित्तीय भार भारी पड़ेगा। 3.5 लाख करोड़ रुपए के कर्ज में चल रही मप्र सरकार का बजट योजनाओं ने इस कदर बिगाड़ा है कि प्रदेश के नए नवेले मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सरकार के सामने समस्या खड़ी हो गई है। गौरतलब है कि मप्र विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा ने लाड़ली बहना योजना, 450 रुपए में गैस सिलेंडर, किसान सम्मान निधि, एमएसपी पर गेंहू और धान खरीदने जैसी कई तरह की लोकलुभावन घोषणाएं की हुई हैं। इसके बाद भाजपा ने 163 सीट के साथ बंपर जीत दर्ज की। अब नए मुख्यमंत्री मोहन यादव के सामने सबसे बड़ी चुनौती पुरानी योजनाओं को चलाने और नई घोषणाओं को पूरा करने के लिए बजट जुटाने की होगी। जानकारों का कहना है कि सरकार की आय की तुलना में खर्च बहुत ज्यादा है। ऐसे में नई सरकार को राजस्व बढ़ाने के विकल्प पर काम करना होगा। अगर ऐसा करने में सरकार सफल नहीं होती है, तो फिर प्रदेश पर कर्ज दर कर्ज बढ़ना तय है। प्रदेश में लाड़ली बहना योजना के तहत महिलाओं को अभी 1250 रुपए मिल रहे है। इसकी सात किश्तें दी जा चुकी हैं। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान चुनाव के दौरान 1250 रुपए को तीन हजार रुपए तक करने का ऐलान कर चुके हैं। यह राशि करीब 1.31 करोड़ महिलाओं को दी जा रही है। उधर, प्रदेश सरकार के कर्ज का बोझ उसके सालाना खर्च से भी ज्यादा यानी करीब 3.31 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा हो गया है। इसमें मूलधन के अलावा करीब 25 हजार करोड़ रुपए सालाना ब्याज देना पड़ रहा है। इस वित्तीय वर्ष में सरकार का राजस्व आय 2 लाख 3 हजार करोड़ रुपए के आसपास है, जबकि व्यय 2 लाख 2 हजार करोड़ रुपए। ऐसे में नए मुख्यमंत्री के सामने घोषणाओं को पूरा करने के साथ ही कर्ज को चुकाना भी एक बड़ी चुनौती होगी। सरकार को चाहिए की वित्तीय अनुशासन का पालन करने पर जोर दे और खर्च में कटौती करने के लिए फालतू खर्च पर अंकुश लगाए। वर्ष 2023 की बात करें तो सरकार अब तक 17 बार कर्ज ले चुकी है। चालू वित्तीय वर्ष 2023-24 में 8 बार कर्ज लिया गया। चुनाव आचार संहिता के चलते तीन बार कर्ज लिया गया। मतगणना के चार दिन पहले भी 2 हजार करोड़ का कर्ज लिया गया। तर्क दिया गया कि कर्ज लेना कोई गलत नहीं है, विकास कार्य होंगे तो कर्ज लिया ही जाएगा। चुनाव में भाजपा ने कई वादे किए। जिनका संकल्प पत्र में उल्लेख किया। भाजपा को फिर सत्ता मिली है। ऐसे में वादे पूरे करने होंगे। इसमें लाड़लियों का ध्यान रखने के साथ, युवा, किसान, व्यापारियों सहित अन्य वर्ग का ध्यान रखा गया है। प्रदेश सरकार पर महीने दर महीने कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है। सूत्रों ने बताया कि साल के अंत तक राज्य पर कुल कर्ज 3.85 लाख करोड़ रुपए तक जा सकता है। प्रदेश सरकार पर चल रहे पुराने लोन का मूलधन भी नए कर्ज से चुकाया जाएगा। ऐसे में अनुमान है कि वित्तीय वर्ष 2023-24 के समाप्त होने से पहले ही सरकार पर कर्ज बढ़कर 4.30 लाख करोड़ के आसपास पहुंच जाएगा।

- राजेन्द्र आगाल

पाक्षिक अक्स

वर्ष 22, अंक 6, पृष्ठ-48, 16 से 31 दिसंबर, 2023

प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल

सम्पादकीय कार्यालय :
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 (म.प्र.),
फोन नं. 0755-2557777, टेलीफेक्स - 0755-4017788
email : akshmagazine@gmail.com
Website : www.akshnews.com
RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2021-23

ब्यूरो
कोलकाता:- इंद्रकुमार, **छत्तीसगढ़:**- संजय शुक्ला, मार्केण्डेय तिवारी,
जयपुर:- आर.के. बिन्नानी, **लखनऊ :**- मधु आलोक निगम।

प्रदेश संवाददाता
094251 25096 (इंदौर) विकास दुबे
098276 18400 (जबलपुर) धर्मेन्द्र कथूरिया
094259 85070, (उज्जैन) श्यामसिंह सिकरवार
089823 27267, (रतलाम) सुभाष सोमानी
075666 71111, (विदिशा) मोहित बंसल

क्षेत्रीय कार्यालय
नई दिल्ली : ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी फोन : 9811017939
जयपुर : सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान) मोबाइल-09829 010331
रायपुर : एमआईजी 1 सेक्टर-3 शंकर नगर, फोन : 0771 2282517
भिलाई : नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर, भिलाई, मोबाइल 094241 08015
इंदौर : नवीन रघुवंशी, रघुवंशी कॉलोनी, इंदौर, मो.-9827227000
देवास : जय सिंह, देवास मो.-7000526104, 9907353976

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।

पत्र–संपादक के नाम

aksnews.com

सराहनीय कदम...

किसी भी राज्य या देश को शिक्षित करना वहां की सरकार की पहली प्राथमिकता होती है। इसके लिए 2026 तक पीएम-श्री योजना के तहत 5 वर्षों की अवधि के लिए 27,360 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। सरकार की तरफ से यह शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कदम है।

● **प्रिया सिंह,** भोपाल (म.प्र.)

ध्यान दे प्रशासन

प्रदेश में विधानसभा चुनाव तो संपन्न हो गए हैं, लेकिन जिन अफसरों ने चुनाव आयोग के दिशा-निर्देश पर ईमानदारी के साथ काम किया है, वे राजनीतिक पार्टियों के निशाने पर हैं। कई राजनेताओं द्वारा अधिकारियों को धमकाया भी गया है। शासन-प्रशासन को इस तरफ ध्यान देना चाहिए।

● **विजय पुरोहित,** इंदौर (म.प्र.)

दिव्यांगों की यात्रा

भोपाल मेट्रो में दिव्यांगों के लिए यात्रा करना आसान होगा। यहां स्टेशन, लिफ्ट और टिकट काउंटर पर दिव्यांगों की सुविधा का विशेष ध्यान रखा जाएगा। यहां दृष्टिबाधितों के लिए ब्रेल लिपि का इस्तेमाल भी किया जाएगा। मेट्रो में यह सुविधा मिलना दिव्यांगों के लिए खुशी की बात है।

● **अनूप कुमार,** जबलपुर (म.प्र.)

बड़ी अर्थव्यवस्था बनने को तैयार भारत

भारत के विकास की गति को देखते हुए पहले यह अनुमान लगाया गया था कि भारत 2027 तक दुनिया की चौथी और 2029 तक दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन सकता है। लेकिन ताजा आंकड़ों तथा रिजर्व बैंक के गवर्नर के उत्साहजनक बयान से यह उम्मीद जगती है कि भारत समय से पहले ही लक्ष्य प्राप्त कर लेगा। फिलहाल विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में भारत का योगदान 3.6 प्रतिशत है जबकि 2014 में यह 2.6 प्रतिशत था। पहले रूस यूक्रेन युद्ध, फिर इजराइल और हमास के बीच सीधी जंग के कारण तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव तथा अन्य कारकों से दुनिया के अनेक हिस्सों में आर्थिक गतिविधियां सुस्त हैं, जबकि भारत में लगातार कारोबारी माहौल बेहतर हो रहा है।

● **शिवम यादव,** कटनी (म.प्र.)

किसको मिला कितना चंदा

हिंदुस्तान में गुप्त चंदे का मामला तो बहुत पहले से उठता रहा है; लेकिन उसमें तब भी मोटा-मोटी पता चल जाता था कि किस पार्टी के पास कितना चंदा आया या पार्टी की आमदनी कितनी है? उसके पास पैसा कितना है? लेकिन जबसे चुनावी बॉन्ड के जरिए पार्टियों को चंदा मिलने लगा है, तबसे यह गोपनीयता और ज्यादा बढ़ गई है। आज तक केंद्र की मोदी सरकार ने नहीं बताया कि भाजपा को अब तक कितना चंदा मिला है? एक रिपोर्ट के मुताबिक, बीते पांच वर्षों में देश की राजनीतिक पार्टियों को करीब 9,208.23 करोड़ रुपए का चंदा मिला है।

● **राहुल राजपूत,** नई दिल्ली

कब लागू होगा ई-सिस्टम

ई-ऑफिस व्यवस्था शिवराज सरकार में लागू हुई थी लेकिन विधानसभा चुनाव को देखते हुए इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया था। शिवराज सरकार ने मंत्रालय में ई-ऑफिस सिस्टम लागू करने के लिए करोड़ों खर्च कर हाईटेक कम्प्यूटर एवं प्रिंटर भी लगवाए। कुछ महीनों के लिए मंत्रालय में ई-ऑफिस पर काम भी हुआ, लेकिन अधिकारियों के ढुलमुल रवैये से ई-ऑफिस सिस्टम ठप हो गया। सवाल ये है कि ई-सिस्टम सभी विभागों में कब तक लागू होगा।

● **सबा खान,** सीहोर (म.प्र.)

पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

अक्स

150 जोन-1, मनोरमा काम्पलेक्स,
एफ-02, 03, एमपी नगर, भोपाल

बढ़ सकती हैं भाजपा की मुश्किलें

उप्र में आगामी लोकसभा चुनाव से पहले बुंदेलखंड क्षेत्र में भाजपा की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के करीबी माने जाने वाले पूर्व आईपीएस अधिकारी और डीजीपी रहे सुलखान सिंह ने एक प्रेस वार्ता में बुंदेलखंड को अलग राज्य बनाए जाने की मांग की है। इस संदर्भ में उन्होंने राजनीतिक दल का भी ऐलान किया है। सुलखान सिंह ने अपनी पार्टी का नाम बुंदेलखंड लोकतांत्रिक पार्टी रखा है। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि सुलखान सिंह के इस कदम से भाजपा की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। उन्होंने मांग की है कि उप्र के बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, जालौन, झांसी, ललितपुर और मप्र के दमोह, पन्ना, छतरपुर, दतिया, सागर, टीकमगढ़, निवाड़ी और अशोकनगर को मिलाकर बुंदेलखंड अलग राज्य बनाया जाए। इससे पहले भाजपा नेता संजीव बालियान ने भी पश्चिमी उप्र की मांग की थी। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि सुलखान सिंह के इस कदम से भाजपा पर कई तरह से असर पड़ सकता है। सबसे पहले यह पार्टी आगामी लोकसभा चुनाव में बुंदेलखंड के क्षेत्रों में भाजपा के लिए चुनौती बन सकती है। सुलखान सिंह के पास एक मजबूत राजनीतिक पृष्ठभूमि है और वे क्षेत्र में काफी लोकप्रिय हैं। ऐसे में उनकी नई पार्टी के चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करने की संभावना है।

सियासी पारी खेलेंगे धोनी ?

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की भाजपा नेताओं के साथ एक तस्वीर वायरल हो रही है। इसके वायरल होने के बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि अब वह सियासी पारी शुरू कर सकते हैं। बीते 30 नवंबर को रांची में राज्यसभा सांसद सह झारखंड प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष दीपक प्रकाश, रांची विधायक सह पूर्व झारखंड विधानसभा अध्यक्ष सीपी सिंह और भाजपा विधायक समरी लाल ने धोनी से मुलाकात के बाद राजनीतिक गलियारों में चर्चा का बाजार गर्म हो गया है। कहा जा रहा है कि क्या धोनी राजनीति से अपनी नई पारी की शुरुआत करेंगे? अगर करेंगे तो क्या भाजपा के साथ? या फिर यह मुलाकात महज इत्तेफाक है। जानकारों का कहना है कि महेंद्र सिंह धोनी हमेशा अपने चौंकाने वाले फैसलों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने साल 2014 में दिसंबर के महीने में अचानक क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की थी। इस फैसले से हर कोई हैरान था, क्योंकि धोनी 90 टेस्ट मैच खेल चुके थे। इसकी वजह से सभी को लगता था कि वह कम से कम 100 टेस्ट मैच खेलेंगे। टेस्ट फॉर्मेट से संन्यास के बाद धोनी वनडे मैच खेल रहे थे। साल 2019 के वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच खेलने के बाद अगले एक साल तक महेंद्र सिंह धोनी ने कोई अंतर्राष्ट्रीय मुकाबला नहीं खेला और इसके बाद साल 2020 अगस्त के महीने में अचानक संन्यास का ऐलान कर दिया। ऐसे में संभावना जताई जा सकती है कि वो अब राजनीति में एंट्री कर सकते हैं।

खामोश क्यों है केशव प्रसाद मौर्य ?

पिछले दो कैबिनेट की बैठकों में केशव प्रसाद मौर्य नजर नहीं आए हैं जिसके बाद तमाम किंतु-परंतु के बीच सोशल मीडिया से लेकर सत्ता के गलियारों में तरह-तरह की बातें हो रही हैं। भाजपा कैंप में भी इस बात को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं, वहीं सवाल उठ रहे हैं कि आखिर पूरे मामले में केशव प्रसाद मौर्य खामोश क्यों हैं? हाल के दिनों में वे दिल्ली जाकर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से भी मिलते रहे हैं। कुछ दिनों पहले गृहमंत्री अमित शाह से भी उनकी मुलाकात हुई थी। ऐसे में सरकारी कार्यक्रमों में उनकी अनुपस्थिति को केशव की नाराजगी से जोड़कर देखा जा रहा है। इसे लेकर सवाल उठ रहे हैं कि क्या ये महज एक संयोग है या फिर बात कुछ और है। आजकल केशव प्रसाद मौर्य के मन में क्या चल रहा है, इसे लेकर कई सवाल उठ रहे हैं। राजनीतिक पंडितों का कहना है कि जरूरी नहीं कि हर बात जुबान से कही जाए। कई बार तो इशारे और कुछ मौकों पर उनकी गैर मौजूदगी ही सब कुछ कह जाती है जिन्हें समझना है वे समझ ही जाते हैं। केशव प्रसाद मौर्य पिछड़े समाज से आते हैं और पिछड़े समाज को लुभाने के लिए भाजपा एड़ी-चोटी का जोर लगा रही है, फिर केशव की अनदेखी क्यों हो रही है।

फ्रंटफुट पर ममता

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के बाद अब सभी राजनीतिक दलों की नजर लोकसभा चुनाव 2024 पर है जिसमें कुछ ही महीने बाकी हैं। इससे पहले कई राज्यों में केंद्र और राज्यों में टकराव तेज हो गया है। नया मामला पश्चिम बंगाल का है जहां एक बार फिर ममता बनर्जी केंद्र के खिलाफ आक्रामक नजर आ रही हैं। हाल ही में केंद्र की मोदी सरकार पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं के खिलाफ भी वैसी ही कार्रवाई होगी जैसे ईडी और सीबीआई टीएमसी नेताओं के साथ कर रही है। अब जैसे को तैसा वाली पॉलिसी पर बंगाल से लेकर दिल्ली तक सियासत शुरू हो गई है। पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने एक कार्यक्रम में तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी द्वारा आपराधिक धमकी देने का आरोप लगाते हुए एक औपचारिक शिकायत दर्ज की है। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें पार्टी छोड़ने के बाद से परेशान करने वाले और मनगढ़ंत मामलों का सामना करना पड़ा है।

राजनीति में एंट्री करेंगी प्रज्ञा!

पिछले सप्ताह बसपा सुप्रीमो मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। इसके बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि जल्द ही उनकी पत्नी भी राजनीति में उतर सकती हैं। आकाश आनंद पिछले कुछ समय से राजनीति में काफी सक्रिय दिख रहे हैं। पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के दौरान भी काम करते दिखे थे। माना जा रहा है कि लोकसभा चुनाव में बसपा को चुनाव जिताना आकाश आनंद के लिए पहली और सबसे बड़ी परीक्षा होगी। जिसमें उनकी पत्नी प्रज्ञा का साथ भी उन्हें मिल सकता है। आकाश आनंद मायावती के छोटे भाई आनंद कुमार के बेटे हैं। आकाश ने लंदन से एमबीए की डिग्री हासिल की है। पढ़ाई के बाद जब वह भारत लौटे तो राजनीति के मैदान में उतर गए। वह मायावती के काफी करीबी रहे हैं और लगातार पार्टी की विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेते रहे हैं। वह पहली बार जनता के सामने 2017 में आए जब एक सार्वजनिक रैली के दौरान मायावती ने आकाश आनंद को मंच पर जगह दी।

हम पास-पास हैं...

राजनीति में जब व्यक्ति पद पर रहता है, तभी तक उसका कद और प्रतिष्ठा भी बनी रहती है। इसका ताजा नजारा मप्र की राजनीति में देखने को मिल रहा है। प्रदेश की राजनीति में सबसे अधिक दिन तक सत्ता की सर्वोच्च कुर्सी पर रहने वाले माननीय इस समय सबसे उपेक्षित नजर आ रहे हैं। न खुदा ही मिला न विसाल-ए-सनम...न इधर के हुए न उधर के हुए, की तर्ज पर माननीय इस समय बेचैन हैं। हालांकि सत्ता की सर्वोच्च कुर्सी पर रहने के दौरान माननीय ने अपना रसूख बुलंदी पर रखा था। इसी रसूख के कारण उन्होंने एक बंगले की आड़ में एक और बंगला हथिया लिया था। माननीय ने दोनों बंगलों को मिलाकर एक कर लिया है। कुर्सी जाने के बाद अब वे अपना आशियाना यहीं जमाएंगे। लेकिन बाजी पलटने के बाद अब माननीय के दूसरे बंगले पर उनके करीबी नेताजी की नजर पड़ गई है। ये नेताजी वर्तमान सरकार में उपमुख्यमंत्री बन गए हैं और उन्होंने माननीय द्वारा अधिग्रहित दूसरे बंगले के लिए आवेदन कर दिया है, जिसका बंगला नंबर भी 9 है। माना जा रहा है कि उपमुख्यमंत्री को जल्द ही उक्त बंगला आवंटित हो सकता है। उधर, जानकारों का कहना है कि उपमुख्यमंत्री यह संदेश देना चाहते हैं कि हम माननीय के पास ही रहना चाहते हैं। लेकिन इसके लिए उन्होंने जो कवायद की है, उससे तो यही कहा जाता है कि हम जितने पास हैं, उतने ही दूर भी।

आखिर वायरल वीडियो के पीछे कौन?

प्रदेश में विधानसभा चुनाव के दौरान अगर किसी बात की सबसे अधिक चर्चा हो रही थी, तो वह थी प्रदेश के एक कद्दावर नेता के बेटे के वायरल वीडियो की। जानकारों का कहना है कि जिस राजनेता को प्रदेश से लेकर केंद्र की राजनीति में स्वच्छ, ईमानदार और संघर्षशील नेता के रूप में जाना जाता है, उनकी छवि खराब करने के लिए ये वीडियो वायरल किए गए थे। उस समय वीडियो वायरल होने के पीछे तरह-तरह की बातें की जा रही थीं। लेकिन अब प्रदेश की राजनीतिक और प्रशासनिक वीथिका में यह चर्चा जोरों पर है कि इसके पीछे एक आईपीएस अधिकारी का हाथ था। सूत्रों का कहना है कि प्रदेश की राजनीति के एक बड़े नेता के हाथ का खिलौना बनकर उक्त आईपीएस अधिकारी ने नेताजी के बेटे के वीडियो को वायरल करवाया था। अब सत्ता की बाजी पलट गई है। जिन नेताजी के बेटे का वीडियो वायरल हुआ था, उन्हें प्रदेश के सभी विधायकों का मुखिया बना दिया गया है। यानी उनका कद अब और बढ़ गया है। ऐसे में प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में यह चर्चा भी जोरों पर हो रही है कि क्या अब नेताजी अपने बेटे के वीडियोज वायरल कराने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करेंगे?

मनपसंद कुर्सी के लिए तेज हुई दौड़

प्रदेश में नई सरकार बनने के बाद से ही प्रशासनिक वीथिका में अफसरों की हलचल तेज हो गई है। इस समय लगभग हर अफसर नई जमावट में अपने आपको फिट करने की जुगाड़ करने में जुट गया है। आलम यह है कि सरकार के मुखिया से नजदीकी बनाने के लिए उनके खास सिपाहसालारों की खोज शुरू हो गई है। हर एक अफसर की यही कोशिश है कि उसको मनपसंद कुर्सी मिल जाए। सबसे परेशान वे कुछ वरिष्ठ अफसर हैं, जो हमेशा सत्ता के करीब रहने के आदी बन चुके हैं। अफसरों की यह दौड़ दिल्ली से लेकर संघ मुख्यालय नागपुर तक हो रही है। कई अफसरों को उम्मीद है कि संघ पृष्ठभूमि का सीएम होने के कारण प्रशासनिक जमावट में भी संघ की चलेगी। इसलिए इस समय संघ पृष्ठभूमि के नेताओं की पूछपरख बढ़ गई है। एक तरफ जहां अफसर मनपसंद कुर्सी के लिए दौड़ लगा रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ सरकार ने मौसमी अफसरों की खोजबीन शुरू कर दी है। सूत्रों का कहना है कि चुनाव परिणाम आने से पहले जब कयास लगाए जा रहे थे कि प्रदेश में सत्ता परिवर्तन होगा, तब कई अफसरों ने विपक्षी पार्टी के मुखिया और मुख्यमंत्री के प्रबल दावेदार एक नेताजी से मेल मुलाकात तेज कर दी थी। कुछ अफसर तो उक्त नेताजी के जन्मदिन पर उनके बंगले पर पहुंचे और उन्हें बधाई दी। अब सरकार उन अफसरों की पड़ताल कर रही है। कहा जा रहा है कि इन अफसरों को हाशिए पर रखा जा सकता है।

दुकान खुलने से पहले बंद

प्रदेश में सत्ता की कुर्सी बदलने के बाद व्यापमं घोटाले में फंसे एक माइनिंग किंग ने एक बार फिर से प्रदेश में अपने रसूख की दुकान खोलने की कोशिश शुरू कर दी। ये महानुभाव संघ के एक कद्दावर नेता के खासमखास रहे हैं। ये नेताजी एक बार फिर से प्रदेश की राजनीति में सक्रिय नजर आने लगे हैं। ऐसे में महानुभाव ने भी अपनी अपनी जमावट शुरू की तो उनके दरबार में अफसरों की हाजिरी लगने लगी। लेकिन इसकी भनक मिलते ही पूर्व मुख्यमंत्री ने इसकी शिकायत ऊपर तक कर दी। बताया जाता है कि गत दिनों राजधानी में हुई संघ पदाधिकारियों की एक बैठक में जमकर महानुभाव की क्लास लगाई गई। उन्हें अपनी हद में रहने की हिदायत देते हुए कहा गया कि वे अधिक उछलकूद न करें, वरना परिणाम ठीक नहीं होंगे। यानी महानुभाव की दुकान खुलने से पहले ही बंद हो गई। गौरतलब है कि पूर्व में महानुभाव ने अपने रसूख के दम पर प्रदेश की राजनीतिक और प्रशासनिक वीथिका में जमकर मजा काटा है। लेकिन व्यापमं घोटाले ने इसके सारे रसूख पर इस कदर पानी फेर दिया कि ये कहीं के नहीं रहे।

साहब की रवानगी तय

प्रदेश में सत्ता की कुर्सी बदलने के बाद कई अफसरों की किस्मत भी बंद और कई की खुलने वाली है। जिन अफसरों की किस्मत पर ताला लगने वाला है, उनमें एक आईपीएस अधिकारी सबसे अधिक चर्चा में हैं। बताया जाता है कि खेल-खिलाड़ियों के विभाग में बैठे साहब से तत्कालीन सरकार के एक मंत्रीजी ने एक पहलवान को चयनित कर कुश्ती के दांवपेंच सिखाने और सारी सरकारी सुविधाएं मुहैया कराने के लिए कहा था। लेकिन साहब ने बिना सोचे-समझे मंत्रीजी को न कह दिया था। लेकिन अब पांसा पलट गया है और तत्कालीन मंत्रीजी प्रदेश सरकार के मुखिया बन गए हैं। सूत्रों का कहना है कि सरकार के मुखिया उक्त अफसर द्वारा उनकी बात न मानने के प्रकरण को भूले नहीं होंगे। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि खेलकूद विभाग की कुर्सी पर आराम फरमा रहे साहब की जल्द ही रवानगी कटेगी। जहां एक तरफ इन साहब की रवानगी कटना तय है, वहीं दूसरी तरफ प्रदेश में कई और अफसर हैं, जिनके दिन जल्द ही फिरेंगे।

मप्र में भाजपा को मिली जीत से मैं ही नहीं बल्कि हर कोई आश्चर्यचकित है। प्रदेश में भाजपा सरकार के खिलाफ जबरदस्त करंट था। जनता सरकार के खिलाफ थी, फिर भी इस तरह के चुनाव परिणाम आए, जो आश्चर्यजनक हैं।

● **कमलनाथ**

कांग्रेस और विपक्षी गठबंधन इंडिया ने देशवासियों के साथ छल करने का जो अपराध किया है, उसका फल 5 राज्यों के चुनाव में जनता ने उसे दे दिया है। मोदी की गारंटी पर जनता ने मुहर लगातार लोकसभा चुनाव में हैट्रिक बनाने का संकेत दे दिया है। जनता के इस समर्थन के लिए पूरी भाजपा आभारी है। अब हम और लगन के साथ जनता की सेवा में जुटेंगे।

● **नरेंद्र मोदी**

भारतीय क्रिकेट टीम विश्व की सबसे मजबूत टीम है। विश्वकप में भारत को मिली हार चिंता की बात नहीं है। कई मौकों पर बड़े-बड़े धुरंधरों को भी हार का सामना करना पड़ता है। अब पुरानी यादों को भूल भारतीय क्रिकेटर नई जंग के लिए तैयार हो रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि आने वाले समय में हमारे खिलाड़ी बेहतर प्रदर्शन कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाएंगे।

● **वीवीएस लक्ष्मण**

भारत आज दुनिया में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था ही नहीं बल्कि शक्तिशाली देश बनकर भी उभर रहा है। इसके पीछे भारतीयों की मेहनत और लगन बड़ी वजह है। जब भारतीय दूसरे देशों को मजबूत कर सकते हैं तो अपने देश को क्यों नहीं।

● **ऋषि सुनक**

मैंने कभी सोचा नहीं था कि रातोंरात मैं शोहरत की बुलंदी पर पहुंच जाऊंगी। लेकिन एक दिसंबर को रिलीज हुई फिल्म एनिमल ने मुझे सर्वोच्च मुकाम पर पहुंचा दिया है। हालांकि फिल्म की सफलता से मैं काफी खुश हूं, लेकिन यह फिल्म मेरे लिए एक सबक भी है। साथ ही मेरे सामने बड़ी चुनौती भी है, क्योंकि लोग अब मुझसे ऐसे ही किरदार की उम्मीद करेंगे। मैंने 2017 में अपने करियर की शुरूआत की। इस दौरान मैंने कई फिल्में कीं, लेकिन असली सफलता एनिमल से मिली है। फिल्म में जोया का किरदार मेरे लिए काफी चुनौती भरा रहा, लेकिन रणबीर कपूर के साथ ही अन्य कलाकारों ने मुझे सपोर्ट किया।

● **तृप्ति डिमरी**

वाक्युद्ध

5 राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में जीत गई है, लेकिन इस जीत को कोई पचा नहीं पा रहा है। हमें विश्वास है कि ईवीएम में कोई घालमेल किया गया है। वरना इन तीनों राज्यों में भाजपा की हार तय थी। लेकिन लोकसभा चुनाव को देखते हुए बड़ा खेला किया गया है।

● **रणदीप सुरजेवाला**

कांग्रेस या इंडी गठबंधन माने या न माने लेकिन मोदी मैजिक के सामने सब फेल हैं। इस बात पर 5 राज्यों के विधानसभा चुनाव में मुहर लग गई है। हम सभी जानते थे कि हार के बाद कांग्रेस ईवीएम पर ठीकरा फोड़ेगी, सो फोड़ दिया। पार्टी को सबसे पहले अपने अंदर की स्थिति को दुरुस्त करना चाहिए, तब कुछ बोले।

● **सुधांशु त्रिवेदी**

बेपटरी हुई किसान ट्रेन योजना

देश के एक कोने से दूसरे कोने तक किसानों द्वारा उत्पादित सब्जियों और फलों को सस्ती दर पर समय पर पहुंचाने के लिए सरकार ने किसान ट्रेन योजना शुरू की थी, लेकिन यह योजना अब लगभग बेपटरी हो गई है। इस कारण सब्जियां और फल समय पर बाजार में नहीं पहुंच पा रहे हैं। ऐसे में किसानों के सामने समस्या खड़ी हो गई है। उनकी सब्जियां और फल सड़ने लगे हैं। गौरतलब है कि प्रदेश सरकार से मिल रहे सहयोग के चलते प्रदेश के किसानों के पास एक ओर जहां भरपूर फल, सब्जी और अनाज पैदा हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर उन्हें समय पर बाजार उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। ऐसे में उन्हें टमाटर, गोभी, बैंगन जैसी सब्जियों को औने-पौने दाम में बेचने के लिए मजबूर होना पड़ता है। कई बार तो नौबत यहां तक आ जाती है कि परिवहन की लागत तक नहीं निकलती है। हाल ही में मटर के साथ ऐसा ही हुआ और किसानों को भारी मात्रा में मटर फेंकनी पड़ी। ऐसा नहीं है कि योजना कारगर नहीं है। दरअसल किसानों के सामने सबसे बड़ी परेशानी सस्ते परिवहन की है। किसानों ने गेहूं, सोयाबीन का उत्पादन कम करके फल, सब्जी और मोटे अनाज का उत्पादन बढ़ा तो लिया है, लेकिन बेचने की व्यवस्था वही पुरानी है। इस कमी को लेकर भारतीय किसान यूनियन के नर्मदापुरम जिला संगठन मंत्री सुरेंद्र राजपूत का कहना है कि परिवहन के स्थायी साधन पर काम होना चाहिए, ताकि किसानों के सामने कोई समस्या न हो। इसमें किसान ट्रेन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती थी। रेलवे को इसे पुनः शुरू करना चाहिए।

खेती को लाभ का धंधा बनाने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार ने किसान ट्रेन योजना शुरू की थी, ताकि उनके उत्पादित सब्जी और फल सही समय पर एक स्थान से दूसरे स्थान पहुंच सकें। लेकिन यह योजना फेल हो गई है।

सरकार योजनाएं बनाती है और उस पर काम भी शुरू हो जाता है। कुछ समय तक तो सबकुछ ठीकठाक चलता है, फिर धीरे-धीरे काम में शिथिलता आती जाती है और बाद में पता चलता है कि योजना फुस्स होने के कगार पर पहुंच गई है। कुछ ऐसा ही हुआ है, किसान ट्रेन योजना के साथ। किसानों की समस्या को देखते हुए केंद्र सरकार ने वर्ष 2020 में किसान ट्रेनों के परिचालन का निर्णय लिया था। इस ट्रेन को चलाने का मकसद यह था कि किसानों की फसल, अनाज आदि को आसानी से कम लागत पर एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाया जा सके और वह खराब होने से पहले ग्राहकों तक पहुंच सकें। इसके लिए पहली ट्रेन साल 2020 में इंदौर के लक्ष्मीबाई स्टेशन से गुवाहाटी के बीच चलाई गई थी। इस ट्रेन को प्याज, लहसुन समेत अन्य उत्पाद भी मिले थे। इसी तरह दूसरे स्टेशनों से भी अलग-अलग शहरों के लिए किसान ट्रेनें चलाईं गईं थी, तब से लेकर आज तक ये ट्रेनें दोबारा पटरी पर नहीं दौड़ीं।

हालांकि केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने लोकसभा में एक सवाल के जवाब में बताया कि 31 जनवरी, 2023 तक कुल 2359 किसान रेल चलाई जा चुकी हैं, जिनमें 7.9 लाख टन खराब हो जाने वाली कृषि उपज को ट्रांसपोर्ट किया गया। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने किसानों की आय बढ़ाने और कृषि उपज को जल्द से जल्द बाजारों तक पहुंचाने के उद्देश्य से 7 अगस्त, 2020 को किसान रेल की शुरुआत की थी। बताते चलें कि कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के साथ-साथ राज्य सरकारों के कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन विभागों के अलावा स्थानीय निकायों, एजेंसियों और मंडियों आदि की सलाह से किसान रेल के परिचालन के लिए संभावित सर्किटों की पहचान की जाती है। भारतीय रेल किसानों की मांग के आधार पर रैक प्रदान करती है।

रेल मंत्री ने लोकसभा में बताया कि फलों और सब्जियों के ट्रांसपोर्टेशन के लिए खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा 31 मार्च, 2022 तक किसान रेल से माल ढुलाई में 50 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही थी। 31 मार्च, 2022 से 31 मार्च, 2023 तक भारतीय रेल किसान रेल से कृषि उपज के ट्रांसपोर्टेशन के लिए 45 प्रतिशत की दर से सब्सिडी दे रही है। वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान रेल मंत्रालय ने सब्सिडी के रूप में 27.79 करोड़ का वितरण किया था, जिसका भुगतान एमओएफपीआई द्वारा किया गया था। वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान रेल मंत्रालय ने सब्सिडी के रूप में 121.86 करोड़ का वितरण किया था, जिसमें एमओएफपीआई ने केवल 50 करोड़ रुपए का भुगतान किया था। चालू वर्ष के दौरान 31 जनवरी, 2023 तक रेलवे ने सब्सिडी के रूप में 4 करोड़ वितरित किए हैं। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अपने लिखित जवाब में बताया कि अभी तक किसान रेल योजना के तहत तापमान नियंत्रित भंडारण सुविधाओं के निर्माण के लिए किसानों या व्यापारियों से कोई अनुरोध प्राप्त नहीं हुआ है।

● **विकास दुबे**

कोल्ड स्टोरेज नहीं होना भी समस्या

प्रदेश के भोपाल, सीहोर, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, रायसेन, विदिशा, धार, इंदौर, खंडवा, बुरहानपुर समेत अन्य जिलों में फसल विविधीकरण योजना के तहत किसानों ने नगदी फसलें लेने पर जोर दिया है। हरदा जिले के किसान बसंत रायखेरे का कहना है कि फल व सब्जी ऐसे उत्पाद हैं, जिन्हें किसान तोड़ने के बाद बाहर नहीं रख सकता। इनके लिए कोल्ड स्टोरेज बहुत जरूरी है। यह सुविधा एक जिले में एक स्थान पर पर्याप्त नहीं है, बल्कि ऐसी यूनिटों की जगह-जगह जरूरत है। तभी नगदी फसल लेने का फायदा होगा। एडीजी पीआर रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली योगेश कुमार बावेजा का कहना है कि परिचालन बंद होने की वजह पता करवाता हूं। जहां तक दोबारा शुरू करने की बात है तो इस पर संबंधित रेलवे मांग के अनुरूप कार्रवाई कर सकता है। बोर्ड ने रेलवे को रोका नहीं है। यदि बोर्ड स्तर तक भी किसान ट्रेनों के परिचालन की मांग आएगी तो फिर शुरू कर देंगे।

तमाम सर्वे, कयासों और दावों को ताक पर रख मप्र में भाजपा को मिली बड़ी जीत ने पार्टी की चुनावी रणनीति की धार का एक बार फिर से लोहा मनवा दिया है। इस बार के चुनाव में भाजपा ने जो बड़ा प्रयोग किया वह था 100 दिनी फॉर्मूला। यह फॉर्मूला मप्र में पूरी तरह हिट हुआ है और भाजपा ने जीत दर्ज कर रिकॉर्ड बनाया है।

100 दिनी फॉर्मूला हिट

मप्र में इस बार भाजपा ने पुरानी परंपरा को तोड़ते हुए नई रणनीति और नए अंदाज से चुनाव लड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि मप्र में भाजपा को प्रचंड बहुमत मिला है। कांग्रेस को पटखनी देकर भाजपा सूबे में 163 सीटों पर काबिज हो गई है। जबकि कांग्रेस के खाते में सिर्फ 66 सीटें ही आई हैं। इस बड़ी जीत के पीछे भाजपा का माइक्रो मैनेजमेंट है। पार्टी ने जहां बिना सीएम फेस के चुनाव लड़ा, वहीं इस बार चुनावी घोषणा से पहले ही प्रत्याशियों की घोषणा कर दी। दरअसल, भाजपा ने करीब 100 दिन पहले यानी 17 अगस्त को अपने कैंडिडेट्स की पहली लिस्ट जारी की थी। पार्टी ने इतनी जल्दी नामों का ऐलान कर सभी को चौंका दिया था। हालांकि ये कदम रणनीति के तहत उठाए गए थे। सबसे पहले उन सीटों पर नामों का ऐलान किया गया, जहां पार्टी की पकड़ बेहद कमजोर थी। टिकट बंटवारे से पहले भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति ने चुनावी राज्यों की सीटों को 4 कैटेगरी में बांटा था। इन्हें ए, बी, सी और डी कैटेगरी में रखा था। ए कैटेगरी में उन सीटों को रखा गया था, जिन पर भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार अक्सर जीत हासिल करते हैं। बी कैटेगरी में उन सीटों को रखा गया, जिनमें हार और जीत पिछले चुनाव में हो रही है। सी कैटेगरी में उन विधानसभा क्षेत्रों को रखा गया था, जिसमें पार्टी के उम्मीदवार 2 बार हार चुके थे। जबकि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने डी कैटेगरी में उन सीटों को रखा, जहां भाजपा कभी नहीं जीती और जिन पर उनकी स्थिति काफी खराब रही है।

इस कैटेगरी के आधार पर ही सूबे में सभी सीटों का मैनेजमेंट किया गया। मप्र की पहली लिस्ट में जिन सीटों पर उम्मीदवार उतारे गए, वह सी और डी कैटेगरी की सीटें थीं। लिहाजा भाजपा 2018 के चुनाव में इन सीटों पर हारी थी। इनमें से कुछ सीटें तो ऐसी भी थीं, जिनमें वह 10 या इससे भी ज्यादा साल से हार रही थी। गेम पलटने के लिए भाजपा को इस तरह की सीटों को मजबूत करने की जरूरत थी, ताकि चुनाव से पहले उन क्षेत्रों में पार्टी के पक्ष में माहौल बनाया जा सके। इन सीटों को जीतने के लिए भाजपा ने चुनाव से करीब 100 दिन पहले नामों का ऐलान कर दिया। इससे प्रत्याशियों को चुनाव प्रचार के लिए न सिर्फ पर्याप्त समय मिला, बल्कि जीत की रणनीति बनाने और रूठों को मनाने के लिए भी समय मिल गया। वहीं, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने राज्य के प्रत्येक मंडल में कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें कीं और उनकी टीम के नेताओं को जीत का साफ मैसेज दिया। इसका पालन हुआ और बूथ स्तर तक इस मैसेज को फॉरवर्ड किया। यह चुनाव परिणामों में साफतौर पर रिफ्लेक्ट हुआ।

भाजपा ने पहली लिस्ट में 39 नामों का ऐलान किया था। इसमें से 26 उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की। जबकि कुछ कैंडिडेट्स को हार का सामना भी करना पड़ा है। इसमें गोहद से लाल सिंह आर्य को हार का मुंह देखना पड़ा है। जबकि भोपाल मध्य और भोपाल नॉर्थ भी भाजपा के हाथ से फिसल गए। भोपाल उत्तर से पूर्व महापौर आलोक शर्मा मैदान में थे। उधर, जबलपुर पूर्व में अंचल सोनकर को भी शिकस्त का सामना करना पड़ा है। झाबुआ में भानू भूरिया, तराना में ताराचंद्र, बेहर में भगत सिंह और बिछिया में विजय आनंद भी अपनी सीट नहीं बचा सके। इन सीटों पर भाजपा की जीत का सबसे बड़ा फैक्टर ये साबित हुआ कि पार्टी के नेताओं को अपने क्षेत्र में प्रचार करने के साथ ही कमजोर कड़ियों को मजबूत करने का वक्त मिल गया। इसके साथ ही कैंडिडेट्स वोटर्स को ये यकीन दिलाने में भी कामयाब हो गए कि अगर वह चुनाव जीतते हैं और सूबे में भाजपा की सरकार आती है, तो डबल इंजन की सरकार से इस क्षेत्र का भरपूर विकास होगा। स्थानीय समस्याओं का समाधान किया जाएगा। इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी का चेहरा जीत की सबसे बड़ी गारंटी बन

भाजपा से ज्यादा कांग्रेस से नाराजगी

मप्र में मतगणना से पहले यही माना जा रहा था कि प्रदेश में चुनाव भाजपा बनाम जनता के बीच हो रहा है। कांग्रेस भी यही प्रचारित कर रही थी। लेकिन मौन जनता के मतदान की जब गणना की गई तो स्थिति एकदम बदल गई। भाजपा से ज्यादा कांग्रेस के प्रति मतदाताओं की नाराजगी सामने आई। शिवराज सरकार के 33 में से 31 मंत्री मैदान में उतरे। इनमें से 12 मंत्री हार गए जबकि 2018 के चुनाव में 27 मंत्री चुनाव में उतरे थे जिनमें से 13 हार गए थे, यानी 48 प्रतिशत को लोगों ने पसंद नहीं किया था। इसके अलावा भाजपा ने 99 विधायकों को मैदान में उतारा था जिनमें 72 जीते। यानी 73 प्रतिशत विधायकों पर जनता ने भरोसा जताया है। मंत्रियों के मामले में यह भरोसा 61 प्रतिशत रहा। माना जा सकता है लोगों ने अपना गुस्सा 28 प्रतिशत विधायकों पर निकाल दिया है। बता दें कि वर्ष 2018 के चुनाव में भाजपा को 41 प्रतिशत वोट मिले थे और 109 सीटें मिली थीं जबकि इससे कम वोट हासिल कर कांग्रेस 114 सीटें जीतने में कामयाब रही थी। इस चुनाव में भाजपा 2 करोड़ 11 लाख 8 हजार 771 वोट बटोरने में कामयाब रही। कांग्रेस के खाते में 1 करोड़ 75 लाख 64353 वोट ही आ पाए और यही कांग्रेस की बुरी हार की वजह है।

गया। वहीं कांग्रेस के बड़े चेहरे अपनी जीत नहीं बचा पाए। इंदौर की राऊ सीट पर इंदौर विकास प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्ष मधु वर्मा ने पूर्व मंत्री जीतू पटवारी को चुनावी मैदान में पटखनी दी। इसके अलावा इसके अलावा गोटेगांव में भाजपा नेता महेंद्र नागेश ने पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एनपी प्रजापति को हराया। उधर, चाचौड़ा सीट से पहली बार चुनाव लड़ रहीं प्रियंका मीणा ने दिग्विजय सिंह के भाई लक्ष्मण सिंह को भारी वोटों के अंतर से हराया है।

भाजपा की इतनी बड़ी जीत के पीछे क्या कोई अंडरकरंट था जो अधिकांश आंखों को धोखा दे गया? अगर था तो वह क्या था? ऐसे कई सवाल हैं, जो नतीजों के बाद हैरान कर रहे हैं। शायद कुछ अंदाजा 2018 के विधानसभा चुनाव के नतीजों से मिल सकता है। उस साल प्रदेश के मतदाताओं ने 15 वर्ष के लंबे अंतराल के बाद कांग्रेस पर एक बार फिर से ऐतबार जताया था और उसकी झोली में ठीकठाक सीटें डालकर सत्ता सौंप दी थी, लेकिन 15 महीने बाद अंदरूनी वजहों और तथाकथित ऑपरेशन कमल से कांग्रेस सत्ता से बेदखल हो गई और लोगों के ऐतबार को गहरा सदमा पंहुचा। सत्ता में शिवराज सिंह चौहान सरकार की एक बार फिर से वापसी हो गई। समय बीता और फिर विधानसभा चुनाव आ गया।

इस बीच प्रदेश में ऐसा कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ जिसका असर भाजपा और कांग्रेस की छवि को नुकसान पहुंचाता। मैदान साफ था, जिसके चलते दोनों पार्टियां तैयारी के साथ चुनावी अखाड़े में जा पहुंचीं। दोनों ही पार्टियां पहले दिन से आश्वस्त थीं कि जीत का सेहरा उनके माथे बंधना तय है। लिहाजा दोनों ने जीत की उम्मीद अपने-अपने उम्मीदवारों पर छोड़ दी। भाजपा इस छोटी पर महत्वपूर्ण बात को समझने में कामयाब रही। शायद यही वजह थी कि चुनाव तारीखों की घोषणा के लगभग तीन महीने पहले ही भाजपा ने प्रदेश के सभी कद्दावर नेताओं की उम्मीदवारी की घोषणा कर दी- केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, प्रहलाद पटेल और फग्गन सिंह कुलस्ते सहित सात सांसद और राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय को मैदान में उतारा गया। पार्टी ने अपना फोकस स्पष्ट रखा कि उसे कैसे हारी हुई सीटों को हर हाल में जीतना है। वैसे भी भाजपा ने प्रदेश के कद्दावर नेताओं पर जिन आठ सीटों पर अपना दांव खेला उनमें से छह सीटें हारी हुई थीं।

कांग्रेस की मजबूत सीट इंदौर-1 के किले को भेदने की लिए भाजपा ने पार्टी महासचिव कैलाश विजयवर्गीय को भेजा। विजयवर्गीय के जरिए भाजपा प्रदेश की सबसे बड़ी विधानसभा सीट वाले अंचल और पार्टी के गढ़ मालवा में अपना दबदबा कायम रखना चाहती थी। इस चुनाव में हर सीट जीतना भाजपा के लिए कितना महत्वपूर्ण था यह उसकी रणनीति से समझा जा सकता है। इसी सूची में 27 पूर्व विधायक भी पार्टी के उम्मीदवार बने। उम्मीदवारों की सूची प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकर्ता महाकुंभ सम्मेलन के उद्बोधन के कुछ समय बाद निकाली गई ताकि पार्टी का हर कार्यकर्ता चुनाव तक सक्रिय हो जाए। यह वह समय था, जब न तो चुनाव की हलचल थी न इसे लेकर कहीं चर्चा हो रही थी। कांग्रेस भी भला कहां रुकने वाली थी। भाजपा के 39 उम्मीदवारों की पहली सूची के लगभग दो महीने के अंतराल पर पार्टी ने 144 उम्मीदवारों की घोषणा कर दी। इस सूची में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ से लेकर पूर्व मंत्री और लगभग सभी विधायकों के नाम मौजूद थे। दोनों ही दलों ने अपने-अपने टिकट वितरण में अपने दिग्गज नेताओं की पसंद को ध्यान में रखा। इनमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ, दिग्विजय सिंह शामिल थे। भाजपा की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अपने भाषणों में मप्र को अंधेरे और बीमारू राज्य की श्रेणी से निकाले गए प्रयासों का खूब बखान किया। सभी ने अपने भाषणों में मतदाता को बताया कि उनका हर वोट यह निश्चित करेगा कि अगले पांच वर्ष यहां किसकी सरकार होगी। कांग्रेस की तरफ से राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने घोषणाओं, स्कीमों और सौदेबाजी कर प्रदेश में गिराई गई कांग्रेस की सरकार को लेकर जनता के बीच पहुंचने का काम किया। प्रदेश का मतदाता भी खामोशी से सारी उठापटक देखता-सुनता रहा। मतदान वाले दिन उसने पार्टी से ज्यादा अपना प्यार और भरोसा उस उम्मीदवार और पार्टी पर जताया जो उसके वोट का मान रखना जानता हो। इसका असर परिणामों में साफ नजर आता है। भाजपा ने पहले से ही जो 39 उम्मीदवार घोषित कर दिए थे उनमें से वह कांग्रेस से 27 सीटें लेने में सफल रही। भाजपा के तीन केंद्रीय मंत्रियों में एक मंत्री और चार सांसदों में एक ही सांसद को हार का सामना करना पड़ा।

● **कुमार राजेन्द्र**

जीत की असली वजह

2003 में साध्वी उमा भारती के चेहरे, स्व. अनिल माधव दवे के संगठन शास्त्र तथा पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के विरूद्ध जबरदस्त एंटी-इन्कंबेंसी से भाजपा ने मप्र में ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए 42.50 प्रतिशत वोटों के साथ 173 विधानसभा सीटें प्राप्त की थीं किंतु 2023 में सत्ता में रहते हुए बिना मुख्यमंत्री चेहरे के यदि भाजपा 48.57 प्रतिशत वोटों के साथ 163 सीटों पर विजयी हुई है तो यह उसके इतिहास की सबसे बड़ी जीत है। 2018 में भाजपा को प्राप्त 41.02 प्रतिशत वोटों में इस बार 7.55 प्रतिशत का इजाफा होना यह दर्शाता है कि पार्टी ने मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के पैरों तले उसकी राजनीतिक जमीन खिसका दी है। हालांकि भाजपा की इस प्रचंड जीत के बावजूद शिवराज कैबिनेट के 31 में से 12 मंत्रियों को हार का सामना करना पड़ा है और यह उन मंत्रियों के विरूद्ध उनके क्षेत्र की जनता की नाराजगी को दर्शाता है। भाजपा ने बसपा का 2.5 प्रतिशत, निर्दलीयों का 3 प्रतिशत तथा सपा, आप व अन्य का 3 प्रतिशत वोट अपने पाले में किया। इस जीत का श्रेय कई फैक्टर्स को दिया जा सकता है किंतु वास्तविकता में इस जीत का असली नायक कौन है? लोकतंत्र में एम-वाई अर्थात् मुस्लिम-यादव समीकरण के बारे में सुनकर बड़े हुए लोगों को मप्र के भाजपा संगठन ने नई परिभाषा से परिचित करवाया है जहां एम अर्थात् महिला और वाई अर्थात यूथ। राजनीति का यह न्यू नार्मल अब आगामी विधानसभा चुनावों से लेकर 2024 के आम चुनाव में भाजपा की सबसे बड़ी ताकत बनने जा रहा है। प्रदेश में शिवराज सिंह ने इसी न्यू नार्मल के चलते मामा की छवि बनाई जो पिछले 18 वर्षों से उन्हें राजनीतिक बल देती जा रही है।

जिलाध्यक्षों पर गिरेगी हार की गाज

विधानसभा चुनाव में मिली पार्टी को हार के बाद अब कांग्रेस के प्रदेश संगठन ने इसका ठीकरा जिलाध्यक्षों के सिर पर फोड़ने की तैयारी कर ली है। संगठन जल्द ही करीब डेढ़ दर्जन जिलाध्यक्षों को हटाकर वहां दूसरे अध्यक्ष नियुक्त करने की तैयारी कर रहा है। इसके अलावा कई अन्य पदाधिकारियों को भी हटाने की तैयारी की जा रही है। पार्टी सूत्रों का कहना है अब उन पदाधिकारियों को भी बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा, जिन्हें चुनावी तैयारियों के तहत प्रदेश संगठन में स्थान दिया गया था, लेकिन उसका फायदा पार्टी को नहीं मिला है। इसके साथ ही संगठन में भी बड़े स्तर पर प्रदेश के संगठनात्मक ढांचे में बड़ी सर्जरी की तैयारी शुरू कर दी है।

इसके लिए अब महज विधानसभा वार समीक्षा रिपोर्ट मिलने का इंतजार किया जा रहा है। इस रिपोर्ट के आधार पर बड़े स्तर पर नाकारा और भितरघात करने वाले नेताओं पर भी कार्रवाई होना तय है। पार्टी सूत्रों की माने तो 19 जिलों के अध्यक्षों और कई विभागों के प्रमुखों से तो पद छीने ही जाएंगे साथ ही भितरघातियों पर भी जल्द कार्रवाई की जाएगी। दरअसल चुनाव परिणामों के बाद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ द्वारा प्रदेश के सभी 230 प्रत्याशियों की बैठक ली जा चुकी है। इस बैठक में प्रत्याशियों ने खुलकर संगठन और भितरघात को बड़ा कारण बताया था। इस दौरान कांग्रेस नेता सुरेंद्र सिंह शेरा, विधायक हीरालाल अलावा सहित अन्य ने भितरघात करने वाले और संगठन पदाधिकारियों पर कार्रवाई को लेकर कड़े निर्णय लेने की बात कही थी। इसके बाद कमलनाथ ने सभी प्रत्याशियों से दस दिनों में दो अलग-अलग रिपोर्ट देने को कहा है। इसमें एक रिपोर्ट में विधानसभा में हुए चुनाव का विश्लेषण करना है, जबकि दूसरी रिपोर्ट में संगठन की खामियां और भितरघात करने वालों के नाम बताना है। यह रिपोर्ट पार्टी हाईकमान को सौंपी जानी है। इसके बाद पार्टी हाईकमान इन नामों पर कार्रवाई करते हुए इन्हें पद से हटाने के साथ ही पार्टी से बाहर का रास्ता भी दिखा सकता है।

कांग्रेस में भी बागियों ने कई जगह कमाल दिखाए। भाजपा से फर्क यह है कि बागियों के होने के कारण कांग्रेस सिर्फ हारी, उसे एक भी सीट पर जीत नसीब नहीं हुई। गोटेगांव में कांग्रेस ने शेखर चौधरी को टिकट देकर काट दिया था। वे नाराज होकर निर्दलीय चुनाव लड़ गए। उन्हें 47 हजार से ज्यादा वोट मिले और कांग्रेस के एनपी प्रजापति बुरी तरह हार गए। देपालपुर में कांग्रेस के बागी राजेंद्र चौधरी लगभग 38 हजार वोट ले गए और कांग्रेस विधायक विशाल पटेल 13 हजार से ज्यादा वोटों से हार गए। बड़नगर में भी कांग्रेस ने राजेंद्र सोलंकी को टिकट देकर काट दिया था। वे निर्दलीय चुनाव लड़कर 31 हजार से ज्यादा वोट ले गए और कांग्रेस विधायक मुरली मोरवाल को बड़ी हार का सामना करना पड़ा। आलोट में प्रेमचंद गुड्डू बगावत कर मैदान में थे। उन्हें 37 हजार से ज्यादा वोट मिले और विधायक मनोज चावला को पराजय का सामना करना पड़ा। इसी प्रकार महू में अंतर सिंह दरबार बगावत कर निर्दलीय लड़े तो, कांग्रेस प्रत्याशी तीसरे नंबर पर पहुंच गए और भाजपा की ऊषा ठाकुर बड़े अंतर से चुनाव जीत गईं।

मप्र के 19 जिलों में कांग्रेस का जीत का खाता तक नहीं खुला है। यानी विधानसभा चुनाव में एमपी के 19 जिले पूरी तरह से कांग्रेस मुक्त हो गए। विधानसभा चुनाव में यह हार कांग्रेस के लिए एक बड़ा झटका मानी जा रही है। क्योंकि कई जिले ऐसे हैं, जहां कांग्रेस पूरी तरह से साफ हो गई। दमोह जिले में पिछले चुनाव में कांग्रेस को एक सीट पर जीत मिली थी, इस बार एक भी नहीं जीत पाई। बता दें भाजपा ने कटनी, पन्ना, विदिशा, सीहोर, रायसेन, राजगढ़, शाजापुर, देवास, खंडवा, बुरहानपुर, उमरिया, सिंगरौली, नरसिंहपुर, बैतूल, नीमच और इंदौर जिलों से कांग्रेस को मुक्त कर दिया है। इन जिलों में जिला संगठन पर गाज गिरना तय माना जा रहा है। यहां पार्टी लोकसभा चुनाव को देखते हुए युवाओं को मौका दे सकती है। कांग्रेस के विभाग अध्यक्षों पर भी गाज गिरना तय माना जा रहा है। संगठन स्तर पर महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस सहित अन्य विभाग के कामों की भी रिपोर्ट तैयार की जा रही है। इन विभागों ने चुनाव के दौरान कैसा काम किया, इसकी विस्तृत जानकारी मांगी गई है। इसके आधार पर इनके प्रमुखों का भाग्य निर्धारित होगा। इसके साथ ही अन्य विभागों के प्रभारियों से भी सवाल-जवाब किया जाएगा। यह पूरी कार्रवाई जल्दी होगी, ताकि लोकसभा चुनाव में पार्टी तैयारी से जुट पाए।

● **अरविंद नारद**

4 साल बाद मिलेगा विस उपाध्यक्ष!

मप्र विधानसभा लगभग चार वर्षों से बिना उपाध्यक्ष के चल रही है। मप्र की 16वीं विधानसभा का पहला सत्र 18 दिसंबर से शुरू होने जा रहा है। इस सत्र में नव निर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाई जाएगी। यही नहीं, इसी सत्र में ही नए विधानसभा अध्यक्ष का भी निर्वाचन होगा। इस पद के लिए पार्टी पहले ही पूर्व केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर का नाम तय कर चुकी है। माना जा रहा है कि इसी सत्र में ही नए विधानसभा उपाध्यक्ष का चुनाव भी संभावित है। पंद्रहवीं विधानसभा के आखिरी पौने चार साल विधानसभा उपाध्यक्ष का पद खाली ही बना रहा है। इस बार उपाध्यक्ष का पद भरे जाने के पीछे की वजह चार माह में होने वाले लोकसभा के चुनाव को माना जा रहा है। मार्च में चुनावी आचार संहिता संभावित है। इसलिए आगामी सत्र में विधानसभा उपाध्यक्ष का चुनाव कराया जा सकता है। सूत्रों का कहना है कि इस बार भाजपा विधानसभा उपाध्यक्ष का पद विपक्ष को देने की जगह अपने पास ही रखेगी। इसकी वजह है, कांग्रेस सरकार में इस पद को विपक्षी दल के नाते भाजपा को नहीं दिया जाना है। पार्टी इस पद पर किसी अपने आदिवासी विधायक को बिठा सकती है। दरअसल, भाजपा लोकसभा चुनाव को देखते हुए सभी वर्गों को साधने का प्रयास कर रही है। इसी कड़ी में ओबीसी वर्ग के नेता को सीएम, ब्राह्मण व दलित को डिप्टी सीएम और राजपूत नेता को विधानसभा अध्यक्ष बनाया गया है। अभी आदिवासी वर्ग को सत्ता में भागीदारी नहीं दी गई है। इसकी वजह से ही माना जा रहा है कि पार्टी विधानसभा उपाध्यक्ष के पद पर आदिवासी वर्ग के किसी नेता को बिठाकर लोकसभा चुनाव के मद्देनजर आदिवासी वर्ग के समीकरण को साधने का प्रयास करेगी।

अब विभीषणों पर नजर...

विधानसभा चुनाव में उम्मीद से अधिक सीटें जीतकर भाजपा फिर से सत्ता में वापसी कर चुकी है। इसके बाद भाजपा संगठन की नजर अब विभीषणों पर लग गई है। यही वजह है कि अब पार्टी ने ऐसे नेताओं की सूची जिलों से मांगी है। दरअसल चुनावी प्रचार के दौरान कई जगहों से प्रदेश संगठन को लगातार पार्टी के ही कई नेताओं द्वारा भितरघात करने की शिकायतें मिलती रही हैं। यही वजह है कि अब पार्टी ने प्रत्येक विधानसभा सीट पर पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं की भूमिका की समीक्षा करना तय किया है। जिन नेताओं के खिलाफ सेबोटेज की शिकायतें मिली थीं, उनके खिलाफ कार्यवाही की तैयारी की जा रही है। यही नहीं ऐसे नेताओं को अब लोकसभा चुनाव में काम भी नहीं दिया जाएगा।

दरअसल पार्टी ऐसे लोगों के खिलाफ कार्रवाई कर संदेश देना चाहती है, जिससे कि लोकसभा चुनाव के दौरान इस तरह की स्थिति न बन सके। गौरतलब है कि विधानसभा चुनावों के बाद भाजपा ने अपने जिलाध्यक्ष और जिला प्रभारियों की बैठक बुलाई थी। इसमें उसने चुनाव में पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ काम करने वाले नेताओं की सूची बनाने के लिए इन नेताओं को निर्देश दिए थे। इसके साथ ही इन नेताओं को इस बात की ताकीद भी दी गई थी कि वे जिनके नाम भेजें उसमें पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता का पूरा ख्याल रखें और व्यक्तिगत दुर्भावनावश किसी का नाम नहीं भेजा जाए। यही वजह है कि इसे क्रॉस चेक करने के उद्देश्य से मंडल और विधानसभा प्रभारियों से भी नाम मांगे गए थे। सूत्रों की मानें तो अधिकांश जिलों से संगठन के पास उन नेताओं के नाम आ गए हैं, जिन्होंने पार्टी प्रत्याशी के खिलाफ काम किया है। यहीं नहीं ऐसे नेताओं की भी सूची बनाई गई है जिन्होंने बड़े नेताओं की समझाइश के बाद भी अपना रवैया नहीं बदला। पार्टी अब अपने स्तर पर इनके बारे में जानकारी जुटा रही है। इन नामों को लेकर विधानसभा प्रत्याशी से भी चर्चा की जाएगी। उसके बाद कार्यवाही करने के बारे में कोई फैसला किया जाएगा। संगठन के एक नेता ने बताया कि लोकसभा चुनाव के कारण निष्कासन-निलंबन कम से कम किए जाएंगे। ऐसे कार्यकर्ताओं को लोकसभा में कोई जिम्मेवारी न दी जाए, इसके निर्देश जिला संगठन को दिए जाएंगे।

विधानसभा चुनाव के बाद संगठन के निर्देश पर जिलों में बैठकों का दौर शुरू हो गया है। इन बैठकों में उन नेताओं के आने से विवाद हो रहा है, जिन्होंने पार्टी द्वारा घोषित अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ काम किया था। बुरहानपुर में हुई बैठक में हाल ही में इसी तरह का विवाद सामने आ चुका है। पार्टी के जिला महामंत्री ने कुछ नेताओं के बैठक में आने पर खुलेआम आपत्ति लेते हुए कहा कि जो पार्टी के खिलाफ काम कर रहे थे, उन्हें यहां क्यों बुलाया है। इसके बाद जिलाध्यक्ष ने दो नेताओं को बैठक से बाहर जाने को कहा था। चुनाव के समय जिस समस्या का हर बार कांग्रेस व भाजपा को सामना करना पड़ता है, उसका तमाम प्रयासों के बाद भी कोई हल नहीं निकल पा रहा है। यह ऐसी समस्या है जिसकी वजह से चुनाव में कांग्रेस व भाजपा के कई दिग्गजों तक को हार का सामना करना पड़ता है। इसकी वजह से हर चुनाव में दोनों दलों को कई सीटों तक का नुकसान उठाना पड़ता है। हाल ही में हुआ विधानसभा चुनाव भी इससे अछूता नहीं रहा है। अहम बात तो यह है कि भाजपा की आंधी के बाद भी वह ऐसी सीटों पर हार गई है, जो भाजपा लगातार कई चुनावों से जीतती आ रही थी। खास बात यह कि भाजपा के पक्ष में ऐसी आंधी चली कि वह वे सीटें भी जीत गई, जहां उसके मजबूत बागी मैदान में थे। इसके विपरीत कांग्रेस को अपनी पार्टी के साथ भाजपा के बागियों से भी नुकसान हुआ। चार सीटें ही ऐसी थीं, जहां भाजपा को पार्टी से बगावत कर मैदान में उतरे प्रत्याशियों के कारण पराजय का सामना करना पड़ा।

बगावत की वजह से अरविंद भदौरिया, डॉ. गोविंद सिंह, लक्ष्मण सिंह, एनपी प्रजापति और चौधरी राकेश सिंह जैसे दिग्गजों को हार का सामना करना पड़ा। भाजपा को जहां पार्टी के बागियों के कारण पराजय का सामना करना पड़ा, उनमें अटेर, टीकमगढ़, मुरैना और महिदपुर शामिल हैं। अटेर में पार्टी के बागी मुन्ना सिंह भदौरिया के मैदान में होने के कारण प्रदेश के सहकारिता मंत्री अरविंद भदौरिया हार गए। टीकमगढ़ में केके श्रीवास्तव ने निर्दलीय लड़कर भाजपा के राकेश गिरि को हरवा दिया। अटेर में कांग्रेस के हेमंत कटारे और टीकमगढ़ में यादवेंद्र सिंह चुनाव जीत गए। इसी प्रकार मुरैना में पूर्व मंत्री रुस्तम सिंह ने अपने बेटे राकेश को चुनाव लड़ा दिया।

● **लोकेंद्र शर्मा**

शिव गणों की हार पर संगठन करेगा मंथन

प्रदेश में भले ही भाजपा को दो तिहाई से अधिक सीटों पर जीत मिली है, लेकिन इसके बाद भी भाजपा संगठन की चिंता कम नहीं हुई है। इसकी वजह है शिव के एक दर्जन गणों का हार जाना। अब अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव को लेकर इन हारने वाले मंत्रियों ने परेशानी बढ़ा दी है। अब संगठन हार के कारणों का पता लगाने के साथ ही इसका भी विश्लेषण करने जा रहा है कि जिन विधानसभा क्षेत्रों से मंत्रियों को हार मिली है, वहां लोकसभा चुनाव में क्या प्रभाव पड़ेगा। दरअसल हाल ही में हुए चुनाव में कई दिग्गज मंत्रियों को बुरी तरह से हार का सामना करना पड़ा। इनमें प्रदेश के बेहद पॉवरफुल और तेज तर्रार माने जाने वाले गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा सहित 12 मंत्री चुनाव हार गए हैं। यही भाजपा संगठन के लिए चिंता का सबब बन गया है। पार्टी संगठन ने अपने मंत्रियों की हार को बेहद गंभीरता से लिया है। पार्टी अपने इन दिग्गज मंत्रियों की हार को पचा नहीं पा रही है। बताया गया है कि पार्टी अब इस हार की समीक्षा हर पहलू पर करेगी। संगठन से जुड़े सूत्रों का कहना है कि लोकसभा चुनाव से पहले पार्टी उन सभी बूथ को जीतने का लक्ष्य तय करेगी, जहां विधानसभा चुनाव में उसे हार का सामना करना पड़ा है। इतना ही नहीं जिन बूथों में पार्टी को जीत मिली है, लेकिन वहां वोट प्रतिशत कम है, तो वहां भी पार्टी अपनी हर कमजोरी को ढूंढकर उसे दूर करने का प्रयास करेगी। कहा जा रहा है कि भाजपा का शीर्ष संगठन चुनाव हार चुके कुछ पूर्व मंत्रियों को लोकसभा का चुनाव लड़वा सकती है। इनमें से डॉ. नरोत्तम मिश्रा सहित दूसरे नेताओं के नाम अभी से लिए जा रहे हैं। कुछ पूर्व मंत्रियों को राज्यसभा चुनाव के जरिए भी केंद्रीय राजनीति में सक्रिय किया जा सकता है।

कार्बन का रहस्यमय व्यापार

इस वर्ष के अंत में दुबई में होने वाले अगले संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन (कॉप 28) में कार्बन बाजार के विनियमन के मुद्दे पर चर्चा की जाएगी। दुनिया भर के नेताओं को स्वैच्छिक कार्बन बाजार की गलतियों से सीखने की जरूरत है ताकि वैश्विक परिवर्तन के लिए बनाया गया यह नया बाजार तंत्र, उन्हें न दोहराए। डिसक्रेडिटेड पत्रिका (1-15, अक्टूबर 2023) और सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट की रिपोर्ट में प्रकाशित जांच में कई ऐसे असुविधाजनक सत्य पाए गए हैं जो हमें बदलाव लाने की दिशा में प्रेरित कर सकते हैं। रिपोर्ट में पाया गया है कि मौजूदा कार्बन बाजार दुनिया में उत्सर्जन बढ़ा सकते हैं। क्रेडिट के खरीदार (उदाहरण के तौर पर कोई एयरलाइन जिसने अपने ग्राहकों को अपने कार्बन फुटप्रिंट की भरपाई करने का आश्वासन दिया है या एक खाद्य कंपनी जिसने खुद को नेट-जीरो घोषित किया है) अपना उत्सर्जन जारी रखते हैं या कई मामलों में उन्होंने यह कहते हुए अपना उत्सर्जन बढ़ा दिया है कि उन्होंने क्रेडिट खरीदा है। लेकिन चूंकि ये क्रेडिट या तो अपने असली मूल्य से कहीं अधिक मार्क किए हुए हैं या वे अस्तित्व ही नहीं रखते इसलिए ये कटौती काल्पनिक ही है। यह एक ऐसा दोहरा खतरा है जिसकी जलवायु संकटग्रस्त दुनिया को कोई आवश्यकता नहीं है।

यह स्पष्ट है कि पहला कदम बाजार में पारदर्शिता सुनिश्चित करना है। कुछ लोगों ने जानकारी इकट्ठा करने का प्रयास किया तो उन्हें कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। उन्हें परियोजना स्थलों पर जाने से पहले गैर-प्रकटीकरण (डिस्क्लोजर) समझौतों (एनडीए) पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया था। उन्हें (पेरिस स्थित एक निवेशक कंपनी द्वारा) यह भी कहा गया था कि भारतीय गांवों में यात्रा करना बहुत खतरनाक था और प्रमुख कंपनियों में से एक ईको एनर्जी सर्विसेज ने कहा था कि कंपनी साइलेंट पीरियड में चल रही है।

दूसरा कदम है बाजार के उद्देश्यों को तय करना, स्वैच्छिक, द्विपक्षीय या बहुपक्षीय और तदानुसार नियम डिजाइन करना। यदि बाजार का उद्देश्य उन परियोजनाओं में निवेश करना है जिससे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में उत्सर्जन में कमी आएगी, तो बाजार को परियोजनाओं की वास्तविक लागत के भुगतान पर आधारित होना चाहिए। वर्तमान में, बाजार नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना या बायोगैस परियोजना की लागत से कम भुगतान करता है। गरीब वस्तुत: इस बाजार में अमीर उत्सर्जकों को सब्सिडी दे रहे हैं।

तीसरा, बाजार केवल परियोजना डेवलपर्स, सलाहकारों और लेखा परीक्षकों के हित में काम करता प्रतीत होता है। समुदायों को इस आमदनी से वस्तुत: कुछ भी नहीं मिलता है और इसका मतलब है कि उत्सर्जन कटौती कार्यक्रम में उनकी कोई हिस्सेदारी नहीं होती। कार्बन बाजार को अपनी सालाना आय को सत्यापन योग्य तरीके से समुदायों के साथ साझा करना आवश्यक होना चाहिए। घरेलू उपकरणों का मुद्दा लेते हैं, उदाहरण के लिए बेहतर कुकस्टोव। यह बाजार तेजी से बढ़ रहा है और यह समझ में भी आता है, क्योंकि यह परियोजना डेवलपर्स के लिए आकर्षक है। चूल्हे की लागत, जो कार्बन क्रेडिट लाभ के संदर्भ में परिवारों को मिलती है, परियोजना के 5 से 6 वर्षों के जीवनकाल में डेवलपर की कमाई का बमुश्किल 20 प्रतिशत है। दूसरे शब्दों में, कार्बन राजस्व का 80 प्रतिशत लाभ के रूप में रखा जाता है और यह एक बड़ी रकम है क्योंकि ऐसी प्रत्येक परियोजना में वितरित करने के लिए हजारों उपकरण होते हैं। और यह तब है जब हम मान रहे हैं कि इन उपकरणों को मुफ्त में बांटा जा रहा हो। कुछ स्थानों पर, जैसा कि हमने पाया है, गरीब परिवारों ने वास्तव में इन कुकस्टोवों के लिए भुगतान किया है और डेवलपर एवं उसके अमीर ऑफसेट ग्राहकों ने भारी मुनाफा कमाया है।

इसके अलावा वास्तविक कार्बन कटौती के बारे में स्पष्ट प्रश्न है, जिसका उपयोग कंपनियों द्वारा उत्सर्जन जारी रखने के लिए किया गया है। घरेलू उपकरण कार्यक्रम के मामले में, कंपनियां स्टोव के वितरण के आधार पर कार्बन कटौती की गणना करती हैं। इसके वास्तविक उपयोग के बारे में बहुत कम जानकारी है। हमारे शोध में पाया गया कि लोग खाना पकाने के लिए कई साधनों का उपयोग कर रहे थे। इसलिए, परियोजना डेवलपर्स, सत्यापनकर्ताओं, लेखा परीक्षकों और रजिस्ट्रियों की एक पूरी सेना मौजूद होने के बावजूद, परियोजना डेवलपर्स ने उत्सर्जन में कटौती को व्यापक तौर पर ओवर एस्टीमेट किया है। एक सबक जो अवश्य सीखना चाहिए वह है परियोजना के डिजाइन को सरल रखना और परियोजनाओं का नियंत्रण सार्वजनिक संस्थानों और लोगों के हाथों में देना।

● **श्याम सिंह सिकरवार**

भुगतान किसके खाते में किया जाए

सबसे गंभीर मुद्दा यह है कि कार्बन का भुगतान किसके खाते में किया जाए। यह कोई काल्पनिक प्रश्न नहीं बल्कि वास्तविक प्रश्न है। गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से भारत की 50 प्रतिशत विद्युत ऊर्जा आवश्यकताओं के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, जलविद्युत सहित नवीकरणीय ऊर्जा के प्रत्येक मेगावाट को गिनने और इसमें शामिल करने की आवश्यकता होगी। लगभग 675 भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं 268 मिलियन कार्बन क्रेडिट के लिए वेरा और गोल्ड स्टैंडर्ड रजिस्ट्री के तहत पंजीकृत हैं, जिनमें से 14.8 करोड़ सेवानिवृत्त हो चुके हैं (या ऑफसेट के खिलाफ दावा किया गया है)। इन्हें भारत के एनडीसी (राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान) में कैसे शामिल किया जा सकता है? या वे शामिल हो सकते हैं? क्या इससे दोहरा हिसाब-किताब नहीं होगा? सच तो यह है कि मौजूदा स्वैच्छिक कार्बन बाजार सस्ते विकल्पों पर आधारित है। इसका मतलब यह है कि देशों ने उत्सर्जन में कटौती के सबसे सस्ते विकल्प (जो वे वहन कर सकते थे) को बेच दिया है। वे अब विदेशी संस्थाओं और सरकारों की बैलेंस शीट में होंगे। इसका मतलब केवल यह है कि देश कठिन विकल्पों में निवेश करने में सक्षम नहीं होंगे। यह उत्सर्जन में योगदान देगा और हमारे साझा भविष्य को खतरे में डाल देगा।

घातक साबित हो रही रासायनिक खेती

किसान को अन्नदाता कहा जाता है, लेकिन आज के समय में हमारे देश के किसानों को सस्ती और सुलभ खाद देने के नाम पर आत्मनिर्भर लिखे खाद के बोरों में चीन द्वारा निर्मित की उर्वरक खाद मिल रही है। चीन में बन रही खाद के बोरों पर फोटो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लगी है। यह सब देश और किसानों से धोखा है, और जैविक खेती पर एक बहुत बड़ा कुठाराघात है। यह हम सब जानते हैं कि उर्वरक खादों और कीटनाशक दवाओं के उपयोग से खाद्य पदार्थ जहरीले हो रहे हैं, जो कि कई बीमारियों को बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन अब उस पर यह भी साजिश हो रही है कि अब उर्वरक खाद चीन से मंगाई जा रही है, जो कि किसानों के साथ एक बड़ा धोखा है। कई किसान और कीटनाशक व खाद विक्रेता बताते हैं कि अब चीन के कई कीटनाशक भी बाजार में उपलब्ध हैं। पहले किसान नकली व घटिया खाद और नकली कीटनाशकों के शिकार थे, अब वो उससे भी खराब खाद और कीटनाशकों के शिकार होने लगे हैं। चीन से आ रही खाद और कीटनाशक से फसलों को नुकसान तो हो ही रहा है, इसके अलावा किसानों और हर किसी को नुकसान हो रहा है।

हमारी सरकार ने जिस बेशर्मी से चीन की खाद पर आत्मनिर्भर भारत लिखकर उस पर प्रधानमंत्री की फोटो छापी है, वो सरकार की लापरवाही और किसानों से की जा रही धोखेबाजी को दर्शाती है। एक खबर में लिखा था कि अगर इफको के एमडी यूएस अवस्थी कोई मामूली आदमी होते, तो जेल में होते; क्योंकि खाद आयात पर करोड़ों रुपए का घपला हुआ है। इस घपले को लेकर सीबीआई और ईडी ने यूएस अवस्थी पर मुकदमे दर्ज किए हैं; लेकिन जांच के नाम पर कुछ खास नहीं हो रहा है और यूएस अवस्थी केंद्रीय मंत्रियों के साथ नजर आ रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के कॉमट्रेड के आंकड़ों के अनुसार, हमारे देश में पिछले साल चीन से 2.34 अरब डॉलर की खाद निर्यात की गई थी। हमारे देश में चीन और दूसरे देशों से लगभग 30 प्रतिशत यूरिया आती है, जिसमें चीन की हिस्सेदारी बहुत बड़ी है। दुनिया की सबसे बड़ी सहकारी कंपनी इफ्को अपने बोरों में चीन की खाद बेच रही है और सबको मूर्ख बनाने के लिए इन बोरों पर प्रधानमंत्री की फोटो छापकर सशक्त किसान-आत्मनिर्भर भारत लिखवा दिया है; जबकि इन पर उद्‌गम स्थल चाइना लिखा है।

इस धोखेबाजी को जब कुछ लोगों ने उजागर किया, तो इफ्को के एमडी यूएस अवस्थी ने इसे भ्रामक बताते हुए कहा है कि ऐसा करने वालों के पास समझ का अभाव है। इफ्को के एमडी को बताना चाहिए कि घपलों को उजागर करना समझ का अभाव कैसे है? देश में लोगों और जैविक खेती को जो नुकसान चीन के उत्पादन पहुंचा रहे हैं, पैसे कमाने के लालच में उसको बढ़ावा देना कौन-सी समझदारी है? जिससे आज देश की एक बड़ी आबादी जहरीला भोजन करने को मजबूर है। हमारे देश में लगभग 30-35 वर्षों में जैविक खेती को साजिश से खत्म किया गया है। अब जैविक खेती की जरूरत किसानों को महसूस होने लगी है। लेकिन फसलों के ज्यादा पैदावार के लालच और सरकार की लापरवाही ने जैविक खेती को बड़ा नुकसान पहुंचाता है। उर्वरक से पैदा की जा रही फसलों से पैदा खाद्य पदार्थ खाने से बीमारियां बढ़ रही हैं। गांव के लोग और किसान कभी बीमार नहीं पड़ते थे, वे भी अब कई-कई बीमारियों के शिकार हैं। ऐसे में किसानों को जैविक खेती की ओर लौटना चाहिए।

देश में रासायनिक उर्वरकों की मांग बढ़ने के नाम पर सरकार रासायनिक उर्वरकों का उत्पादन बढ़ा रही है। इसमें किसानों की भी गलती कम नहीं है। किसानों ने ज्यादा फसल उत्पादन के लालच में जैविक खाद बनाना लगभग 88 प्रतिशत कम कर दिया है। पशुपालन भी कम कर दिया है। देसी खाद के अभाव में उन्हें मजबूरन उर्वरक खाद फसलों में लगानी पड़ती है। इस खाद में नकली, कृत्रिम और चीन की घटिया खाद भी शामिल है। इस लाचारी के चलते बीते 20 वर्षों में हमारे देश में रासायनिक उर्वरकों की लगभग 73 लाख मीट्रिक टन मांग बढ़ी है। उर्वरक खाद की इस आपूर्ति के लिए सरकार रासायनिक उर्वरक खादों को बाहर से मंगाती है। लेकिन यह भी तो पूछने वाली बात है कि चीन की खाद बोरों में भरकर उस पर आत्मनिर्भर भारत किस बूते लिखा गया है? क्या किसानों को जैविक खेती से अवगत कराना और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने पर जोर देना सरकार की एक नैतिक जिम्मेदारी नहीं है?

● **धर्मेंद्र सिंह कथूरिया**

जैविक खाद्य पदार्थों की कीमत बहुत ज्यादा

जैविक खाद्य पदार्थों को खाने से हम लोग और हमारे पशु बीमारियों से बचेंगे और लंबी उम्र तक स्वस्थ रहेंगे। किसानों को समझना होगा कि आज विश्व में जैविक खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ रही है और जैविक खाद्य पदार्थों की कीमत बहुत ज्यादा है। इससे बाजार में जैविक फसलों के भाव भी काफी अच्छे मिलते हैं। आज पूरे विश्व में लगभग 130 देश जैविक खेती कर रहे हैं। जैविक खाद्य पदार्थों की मांग भी विश्व के ज्यादातर देश कर रहे हैं, जिनकी मांग के हिसाब से जैविक खाद्य पदार्थों की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। इस आपूर्ति में हमारा देश बड़ी भूमिका निभा सकता है। हमारे किसानों में जैविक खेती करने का हुनर भी है और हमारी जलवायु भी जैविक खेती के बहुत अनुकूल है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वो जैविक खेती को बढ़ावा दे, न कि चीन से घटिया रासायनिक खाद मंगवाकर उसे किसानों को बेचकर खाद्य उत्पादों को और जहरीला बनाने में सहयोग करे। अभी समय है कि हम अपनी धरती माता को जहर मुक्त करें, क्योंकि अगर लंबे समय तक रासायनिक उर्वरकों और जहरीले कीटनाशकों का उपयोग होता रहा, तो फिर हमारी उपयोगी कृषि की भूमि को जहरमुक्त करना बहुत मुश्किल हो जाएगा। विश्व के कई देश जैविक खेती की ओर रुख कर चुके हैं, हमारे देश में तो सदियों से जैविक खेती ही होती रही है। हमारे यहां लोगों के स्वस्थ रहकर जीने की उम्र भी इसलिए ही लंबी रही है। लेकिन पिछले 30-35 वर्षों से हमने अपनी कृषि भूमि में उर्वरक और कीटनाशक के रूप में जहर बोना शुरू कर दिया है और हर दिन भोजन में थोड़ा-थोड़ा जहर भी खा रहे हैं।

हिंदीभाषी तीन बड़े राज्यों के विधानसभा चुनाव में मिली जीत के बाद भाजपा ने समय गंवाए बिना लोकसभा चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी हैं। भाजपा इस बार मप्र में लोकसभा की सभी 29 सीटें जीतने की कोशिश में जुट गई है। पार्टी का लक्ष्य है कि इस बार मप्र में लोकसभा चुनाव में क्लीन स्वीप किया जाए। गौरतलब है कि वर्तमान समय में प्रदेश की 28 लोकसभा सीटों पर भाजपा का कब्जा है। छिंदवाड़ा की 1 सीट कांग्रेस के कब्जे में है। इस बार भाजपा इस सीट को भी जीतने की पूरी कोशिश करेगी।

अब लोकसभा में क्लीन स्वीप करने की तैयारी

मेशा मिशन मोड में रहने वाली भाजपा ने पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजों के ऐलान के बाद से ही लोकसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। मप्र विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत के बाद अब भाजपा राज्य में लोकसभा चुनाव में क्लीन स्वीप की तैयारी में जुट गई है। भाजपा का लक्ष्य है कि प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों को जीता जाए। इसके लिए पार्टी में रणनीति बनने लगी है। गौरतलब है कि वर्तमान में प्रदेश की 28 लोकसभा सीटों पर भाजपा और 1 लोकसभा सीट छिंदवाड़ा पर कांग्रेस का कब्जा है।

आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के कब्जे वाली छिंदवाड़ा सीट समेत सभी 29 सीटों को जीतने के लिए भाजपा विधानसभा चुनाव की रणनीति पर ही काम करेंगी। जानकारों की मानें तो विधानसभा चुनाव की तरह लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस की घेराबंदी की जाएगी। ऐसे में पार्टी ने यहां पर अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए अभी से ही मेहनत करना शुरू कर दिया है। तभी जाकर भाजपा के लिए लोकसभा की राह आसान हो पाएगी। 2003 के बाद भारतीय लोकतंत्र में यह देखा गया है कि विधानसभा और लोकसभा में एक जैसे पैटर्न पर चुनाव नहीं होते हैं। पिछले चुनाव की बात करें तो कांग्रेस ने मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के अलावा कर्नाटक में भी अपनी सरकार बना ली थी। लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाई थी।

भाजपा पार्षद से लेकर लोकसभा चुनाव में पूरी मेहनत करती है। वह किसी भी चुनाव को हल्के में नहीं लेती है। खास बात यह है कि छोटे चुनाव से लेकर बड़े चुनाव में पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और जेपी नड्डा का साथ मिलता है। जिससे पार्टी कार्यकर्ताओं का भी हौंसला बुलंद हो जाता है। पार्टी के आलाकमान की कोशिश है कि वे इस जीत को लोकसभा चुनाव में भी बरकरार रखे। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पार्टी एक बार फिर चुनाव लड़ने जा रही है। नरेंद्र मोदी के चेहरे पर ही भाजपा मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान का किला भेदने में सफल हो पाई है। भाजपा की कोशिश है कि लोकसभा चुनाव में भी वह इसे बरकरार रखे।

गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने अंचलवार रणनीति बनाई थी। विशेषकर कांग्रेस के दिग्गज नेताओं को घेरने के लिए पार्टी ने अपने ऐसे नेताओं को जिम्मेदारी दी थी, जो चुनावी प्रबंधन में माहिर थे। इसी तरह आरक्षित सीटों के लिए भी अलग से रणनीति बनाई गई थी। परिणाम यह रहा कि कांग्रेस बदलाव की बात करती रही और मतदाताओं ने भाजपा को दो तिहाई बहुमत देकर एक बार फिर से सूबे को सत्ता सौंप दी। प्रदेश की आरक्षित सीटों पर विधानसभा चुनाव के नतीजों पर नजर डाली जाए तो एससी वर्ग की 38 सीटों में से भाजपा ने इस बार 30 पर जीत दर्ज की है। इसी तरह एसटी की 47 सीटों में से भाजपा को 24 और कांग्रेस ने 22 विधानसभा सीटों पर जीत दर्ज की है। जबकि वर्ष 2018 के चुनाव में कांग्रेस ने 47 एसटी सीटों में से 37 पर विजय हासिल कर सरकार बनाने में सफलता पाई थी। तब भाजपा को मात्र 15 एसटी आरक्षित विधानसभा क्षेत्रों में ही सफलता मिल पाई थी। यानि दोनों आरक्षित वर्ग की 82 सीटों में से भाजपा के पाले में 50 सीटें गई, जो पिछले चुनाव की तुलना में 17 सीटें ज्यादा थीं।

भाजपा लोकसभा चुनाव में भी विधानसभा चुनाव की तरह अपना प्रदर्शन दोहराना चाहती है, इसलिए प्रदेश संगठन ने मिशन 29 अपने हाथों में लिया है। यानी कि सूबे की सभी 29 सीटों

भाजपा के पक्ष में बढ़े वोटिंग परसेंट का संकेत क्या?

हिंदी पट्टी के तीनों राज्यों में भाजपा के पक्ष में मतदान बढ़ा है। 2014 के बाद का ट्रेंड देखें तो विधानसभा चुनाव के मुकाबले भाजपा को लोकसभा चुनाव में अधिक वोट मिलते थे। पिछले लोकसभा चुनाव की ही बात करें तो भाजपा का वोट शेयर 2018 के विधानसभा चुनाव में 41.6 फीसदी के मुकाबले 58 फीसदी से अधिक वोट मिले थे। हाल के विधानसभा चुनाव में भाजपा का वोट शेयर 48 फीसदी से अधिक रहा है। राजस्थान की बात करें तो 2018 के विधानसभा चुनाव में 39.3 फीसदी वोट मिले थे और लोकसभा चुनाव में वोट शेयर 20 फीसदी से अधिक की उछाल के साथ 59 फीसदी के पार पहुंच गया था। 2023 में भाजपा को 41.69 फीसदी वोट मिले हैं। छत्तीसगढ़ में भी पिछले चुनाव के मुकाबले भाजपा का वोट शेयर बढ़ा है। भाजपा को 2018 में 45.17 फीसदी वोट मिले थे। 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी का वोट शेयर 51.44 फीसदी रहा था जबकि कांग्रेस 41.50 फीसदी वोट शेयर के साथ महज दो सीटें ही जीत सकी थी। इस बार भाजपा को 46.27 फीसदी वोट मिले हैं। हिंदी पट्टी में भाजपा का वोटिंग परसेंट बढ़ना छोटी पार्टियों की खिसकती जमीन का संकेत बताते हुए अमिताभ तिवारी का कहना है कि विधानसभा चुनाव भी अब बाइपोलर हो रहे हैं। लोगों का भरोसा क्षेत्रीय दलों पर कम हो रहा है और जो ताकतवर है वह क्षेत्रीय पार्टियों के वोट में भी सेंध लगा सकता है।

को जीतकर लोकसभा में मप्र को कांग्रेस मुक्त कराया जा सके। जानकारों की मानें तो भाजपा अगले लोकसभा चुनाव के लिए कई आरक्षित सीटों पर इस बार नए चेहरे उतार सकती है। इनमें भिंड, देवास और उज्जैन में भाजपा नए चेहरे पर दांव लगा सकती है। इसी तरह छिंदवाड़ा, बालाघाट में भी किसी नए नेता को संसदीय चुनाव लड़वाया जा सकता है। इसी तरह सीधी, सतना, जबलपुर, मुरैना, ग्वालियर, सागर में भी लोकसभा चुनाव के लिए किसी नए नेता को मैदान में उतारा जा सकता है। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के कई दिग्गज नेता चुनाव हारे थे। केवल कमलनाथ ने छिंदवाड़ा में अपने पुत्र नकुलनाथ को जिताकर कांग्रेस की लुटिया पूरी तरह से डूबने से बचाई थी। इस बार भाजपा छिंदवाड़ा संसदीय सीट को भी कांग्रेस से छीनना चाहती है, साथ ही वह विधानसभा चुनाव में केंद्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते की हार को भी ध्यान में रखकर आदिवासी और अनुसूचित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों के लिए रणनीति बनाएगी।

जानकारों का कहना है कि पार्टी इन सभी सीटों में बूथ स्तर पर अपना वोट प्रतिशत बढ़ाने अपने बड़े नेताओं को मैदान में उतारेगी। कहा जाता है कि भाजपा ऐसी पार्टी है जिसकी हर चाल चुनावी होती है। पांच राज्यों के चुनाव में भाजपा ने केंद्रीय मंत्रियों और पूर्व मंत्रियों समेत लोकसभा के 21 सांसदों को चुनाव मैदान में उतारा था, जिनमें से 9 सांसद हार गए हैं। अब चुनाव हारने वाले सांसद 2024 में टिकट की रेस से ऐसे ही बाहर माने जा रहे हैं, जो जीतकर आए हैं, उन्होंने भी संसद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है यानी भाजपा ने विधानसभा चुनाव जीतने वाले सांसदों को दिल्ली से सूबे की सियासत में भेज दिया है। इसे एंटी इनकम्बेंसी से निपटने के लिए भाजपा की टिकट काटने वाली रणनीति से जोड़कर भी देखा जा रहा है।

राजस्थान में लोकसभा की 25, मप्र में 29, छत्तीसगढ़ में 11, तेलंगाना में 17 और मिजोरम में एक सीट है। इन पांच राज्यों में कुल सीटों का आंकड़ा देखें तो ये 83 पहुंचता है। साल 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को 83 में से 65 सीटों पर जीत मिली थी। इन 65 में से चार सीटें

भाजपा ने तेलंगाना में जीती थीं। यानी भाजपा के 61 लोकसभा सांसद तीन राज्यों- राजस्थान, मप्र और छत्तीसगढ़ से ही आते हैं। अब, जब इन राज्यों के चुनाव में जीत के साथ भाजपा ने सत्ता में वापसी कर ली है। लोकसभा चुनाव में पिछला प्रदर्शन दोहराने की चुनौती होगी।

पिछले लोकसभा चुनाव और इस बार के लोकसभा चुनाव में तस्वीर काफी अलग होगी। 2019 में भाजपा पांच साल सरकार चलाने के बाद चुनाव मैदान में उतरी थी, वहीं इस बार 10 साल की सरकार के साथ पार्टी चुनाव में जा रही है। पिछले लोकसभा चुनाव में राजस्थान, मप्र और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार थी, इस बार भाजपा सत्ताधारी दल है। तेलंगाना में केसीआर सरकार थी, अब वहां सत्ता की कुर्सी पर कांग्रेस के रेवंत रेड्डी हैं। बदले हालात में चुनाव नतीजे देखकर हिंदी पट्टी के तीनों राज्यों को भाजपा के लिए सबसे मुफीद माना जा रहा है। लेकिन बड़ी बात ये है कि इन प्रदेशों में भाजपा की सीटें सेचुरेशन पर हैं। मप्र में लोकसभा की 29 सीटें हैं और इनमें से 28 पर भाजपा का कब्जा है। इसी तरह राजस्थान की 25 में से 24, छत्तीसगढ़ की 11 में से 9 सीटों पर भाजपा काबिज है। अब भाजपा कम सीटों पर काबिज होगी तो उसकी सीटें बढ़ने की उम्मीद होती। यहां तो पहले से ही सेचुरेशन की स्थिति है। ऐसे में भाजपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती पिछले चुनाव की जीती अपनी सीटें बचाए रखने की होगी। अब सवाल ये भी है कि सेचुरेशन की स्थिति में अपनी सीटें बचाए रखने के लिए भाजपा क्या रणनीति अपनाती है?

कहा जाता है कि भाजपा ऐसी पार्टी है जिसकी हर चाल चुनावी होती है। पांच राज्यों के चुनाव में भाजपा ने केंद्रीय मंत्रियों और पूर्व मंत्रियों समेत लोकसभा के 21 सांसदों को चुनाव मैदान में उतारा था जिनमें से 9 सांसद हार गए हैं। अब चुनाव हारने वाले सांसद 2024 में टिकट की रेस से ऐसे ही बाहर माने जा रहे हैं, जो जीतकर आए हैं उन्होंने भी संसद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है यानी भाजपा ने विधानसभा चुनाव जीतने वाले सांसदों को दिल्ली से सूबे की सियासत में भेज दिया है। इसे एंटी इनकम्बेंसी से निपटने के लिए भाजपा की टिकट काटने वाली रणनीति से जोड़कर भी देखा जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषक अमिताभ तिवारी का कहना है कि भाजपा न सिर्फ माइक्रो लेवल पर काम करती है, उसकी रणनीति भी माइक्रो ही होती है। पार्टी ने विधानसभा चुनावों में किसी भी नेता को सीएम फेस घोषित किए बिना प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ा और जीता। ये एक तरह से प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता, एंटी इनकम्बेंसी का लिटमस टेस्ट था। एंटी इनकम्बेंसी या तो सरकार और सरकार के अगुवा के खिलाफ होती है या फिर जनप्रतिनिधि के खिलाफ। चुनाव नतीजों से कम से कम एक बात तो साफ हो गई कि प्रधानमंत्री मोदी या केंद्र सरकार को लेकर एंटी इनकम्बेंसी नहीं है।

● **सुनील सिंह**

तेलंगाना में भाजपा के लिए कितनी संभावनाएं

दक्षिण भारत के कर्नाटक को छोड़ दें तो बाकी राज्यों में भाजपा कुछ खास नहीं कर पाई है। कर्नाटक के बाद भाजपा के लिए तेलंगाना को सबसे अधिक संभावनाओं वाला राज्य माना जाता है। भाजपा तेलंगाना के पिछले चुनाव में महज एक सीट पर सिमट गई थी। इस बार पार्टी 14 फीसदी वोट शेयर के साथ 8 सीटें जीतने में सफल रही है। लोकसभा चुनाव की बात करें तो भाजपा को 2019 में 19.65 फीसदी वोट शेयर के साथ चार सीटों पर जीत मिली थी। कहा ये भी जा रहा है कि हिंदी बेल्ट में सेचुरेशन की स्थिति के कारण जो थोड़ा-बहुत सीटों के नुकसान का खतरा है, भाजपा की रणनीति उसे तेलंगाना जैसे राज्यों से कंपनसेट किए जाने के प्लान पर काम कर रही है। इसके लिए भाजपा की रणनीति क्या होगी? राजनीतिक विश्लेषक अमिताभ तिवारी ने टिकट बंटवारे और चुनाव प्रचार का जिक्र करते हुए कहा कि अमित शाह ने सत्ता में आने पर ओबीसी सीएम का वादा कर लाइन क्लीयर कर दी थी। तेलंगाना में पिछड़ों की राजनीति में एक शून्य है। भाजपा तेलंगाना में ओबीसी पॉलिटिक्स की धुरी बनने की रणनीति पर काम कर रही है। पार्टी का फोकस अर्बन, एसटी और ओबीसी पर है।

सुरक्षित नहीं सड़कें

पैदल यात्रियों को अधिक चोट लगने का खतरा

संयुक्त राष्ट्र के सातवें वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह में बॉश लिमिटेड की ओर से पेश की गई अध्ययन रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2021 के दौरान भारत में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में करीब 29,000 से अधिक पैदल यात्रियों की मौत हो गई, जिसमें से करीब 60,000 से अधिक लोगों को यातायात दुर्घटना में चोटें आई हैं। इस दौरान भारत की सड़क दुर्घटनाओं में पूरे यूरोप और जापान के मुकाबले अधिक मौतें हुई हैं। इसमें यह भी कहा गया है कि वर्ष 2021 के दौरान सड़क हादसों में करीब 1,50,000 से अधिक लोगों की मौत हुई थी। प्रौद्योगिकी कंपनी बॉश लिमिटेड की रिपोर्ट में भारत में पैदल यात्रिओं की सुरक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अधिकारियों और नीति निर्माताओं से सड़कों के किनारे पैदल चलने वाले यात्रियों को प्राथमिकता देने की मांग की है। इसके अलावा, बेहतर बुनियादी ढांचे और भारत के सड़क मार्गों से गुजरने वाले पैदल यात्रियों की सुरक्षा के लिए जागरूकता अभियान की भी मांग की गई है। इसमें यह भी कहा गया है कि सामूहिक प्रयासों से ही देश में पैदल चलने वालों की दुर्घटनाओं को कम किया जा सकता है।

भारत ही नहीं, दुनियाभर की सड़कें पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित नहीं हैं। एक नई रिपोर्ट से पता चला है कि वैश्विक स्तर पर औसतन हर दिन 750 से ज्यादा पैदल यात्रियों की जान सड़क हादसों में जा रही है। मतलब कि वैश्विक स्तर पर हर साल 2,74,000 पैदल यात्री सड़कों पर होने वाले हादसों का शिकार बन जाते हैं। यह जानकारी विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा जारी नई रिपोर्ट ग्लोबल स्टेटस रिपोर्ट ऑन रोड सेफ्टी 2023 में सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक दुनियाभर में हर साल सड़क हादसों में जितनी जानें जा रही हैं उसमें से 23 फीसदी शिकार पैदल यात्री होते हैं। वहीं यदि पिछले 11 वर्षों से जुड़े आंकड़ों को देखें तो 2010 की तुलना में 2021 के दौरान हादसों में जान गंवाने वाले पैदल यात्रियों के आंकड़े में तीन फीसदी का इजाफा हुआ है। वहीं राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में सड़क दुर्घटनाओं की संख्या 2020 में 3,68,828 से बढ़कर 2021 में 4,22,659 हो गई। इन यातायात दुर्घटनाओं में 4,03,116 सड़क दुर्घटनाएं, 17,993 रेलवे दुर्घटनाएं और 1,550 रेलवे क्रासिंग दुर्घटनाएं शामिल हैं। 2020 से 2021 तक राज्यों में यातायात दुर्घटना के मामलों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि तमिलनाडु (46,443 से 57,090 तक) में दर्ज की गई। इसके बाद मप्र (43,360 से 49,493), उप्र (30,593 से 36,509), महाराष्ट्र (24,908 से 30,086) और केरल (27,998 से 33,051) का स्थान है।

रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि दुनिया में 80 फीसदी सड़कें पैदल यात्रियों के लिए सुरक्षित नहीं हैं। वो पैदल यात्रियों की सुरक्षा से जुड़े मानकों को पूरा नहीं करती हैं। वहीं महज 0.2 फीसदी सड़कों पर साइकिल लेन मौजूद हैं। जो कहीं न कहीं स्पष्ट तौर पर इस बात का संकेत है कि यह सड़कें पैदल और साइकिल सवारों के लिए सुरक्षित नहीं हैं। इतना ही नहीं सर्वेक्षण में सामने आया है कि हर दस में से नौ लोग पैदल चलते हैं। इसके बावजूद दुनिया के केवल एक चौथाई देशों में पैदल यात्रियों, साइकिल सवारों और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने के संबंध में नीतियां हैं। हालांकि साथ ही इस रिपोर्ट में इस बात की भी पुष्टि की गई है कि इन 11 वर्षों में सड़क हादसों में होने वाली कुल मौतों में पांच फीसदी की गिरावट आई है। गौरतलब है कि जहां 2010 के दौरान हुए सड़क हादसों में कुल 12.5 लाख लोगों की जान गई थी। वहीं 2021 में मौतों का यह आंकड़ा घटकर 11.9 लाख रह गया है। मतलब, अभी भी हर दिन औसतन 3200 लोगों की जान इन सड़क हादसों में जा रही है।

रिपोर्ट में जो चौंकाने वाली बात सामने आई है वो यह है कि इन 11 वर्षों में सड़क हादसों में होने वाली साइकिल सवारों की मौतों में 20 फीसदी का इजाफा हुआ है। आंकड़ों की मानें तो 2021 में 71,000 साइकिल सवार इन सड़क हादसों की भेंट चढ़ गए थे। मतलब, सड़क हादसों में होने वाली छह फीसदी मौतों का शिकार कोई न कोई साइकिल सवार बनता है। इस तरह कुल मिलकर देखें तो सड़क हादसों में होने वाली 29 फीसदी मौतों के शिकार पैदल यात्री या साइकिल सवार बन रहे हैं। देखा जाए तो यह आंकड़ा करीब-करीब सड़क हादसों में होने वाली चार पहिया सवारों की मौतों के बराबर है। बता दें कि हर साल सड़क हादसों में होने वाली 30 फीसदी मौतों का शिकार यह चार पहिया सवार ही बन रहे हैं।

वहीं दो और तीन पहिया सवारों की सड़क हादसों में होने वाली मौतों को देखें तो यह आंकड़ा करीब 21 फीसदी है। जबकि हादसों में जाने वाली 20 फीसदी मौतों के बारे में रिपोर्ट का कहना है कि वो भारी वाहनों या अन्य वाहनों के सवार हैं। यदि भारत की बात करें तो देश में भी पैदल चलने वाले सबसे ज्यादा असुरक्षित हैं। इस बारे में सांसद राकेश सिन्हा ने 7 दिसंबर 2023 को जो जानकारी राज्यसभा में सदन के सामने रखी है उससे पता चला है कि 2022 में करीब 32,825 पैदल यात्री सड़क दुर्घटनाओं का शिकार बने हैं। राज्यसभा सांसद ने सदन को बताया है कि सड़क हादसों में 58 फीसदी दुर्घटनाएं पैदल यात्रियों की हो रही हैं। इस बारे में डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस के मुताबिक सड़क दुर्घटनाओं में कमी जरूर आई है, लेकिन यह आंकड़ा उतनी तेजी से नहीं गिर रहा। उनके अनुसार सड़कों पर होने वाली इन त्रासदियों को टाला जा सकता है। उन्होंने सभी देशों से अपनी परिवहन प्रणालियों में कारों की जगह लोगों को प्राथमिकता देने का आव्हान किया है। साथ ही उन्होंने सभी देशों से पैदल यात्रियों, साइकिल सवारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की बात कही है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में पैदल यात्री अक्सर वाहनों को गुजरने देने के लिए सड़क के बीच में ही रुक जाते हैं, जो हादसों के प्रमुख कारण बनते हैं। हालांकि, पश्चिमी देशों में ऐसा नहीं होता है। पश्चिमी देशों में गाड़ी चलाने वाले लोग पैदल चलने वालों को प्राथमिकता देते हैं। इसके साथ ही, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि ग्रामीण सड़कों पर चलने वाले लोग शहरी लोगों की अपेक्षा अधिक चोटिल होते हैं। इन इलाकों में रात के मुकाबले दिन में अधिक हादसे होते हैं।

● **जितेंद्र तिवारी**

लोकसभा ने फिर से 2005 दोहरा दिया

आखिरकार लोकसभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके महुआ मोइत्रा को लोकसभा से बर्खास्त कर दिया। सब कुछ 2005 की तरह दोहराया गया, तब भारतीय जनता पार्टी ने यह कहते हुए वाकआउट कर दिया था कि सांसदों को दी जा रही सजा उनके अपराध की तुलना में ज्यादा है। इस बार विपक्ष पूरी तरह कन्फ्यूज था कि वह महुआ मोइत्रा का बचाव करे या न करे, क्योंकि महुआ मोइत्रा एक इंटरव्यू में खुद अपना अपराध कबूल कर चुकी थी कि उसने लोकसभा की वेबसाईट का अपना लॉग-इन पासवर्ड उद्योगपति दर्शन हीरानंदानी को दे रखा था। विपक्ष का पूरा जोर इस बात पर था कि महुआ मोइत्रा को अपना पक्ष रखने का मौका दिया जाए। लेकिन स्पीकर ने उसी तरह उन्हें मौका नहीं दिया जैसे 2005 में आरोपी दस सांसदों को नहीं दिया गया था। भाजपा के बहुमत को देखते हुए इंडी एलायंस के सभी सदस्यों ने वोटिंग से पहले वाकआउट कर दिया। वाकआउट करने और बाद में मीडिया के सामने कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी भी मौजूद थी, जिन्होंने 2005 में लोकसभा के दस सांसदों और राज्यसभा के एक सांसद की सदस्यता समाप्त करने को प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया था।

2005 में जो कुछ हुआ, सदन और आचरण कमेटी ने वही दोहराया। फर्क सिर्फ इतना था कि तब स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने दस सांसदों के आचरण की जांच का काम पवन बंसल की रहनुमाई में बनाई गई विशेष कमेटी को सौंपा था, जबकि मौजूदा स्पीकर ने महुआ मोइत्रा के मामले में जांच का काम सदन की आचरण कमेटी को सौंपा था। 2005 में कोबरापोस्ट डॉट कॉम नाम की एक वेबसाइट ने सांसदों का स्टिंग ऑपरेशन किया था। कोबरापोस्ट डॉट कॉम के दो पत्रकारों ने सांसदों को अपने जाल में फंसाने के लिए उनसे मुलाकात की और उनकी दिलचस्पी वाले विषयों पर कुछ सवाल दिए, उन्होंने सांसदों को कुछ पैसे डोनेशन के रूप में भी दिए थे। यह सारी प्रक्रिया स्टिंग ऑपरेशन का हिस्सा थी, जो भी बातचीत हो रही थी, उसे गुप्त कैमरों से रिकॉर्ड कर लिया गया था। कोबरापोस्ट के लोगों ने सांसदों को 15 हजार से लेकर 1,10,000 रुपए तक दिए थे। कुछ सांसदों ने लिफाफा लेने से इंकार भी किया था, लेकिन उन्हें जबरदस्ती लिफाफा थमाया गया था। यानी सबकुछ उन्हें फंसाने के लिए प्रायोजित किया गया गेम था। इन सांसदों में से सिर्फ एक सांसद सत्ताधारी कांग्रेस का था, जबकि बाकी सारे सांसद विपक्षी दलों के थे, जिनमें सबसे ज्यादा लोकसभा के छह सांसद भाजपा के थे, भाजपा का ही सातवां सांसद राज्यसभा से था, लोकसभा के दो सांसद बसपा और एक सांसद राष्ट्रीय जनता दल का था।

कोबरापोस्ट डॉट कॉम ने गुप्त कैमरों से रिकार्डिंग किए गए वीडियो इंडिया टुडे को बेच दिए थे, जिसने इस स्टिंग ऑपरेशन को संसद सत्र के दौरान 12 दिसंबर 2005 को आजतक न्यूज चैनल पर चलाया था। क्योंकि संसद का शीतकालीन सत्र चल रहा था, इसलिए सदन में खूब हंगामा हुआ। इस पर उसी दिन लोकसभा स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने चंडीगढ़ के कांग्रेस सांसद पवन बंसल की अध्यक्षता में एक विशेष जांच कमेटी का गठन किया। राज्यसभा ने भी अपने एक सांसद पर फैसला करने के लिए वही तरीका अपनाया। दोनों कमेटियों को सिर्फ दस दिन में रिपोर्ट देने को कहा गया था। इन दस दिनों के अंदर कमेटी ने कोबरापोस्ट डॉट कॉम के मालिक अनिरुद्ध बहल ने इंडिया टुडे के संपादक और सभी दस सांसदों को भी तलब करके उनका पक्ष सुना। इंडिया टुडे ने स्वीकार किया था कि उसने प्रसारित किए गए वीडियो कोबरापोस्ट से 48 लाख में खरीदे थे। आजतक ने वे सभी वीडियो संसदीय समिति को सौंप दिए थे, जो अब संसदीय रिकॉर्ड का हिस्सा है।

सभी दस सांसद लोकसभा की विशेष कमेटी के सामने पेश हुए थे, जिन्होंने कोबरापोस्ट डॉट कॉम के मालिक अनिरुद्ध बहल से आमना-सामना करवाने की मांग की थी, लेकिन बंसल कमेटी ने उनकी मांग अस्वीकार कर दी थी। कमेटी ने दी गई समयसीमा दस दिन में अपनी रिपोर्ट लोकसभा स्पीकर को सौंप दी थी, और अगले दिन 23 दिसंबर को रिपोर्ट सदन में रखी गई, आधा घंटा रिपोर्ट पर बहस हुई। भाजपा के वाकआउट के दौरान सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके लोकसभा के सभी दस सदस्यों की सदस्यता समाप्त कर दी गई थी। विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवानी ने वाकआउट से पहले कहा था कि अपराध के मुकाबले सजा ज्यादा है। सोनिया गांधी ने बाद में पवन बंसल को रेल मंत्री बना दिया था, जिसे बाद में उनके भांजे पर रिश्वतखोरी के आरोप में मंत्रिमंडल से इस्तीफा देना पड़ा था।

● **राजेश बोरकर**

दस दिन में खत्म कर दी गई थी सांसदों को बर्खास्त करने की प्रक्रिया

2005 में सिर्फ दस दिन में सांसदों को बर्खास्त करने की प्रक्रिया खत्म कर दी गई थी, जबकि महुआ मोइत्रा के मामले में दो महीने का समय लगा, क्योंकि उनके खिलाफ शिकायत सत्रावसान के दौरान मिली थी। आठ दिसंबर को जब आचरण कमेटी की रिपोर्ट सदन में रखी गई, और सांसदों को उसे पढ़ने के लिए सिर्फ दो घंटे का समय दिया गया तो इस पर विपक्ष ने कड़ा ऐतराज किया। लेकिन लोकसभा स्पीकर और सत्ताधारी दल के पास अपने बचाव के लिए 2005 का उदाहरण था। जो कुछ तब कांग्रेस और मौजूदा इंडी एलायंस के दलों ने किया था, वही अब दोहराया जा रहा था। उस समय प्रणब मुखर्जी सदन के नेता थे, क्योंकि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह लोकसभा के सदस्य नहीं थे। मनमोहन सिंह राज्यसभा में और प्रणब मुखर्जी लोकसभा में सदन के नेता थे। विपक्ष ने जब सांसदों को पक्ष रखने देने की मांग की थी, तो प्रणब मुखर्जी ने दलील दी थी कि उन्हें कमेटी के सामने अपना पक्ष रखने का मौका दिया गया था। इस बार कांग्रेस ने अपने वरिष्ठ वकील सांसद मनीष तिवारी को महुआ मोइत्रा के बचाव में उतारा था। लेकिन उनकी सारी दलीलों की काट 2005 में दस सांसदों की बर्खास्ती प्रक्रिया में मौजूद थी। कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने महुआ मोइत्रा का बचाव करने के बजाय रिपोर्ट पढ़ने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिए जाने का सवाल उठाया। कांग्रेस की तरफ से मनीष तिवारी की भी पहली दलील यही थी कि आधे घंटे में इतनी लंबी रिपोर्ट कैसे पढ़ी जा सकती है। महुआ मोइत्रा का बचाव करने के बजाय उनकी दूसरी दलील यह थी कि महुआ मोइत्रा को सदन में अपना पक्ष रखने का मौका दिया जाए।

विपक्ष का चेहरा कौन

तीन हिंदी भाषी प्रदेशों- मप्र, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की शानदार जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिल रहा है। इस जीत से यह धारणा मजबूत हुई है कि चुनावी मैदान में ब्रांड मोदी ही पार्टी का तुरुप का इक्का हैं। भाजपा भले ही अपने आपको कार्यकर्ताओं की पार्टी कहती रही हो, इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि आज के दौर में अधिकतर मतदाता मोदी के नाम पर ही पार्टी को वोट देते हैं। इससे न सिर्फ अधिकतर राजनीतिक विश्लेषक, बल्कि उनके धुर विरोधी भी इत्तेफाक रखते हैं। उनके सियासी प्रतिद्वंद्वी आज खुले मन से स्वीकार कर रहे हैं कि इस बार की जीत भाजपा या आरएसएस की नहीं, बल्कि मोदी की है।

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में पार्टी या पार्टी की विचारधारा पर किसी नेता विशेष के व्यक्तित्व का भारी पड़ना कोई नई बात नहीं है। कांग्रेस में नेहरू और इंदिरा गांधी से लेकर माकपा में ज्योति बसु और तृणमूल कांग्रेस में ममता बनर्जी तक कई ऐसे कद्दावर नेता हुए जिनकी शख्सियत उनकी पार्टी से बड़ी बन गई। आज भी नवीन पटनायक, नीतीश कुमार और लालू प्रसाद जैसे अनेक नेता हैं जिनकी पार्टी का भूत, वर्तमान और भविष्य जनता के बीच उनकी स्वीकार्यता से सीधा जुड़ा है, न कि उनके दलों की विचारधारा से। जहां तक भाजपा का सवाल है, वहां अटल बिहारी वाजपेयी युग से लेकर मोदी के दौर तक संगठन या सरकार में पार्टी की विचारधारा को ही सर्वोपरि समझा जाता रहा है। यह बात और है कि मोदी के शासनकाल से पहले भाजपा को अपने बल पर बहुमत कभी नहीं मिला था। अपनी नीतियों और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए उसे सहयोगी पार्टियों पर निर्भर रहना पड़ता था। 2014 के बाद पार्टी अपने बूते सरकार बनाने में सक्षम हुई। उसके बाद मोदी के नेतृत्व में कई ऐसे निर्णय लिए गए जो भाजपा के एजेंडे पर लंबे समय से लंबित थे। उनके कई निर्णयों की आलोचना भी हुई, लेकिन उन्होंने किया वही जो उनकी पार्टी की नीतियों के अनुरूप था।

अगर ताजा चुनावों में वाकई तीन राज्यों के मतदाताओं ने स्थानीय मुद्दों को दरकिनार करके सिर्फ मोदी के नाम पर भाजपा को सत्ता सौंपी है, तो यह प्रतिपक्ष के लिए चिंता का विषय होना चाहिए, जिसे जल्द ही 2024 के लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट जाना है। वर्ष 2018 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने इन्हीं तीन राज्यों में शानदार प्रदर्शन कर सत्ता हासिल की थी, लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने वहां जीत का सेहरा अपने नाम कर लिया। उस समय कहा गया कि आम मतदाता प्रदेश के चुनावों में तो स्थानीय मुद्दों के आधार पर सरकार चुनता है, लेकिन जब संसदीय चुनाव होते हैं तो उसे मोदी के अलावा कोई और विकल्प नहीं नजर आता है। इस चुनाव में यह धारणा भी टूट गई।

यह अपने आप नहीं हुआ है। चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस के नेता यह कहते रहे कि भाजपा की खराब स्थिति को देखते हुए मोदी को इन राज्यों में ताबड़तोड़ सभाएं करने को मजबूर होना पड़ा है, लेकिन प्रधानमंत्री चुनावी मैदान में डटे रहे। इसके विपरीत, हाल के दशकों में कांग्रेस में यह परंपरा-सी बन गई है कि प्रदेश के चुनावों की बागडोर स्थानीय क्षत्रपों के हाथों सौंप दी जाती है और पार्टी का शीर्ष नेतृत्व अपनी दूरी बना लेता है। दरअसल, मोदी तकरीबन हर चुनाव में अपनी सक्रियता दिखाते रहे हैं, उन राज्यों में भी जहां पार्टी की सफलता की गुंजाइश कम दिखती है। 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार और लालू यादव के साथ आने से भाजपा के लिए मुश्किल बढ़ गई थी, लेकिन मोदी कई सप्ताह तक चुनावी रैलियां संबोधित करते रहे। प्रधानमंत्री के रूप में राज्यों के चुनावों के दौरान इस तरह की सक्रियता भले ही उनकी पार्टी की जीत का एकमात्र कारण न हो, लेकिन इससे भाजपा को निसंदेह अपनी जमीन व्यापक स्तर पर मजबूत करने में मदद मिली है। इससे यह भी पता चलता है कि मोदी के लिए हर चुनाव कितना महत्वपूर्ण है।

अगले चार-पांच महीनों के भीतर विपक्ष के लिए ब्रांड मोदी की काट ढूंढना सबसे बड़ी चुनौती है। कांग्रेस के भीतर आज भी इस बात पर संशय बरकरार है कि क्या राहुल गांधी साझा विपक्ष के सर्वमान्य नेता होंगे। कांग्रेस को शायद उम्मीद थी कि तीन राज्यों के साथ तेलंगाना में चुनाव जीतकर वह अपनी सहयोगी पार्टियों को इस बात पर राजी कर लेगी कि वे राहुल गांधी को विपक्ष के प्रधानमंत्री पद के चेहरे के रूप में आगे करें। अब समाजवादी पार्टी और जनता दल-यूनाइटेड ने हार का ठीकरा कांग्रेस के सिर पर फोड़ते हुए साफ कह दिया है कि सहयोगी पार्टियों की उपेक्षा हुई है। इसलिए यह सवाल उठना लाजिमी है कि क्या 2024 के चुनावी समर के लिए विपक्ष बिना किसी नेतृत्व के चुनाव लड़ेगा?

● **रजनीकांत पारे**

भाजपा को लग चुकी है जीत की लत

हालिया विधानसभा चुनाव वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य पर अहम अंर्तदृष्टि देते हैं। इन चुनावों का जरूरी आयाम राजनीतिक ताकत के रूप में भाजपा का अपराजेय चरित्र है। सियासी हलकों में अब यह कहा जा रहा है कि भाजपा को जीत की लत लग चुकी है। यह चरित्र कुछ महत्वपूर्ण वजहों से संभव हुआ है। इनमें सबसे अव्वल यह है कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की नुमाइंदगी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करते हैं, जिन्हें गंभीर, भ्रष्टाचार-मुक्त, मेहनती और पारदर्शी नेता के रूप में देखा जाता है। हर तरह के लोगों (युवा, महिला, आर्थिक रूप से पिछड़े और अन्य) के साथ उनका जबरदस्त संपर्क और सीधा संवाद सार्वजनिक जीवन में उनके व्यापक अनुभव और मुद्दों के प्रति समाधान-केंद्रित रवैये की उपज है। विदेश नीति से लेकर घरेलू मसलों तक वे कभी भी झटके में कोई प्रतिक्रिया नहीं देते हैं और अस्थायी नाकामियों से कभी प्रभावित नहीं होते हैं। इसके अलावा, भाजपा के पास कुछ शानदार रणनीतिकार भी हैं। शुरुआत गृहमंत्री अमित शाह से होती है और यह फेहरिस्त पार्टी अध्यक्ष से लेकर अलग-अलग स्तरों के पदाधिकारियों तक जाती है। इसकी ताकत से पार्टी बूथ स्तर तक मतदाताओं के पास पहुंच पाती है। बीते वर्षों के दौरान भाजपा ने अंतिम आदमी तक पहुंचने की अपनी मूल विचारधारा को सरकार की सामाजिक योजनाओं के साथ एकमेक करने का काम किया है। बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ योजना, ग्रामीण बाजार, गरीबों के लिए बैंक खाते इनमें से कुछ एक हैं।

डरा रहे अपराध के आंकड़े

क्या गांव क्या शहर, क्या महिला अपराध, क्या बाल अपराध, क्या भाजपा की सरकार और क्या कांग्रेस की सरकार... हर जगह, हर क्षेत्र में, हर पार्टी के शासन में अपराध का ग्राफ बढ़ता ही दिखाई दे रहा है। एनसीआरबी रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2021 की तुलना में साल 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, बच्चों के खिलाफ अपराध, साइबर क्राइम और राज्य के खिलाफ (यानी सरकार के खिलाफ) अपराधों में बढ़ोतरी हुई है। क्राइम की ये सालाना रिपोर्ट और एडीएसआई यानी एक्सीडेंटल डेथ्स एंड सुसाइड रिपोर्ट समाज और प्रशासन दोनों की कलई खोलते नजर आ रहे हैं। भारत में हर घंटे तीन से अधिक लोगों की हत्या हो रही है।

क्राइम इन इंडिया-2022 शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले साल भारत में 2022 में कुल 28,522 हत्या के मामले दर्ज किए गए हैं जिससे स्पष्ट है कि हर दिन करीब 78 लोगों की हत्या हुई है। पूरी रिपोर्ट में सुकून वाली बात यह है कि यह आंकड़ा पिछले दो सालों से थोड़ी गिरावट दर्ज दिखा रहा है। सबसे ज्यादा एफआईआर उप्र में दर्ज है तो राहत यह भी है कि महिलाओं के प्रति हुए अपराध में दोषियों को दंड दिलाने में भी उप्र ही अव्वल राज्य है। यह रिपोर्ट समाज के लिए भी आईने का काम करती है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार शादी के लिए अपहरण की घटनाएं बढ़ रही हैं। बीते वर्ष 9,598 मामले दर्ज किए गए हैं और आबादी के हिसाब से बिहार में इसकी दर सबसे ज्यादा है। उसके बाद उप्र का नंबर आता है। इस तरह के विवाह को पकड़ुवा विवाह कहते हैं जिसमें कमाऊ पूत को जबरदस्ती उठाकर हथियार के दम पर उसकी अपने परिवार की लड़की से शादी करा दी जाती है और कुछ दिन बंधक बनाकर रखते हैं ताकि उनके बीच संबंध स्थापित हो जाएं और कतिपय कारणों से लड़का लड़की को छोड़ नहीं पाए।

एक तरफा प्रेम प्रसंग के मामलों में लड़कियों के भी अपहरण होते हैं और ऐसे ही जबरन विवाह किए जाते हैं पर समाज के तौर पर यह देखने की जरूरत है कि जबरदस्ती की ऐसी शादियों का हश्र क्या होता होगा या क्या हो सकता है? अभी हफ्ते भर पहले ही पटना न्यायालय ने एक ऐसे ही विवाह की मान्यता 7 साल बाद रद्द कर दी है। ऐसे ही आंकड़ें बताते हैं कि प्रेम प्रसंग में की गई हत्याएं भारत में हत्या के कारणों में तीसरे नंबर पर आती हैं। इसमें ऑनर किलिंग, एकतरफा प्यार, विवाहोत्तर संबंध प्रमुख कारण हैं। परंतु प्रेम जैसी विशुद्ध भावना जिसे हम ईश्वरीय अनुभूति मानते हैं वहां हत्या जैसे जघन्य अपराध का शामिल होना सभ्य समाज के काले पक्ष को उजागर करता है। बच्चों ने अपनी पसंद से विवाह कर लिया तो माता-पिता उन्हें मारने में नहीं हिचकिचाते, तो कहीं माता-पिता विवाह में रोड़ा बने तो कलियुगी संतान उनको कांटा मान रास्ते से हटाने में हिचकिचाते नहीं हैं। प्रेम में माता-पिता का दंभ बच्चों को मार देता है और बच्चों की जिद माता-पिता की जान ले लेती है।

लॉ एंड आर्डर की स्थिति को समझने के लिए दंगों के आंकड़ें बहुत सटीक जानकारी देते हैं। चुस्त दुरुस्त लॉ एंड आर्डर का हुंकार भरने वाली भाजपा सरकारें यहां असफल होती दिख रही हैं। भाजपा शासित महाराष्ट्र में 2022 में कुल 8,218 दंगे के मामले दर्ज किए गए, जिनसे 9,558 लोग प्रभावित हुए। वहीं 28 मामले सांप्रदायिक एवं धार्मिक और 75 मामले राजनीतिक हिंसा के दर्ज हुए, जबकि 25 अन्य मामले जाति संबंधित संघर्षों से जुड़े दर्ज हुए। दंगों के मामले में 4,736 केस के साथ बिहार दूसरे स्थान पर है जहां केंद्र में विपक्षी पार्टी कांग्रेस सरकार में शामिल है। जबकि 4,478 केस के साथ पुन: भाजपा शासित उप्र देशभर में तीसरे स्थान पर है। यह एक ऐसा ग्रे एरिया है जहां पक्ष-विपक्ष सब काले ही नजर आ रहे हैं।

एनसीआरबी की रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में देश में 13,000 से अधिक छात्रों ने आत्महत्या की। इनमें 18 वर्ष से कम उम्र के 10,000 से अधिक आत्महत्या के मामले शामिल हैं, जबकि 2,000 से अधिक छात्रों के लिए परीक्षा में असफलता आत्महत्या का कारण थी। छात्रों की आत्महत्या एक बेहद गंभीर विषय है। हमने कैरियर को हौव्वा बनाकर रखा है। कोचिंग संस्थानों के अलावा अभिभावक भी अपनी महत्वाकांक्षा का बोझ बच्चों पर डाल देते हैं। पूरे समय शिक्षित बनाने की कवायद चलती है जिसमें किताबी ज्ञान को रट्टा मरवाया जाता है तथा हाई स्कोर की अपेक्षा रखी जाती है। इसके दबाव में कई बार नौजवान या किशोर छात्र आत्महत्या का रास्ता अपना लेते हैं। ऐसे कई अपराध हैं जो समाज के तौर पर हम नागरिकों को असफल बताते हैं तो वहीं कई ऐसे अपराध हैं जो असफल प्रशासन को रेखांकित करते हैं। हम भले विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था बन गए हों मगर सुरक्षित देश बनने के मामले में बहुत पीछे हैं। जब तक समाज और सरकार इस बात पर ध्यान नहीं देगी रामराज्य की परिकल्पना अधूरी है।

● **राकेश ग्रोवर**

आकस्मिक मौतों की संख्या 4.3 लाख पर पहुंची

भारत में आकस्मिक मौतों की संख्या पिछले पांच वर्षों के रिकॉर्ड को तोड़कर 4.3 लाख पर पहुंच गई है। आकस्मिक मौतों की दो श्रेणी है- प्राकृतिक आपदा में बिजली गिरने, गर्मी-धूप, बाढ़, भूस्खलन आदि से होने वाली मौतें, वहीं अन्य कारणों से होने वाली मौतों में यातायात दुर्घटनाएं, जानवरों द्वारा मौत, नकली शराब का सेवन और फैक्टरी में होने वाली दुर्घटनाओं को शामिल किया गया है। 2022 में अचानक होने वाली मौतों की संख्या में 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इन मौतों में लगभग 57 प्रतिशत हार्ट अटैक के कारण हुई थीं। आकस्मिक मौतें जिनमें हार्ट अटैक और ब्रेन हैमरेज शामिल हैं, कोविड के बाद से बहुत बढ़ गई हैं। मगर अभी तक स्वास्थ्य विभाग ने ऐसी मौतों के वैक्सीन के साथ किसी भी संबंध से इनकार ही किया है। तथापि स्वास्थ्य मंत्री ने ग्रसित लोगों को सलाह दी है कि ऐसे लोग एक्सरसाइज और वर्कआउट करते समय ज्यादा परिश्रम न करें और कुछ समय के लिए ज्यादा मेहनत वाला काम भी न करें। एनसीआरबी रिपोर्ट के अनुसार 4.3 लाख में से 8060 मृत्यु प्राकृतिक आपदा के कारण हुई हैं बाकी अन्य कारणों से दर्ज की गई हैं।

रुक नहीं रहा वन्य प्राणियों का शिकार

बिना वाइल्ड लाइफ क्लीयरेंस के हो रहे विकास कार्य

एक तरफ आम जनता के खिलाफ वन विभाग कड़े और सख्त कानून के साथ पेश आता है और दूसरी तरफ रिजर्व फॉरेस्ट और वनभूमि पर होने वाले निर्माण कार्यों में लापरवाही बरतता है। इसी वजह से हर साल दर्जनों वन्य प्राणी जहां हादसों का शिकार हो रहे हैं, वहीं हजारों पेड़ काटे गए हैं। इसका खुलासा आरटीआई के जरिए हुआ है, जिससे पता चला है कि पिछले 10 सालों में वनक्षेत्र में होने वाले निर्माण कार्यों के लिए जो वाइल्ड लाइफ क्लीयरेंस दी गई है, उसका वन विभाग के पास कोई रिकॉर्ड नहीं है। हालत ये है कि अब वन विभाग ने सभी टाइगर रिजर्व और सेंचुरी के अलावा रिजर्व फॉरेस्ट को नोटिस भेजकर जवाब मांगा है। वहीं दूसरी तरफ वाइल्ड लाइफ एक्टिविस्ट वनविभाग के लापरवाह रवैये के खिलाफ भारत सरकार को शिकायत करने के साथ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने की तैयारी कर रहे हैं।

एक तरफ जहां सरकार और अन्य कई संस्थान विलुप्त होते जानवरों को बचाने में लगे हैं तो वहीं दूसरी ओर शिकारी अपने शौक के चलते जानवरों का शिकार करने से बाज नहीं आ रहे हैं। आए दिन जंगली जानवरों के शिकार किए जाने की खबरें सामने आ रही हैं कई केसों में पुलिस को आरोपी पकड़ने में सफलता नहीं मिलती लेकिन फिर भी लगातार की जा रही कोशिशों से पुलिस सफल भी होती है। विगत दिनों पुलिस ने एक ऐसे ही केस में सफलता हासिल की है। पुलिस ने 10 शिकारियों को गिरफ्तार किया है। जिन्होंने एक चीतल का शिकार किया था। फिर उसे पका रहे थे।

जानकारी के अनुसार उमरिया वन मंडल के परिक्षेत्र घुनघुटी के कक्ष क्रमांक 225 में आरोपियों ने चीतल का शिकार किया था। पुलिस को इस बात की सूचना जैसे ही मिली पुलिस ने खोज शुरू कर दी थी। पुलिस द्वारा की गई इस खोज में उन्हें सफतला भी हासिल हुई और उन्होंने शिकार के साथ 10 शिकारियों को भी गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस को आरोपियों के पास से बंदूक सहित कई अन्य औजार भी बरामद हुए हैं। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्त में ले लिया है। इन सभी शिकारियों ने बंदूक से चीलत का शिकार किया था। चीतल का शिकार कर उसे खाने के लिए पका रहे थे। तभी पुलिस ने दबिश देकर आरोपियों को रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। आपको बता दें कि इसी तरह फरवरी माह में भी चीतल का शिकार किया गया था। घटना सामान्य वन मंडल के घुनघुटी परिक्षेत्र की है।

गौरतलब है कि प्रदेश में काले हिरणों को सहेजने की योजनाएं चलाई जा रही हैं। इसी प्रदेश के अशोकनगर में हजारों की संख्या में काले हिरण विचरण करते हुए नजर आ रहे हैं। लेकिन इनको सहेजने के लिए यहां का वन विभाग ध्यान नहीं दे रहा है। वन विभाग के अधिकारियों के साथ-साथ क्षेत्र के जनप्रतिनिधि भी इस मामले में निष्क्रिय दिखाई पड़ रहे हैं। इन हिरणों के खेतों में खुलेआम घूमने से किसानों की फसलों को नुकसान तो है ही साथ ही ये हिरण शिकारियों का भी आसानी से शिकार बन रहे हैं। अशोकनगर जिले में हजारों की संख्या में काले हिरण पाए जाते हैं। ये हिरण किसानों के खेतों में सैकड़ों की संख्या में झुंड के झुंड बनाकर घूमते हैं जिससे न केवल किसानों बल्कि फसलों को भी नुकसान पहुंच रहा है। ये हिरण शिकारियों के लिए आसान शिकार बन रहे हैं जबकि इस तरह के हिरणों को विलुप्त प्रजाति में रखा गया है। ऐसी विलुप्त होती प्रजाति के हिरणों को इस तरह खेतों में खुलेआम घूमते देखने के बाद बड़ा सवाल यह खड़ा होता है कि आखिर इनको संरक्षित करने के लिए कोई कदम क्यों नहीं उठाए जा रहे हैं। फिलहाल वन विभाग के जिम्मेदार इनको जल्द अभ्यारण्य बनाकर संरक्षित करने की बात कहते नजर आ रहे हैं। अब देखना होगा कि वन विभाग के जिम्मेदार अधिकारी कब तक इस विलुप्त प्रजाति को संरक्षित करने के लिए कोई प्लान तैयार करते हैं?

टाइगर स्टेट मप्र में अब टाइगर की सुरक्षा पर सवाल खड़े हो रहे हैं। पन्ना टाइगर रिजर्व के जंगल में बाघिन पी-243 के गले में तार का फंदा लटका हुआ मिला वीडियो वायरल हो रहा है। लोगों का मानना है कि ये शिकारियों द्वारा शिकार की नियत से फंदा लगाया गया है। इसका पता तब चला जब जंगल में घूमने आए पर्यटकों ने वीडियो बनाया और वीडियो वायरल हो गया। वीडियो वायरल होने के बाद पन्ना टाइगर रिजर्व पर सवाल खड़े हो रहे हैं। सवाल है कि आखिर इतनी सुरक्षा के बावजूद शिकारी खुलेआम बाघिन के शिकार का प्रयास कैसे कर सकते हैं। बताते चलें कि कुछ महीने पहले पवई तहसील में शिकारियों ने शिकार के चक्कर में तेंदुए को फंसा लिया था। हालांकि गांव वालों की मदद से उसकी जान बच गई थी। इसी प्रकार शिकारियों ने कुछ दिन पहले विश्रगंज में एक सांभर का शिकार किया था। ग्रामीणों के आने पर वे भाग गए थे। इन सभी मामलों में अभी तक टाइगर रिजर्व के जिम्मेदार किसी आरोपी को पकड़ नहीं पाए हैं। इससे ऐसा लगता है कि शिकारियों के हौंसले पन्ना जिले में बुलंद होते जा रहे हैं। दूसरी तरफ टाइगर रिजर्व के आसपास रहने वाले गावों में भी डर का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि कहीं पर भी बाउंड्री नहीं बनाई गई है और न ही तार से फेंसिंग ही की गई है। उनका कहना है हमारी जान खतरे में है कई बार शिकायत करने के बाद भी बात को अनसुना किया जा रहा है।

मप्र में देश में सर्वाधिक वनक्षेत्र होने के साथ टाइगर स्टेट, लेपर्ड स्टेट और चीता स्टेट के अलावा कई वन्यजीवों के संरक्षण के लिए जाना जाता है, ऐसी स्थिति में मप्र के वनक्षेत्र जिनमें टाइगर रिजर्व, अभयारण्य, वनमंडल के वनक्षेत्र में रेललाइन, सड़क, बांध, पावर प्रोजेक्ट जैसी निर्माण परियोजनाओं के लिए वनविभाग से क्लीयरेंस लेना होता है, जो शर्तों के आधार पर दिया जाता है, तब जाकर वाइल्ड लाइफ क्लीयरेंस जारी होता है। क्लीयरेंस की शर्तों का प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्य प्राणी मुख्यालय और मैदानी अमलों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण किया जाता है और कमी पाए जाने पर कार्रवाई की जाती है, इसके बाद वनविभाग सर्टिफिकेट जारी करता है, जिसे भारत सरकार के वन और पर्यावरण मंत्रालय को भी भेजा जाता है। प्रदेश में सतपुड़ा, कान्हा, बांधवगढ़, पेंच और संजय दुबरी टाइगर रिजर्व हैं। वन्य जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो के पत्र के बाद मप्र में वन विभाग का अमला अलर्ट हो गया है।

● **प्रवीण सक्सेना**

फेल हो गई कांग्रेस की रणनीति

मप्र विधानसभा चुनाव 2023 के परिणाम ने बुंदेलखंड की 26 सीटों में से भाजपा की झोली में 21 सीटें डाल दीं। जहां दमोह-पन्ना जिलों में कांग्रेस सहित सागर संभाग में सपा-बसपा सहित अन्य दलों का भी खाता नहीं खुल सका। बता दें कि बीते विधानसभा चुनाव 2018 में दमोह जिले की पथरिया से बसपा की रामबाई तो छतरपुर जिले की बिजावर सीट से सपा प्रत्याशी राजेश शुक्ला सदन पहुंचे थे। बुंदेलखंड में सागर संभाग के 6 जिले हैं। इनमें सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़ और निवाड़ी जिला शामिल है। सागर में सबसे ज्यादा 8 विधानसभा सीट तो निवाड़ी जिले में सबसे कम 2 विधानसभा सीट शामिल हैं। कुल 26 सीटों में से भाजपा 21 सीटें जीतने में कामयाब रही। बीते 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा महज 15 सीट जीत सकी थी। कांग्रेस के खाते में 9 सीटें तो सपा-बसपा एक-एक सीट पर कब्जा जमाने में कामयाब रही थी, लेकिन इस दफा क्षेत्रीय पार्टियों का सफाया हो गया। बता दें कि छतरपुर, टीकमगढ़ की सीमा उप्र से सटी होने के कारण यहां सपा-बसपा का अच्छा खासा दखल रहा है।

छतरपुर जिले की बड़ामलहरा विधानसभा सीट को भाजपा की फायर ब्रांड लीडर व साध्वी उमा भारती का गढ़ माना जाता है। बुंदेलखंड में इस सीट पर चौंकाने वाला परिणाम सामने आया है। यहां से उमा भारती के समर्थक व विधायक प्रद्युम्न सिंह लोधी को भाजपा ने प्रत्याशी बनाया था, जबकि कांग्रेस ने साध्वी रामसिया को मैदान में उतारा था। परिणाम चौंकाने वाला रहा और उमा के इस गढ़ में कांग्रेस की साध्वी रामसिया भारती ने भाजपा को शिकस्त दी है। इसी प्रकार उमा भारती के भतीजे व पूर्व मंत्री राहुल लोधी टीकमगढ़ जिले के खरगापुर से बतौर भाजपा प्रत्याशी मैदान में थे। वे कांग्रेस प्रत्याशी चंदा सिंह गौर से चुनाव हार गए। इसी प्रकार उमा भारती के प्रभाव वाले इलाके टीकमगढ़ से भाजपा के निर्वतमान विधायक राकेश गिरी गोस्वामी कांग्रेस के यादवेंद्र सिंह से चुनाव हार गए। दमोह जिले में कुल 4 विधानसभा सीटें हैं। सभी पर भाजपा ने शानदार जीत दर्ज की है। दमोह विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी व वरिष्ठ नेता जयंत मलैया ने कांग्रेस के वर्तमान विधायक अजय टंडन को 51351 वोटों से हराया। पथरिया विधानसभा सीट से भाजपा के लखन पटेल ने कांग्रेस के राव ब्रजेंद्र सिंह को 18159 वोटों से हराया। जबेरा विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कांग्रेस के प्रताप सिंह लोधी को 5883 मतों से हराया। यहां 2018 में बसपा की रामबाई सिंह परिहार चुनाव जीती थीं। इसी प्रकार हटा विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी उमा खटीक ने कांग्रेस के प्रदीप खटीक को 57021 वोटों से हराया। उमा खटीक यहां नया चेहरा हैं।

भाजपा के 5 में से 4 मंत्री जीते, एक हारे

बुंदेलखंड में शिवराज कैबिनेट में 5 मंत्री थे, जिनमें से चार मंत्रियों ने न सिर्फ अपनी सीट बचाई बल्कि शानदार जीत दर्ज की है। वहीं चुनाव के चंद महीनों पहले मंत्री बनाए गए व उमा भारती के भतीजे खरगापुर विधायक राहुल सिंह लोधी चुनाव हार गए हैं। जबकि पन्ना से बृजेंद्र प्रताप सिंह, सागर के खुरई से भूपेंद्र सिंह, रहली से गोपाल भार्गव और सुरखी से गोविंद राजपूत चुनाव जीते हैं। इनके अलावा भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री जयंत मलैया भी दमोह सीट से जीत गए हैं।

मप्र विधानसभा चुनाव के परिणाम के बाद एक बार फिर भाजपा की नई सरकार के गठन की कवायद तेज हो गई है। कमलनाथ सरकार गिरने के बाद बनी शिवराज सरकार में बुंदेलखंड के संभागीय मुख्यालय सागर जिले से तीन कैबिनेट मंत्री बनाए गए थे। जिनके पास भारी भरकम विभाग भी थे। लेकिन दोबारा सरकार बनने के बाद सागर से दावेदारों की संख्या बढ़ गई है। नई सरकार में किसको मौका मिलता है, ये अब चर्चा का विषय बन गया है। एक तरफ पिछली सरकार में रहे तीन कद्दावर पूर्व कैबिनेट मंत्री हैं तो दूसरी तरफ लगातार 4-4 बार चुनाव जीते दो विधायक हैं। ऐसे में सागर जिले में भाजपा की 7 सीटों में से 5 विधायक मंत्री पद के दावेदार हैं। जिनमें गोपाल भार्गव, भूपेंद्र सिंह और गोविंद सिंह राजपूत के नाम आते हैं और जिन विधायकों ने जीत का चौका मारा है उनमें शैलेंद्र जैन और प्रदीप लारिया का नाम आता है। शैलेंद्र जैन जहां अल्पसंख्यक वर्ग तो प्रदीप लारिया अनुसूचित जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक तरफ कद्दावर और वजनदार नेताओं की जोर आजमाइश है तो दूसरी तरफ लगातार चार जीत हासिल करने वाले विधायक दावेदारी पेश कर रहे हैं। भाजपा की नई नवेली सरकार में सागर से किसकी किस्मत खुलती है ये दिल्ली में तय होगा। कमलनाथ सरकार में नेता प्रतिपक्ष रहे गोपाल भार्गव इस बार लगातार 9वीं बार विधायक चुने गए हैं। गोपाल भार्गव के कद की बात करें तो 2003 से 2018 तक भाजपा से जो भी मुख्यमंत्री रहे, उनकी सरकार में गोपाल भार्गव कैबिनेट मंत्री रहे और इसके बाद नेता प्रतिपक्ष बने। 2020 में कमलनाथ सरकार गिरने के बाद फिर पीडब्ल्यूडी मंत्री बने। 2023 में गोपाल भार्गव लगातार 9वीं बार चुनाव लड़े और जीते। गोपाल भार्गव मंत्री पद के लिए भी दावा कर रहे हैं। गोपाल भार्गव के पास लगातार 20 साल कैबिनेट मंत्री का दर्जा रहा है।

शिवराज सिंह के करीबी भूपेंद्र सिंह की बात करें तो भूपेंद्र सिंह पहली बार 2013 में मंत्री बने, फिर कमलनाथ सरकार गिरने के बाद 2020 में मंत्री बने। भूपेंद्र सिंह साढ़े 8 साल मंत्री रहे हैं। एक बार फिर 2023 में जीतकर मंत्री पद के दावेदार हैं। बात गोविंद सिंह राजपूत की करें तो ज्योतिरादित्य सिंधिया के करीबी हैं। गोविंद सिंह राजपूत कमलनाथ सरकार में परिवहन एवं राजस्व मंत्री थे तो बगावत के बाद 2020 में शिवराज सरकार में भी परिवहन एवं राजस्व मंत्री रहे। गोविंद सिंह राजपूत कमलनाथ सरकार और शिवराज सरकार में 5 साल मंत्री रहे हैं।

सागर जिले की 8 सीटों में से भाजपा ने 7 सीटों पर कब्जा किया है। 2023 के चुनाव में दो विधायक और मंत्री पद के दावेदार हो गए हैं। इनमें सागर से शैलेंद्र जैन चौथी बार विधायक बने हैं और अल्पसंख्यक वर्ग से आते हैं। प्रदीप लारिया की बात करें तो नरयावली से प्रदीप लारिया चौथी बार विधायक बने हैं और अनुसूचित जाति वर्ग से आते हैं। अंदाजा लगाया जा रहा है कि नए दावेदारों में किसी एक को मंत्री पद मिल सकता है।

● **सिद्धार्थ पांडे**

भाजपा ने सोशल इंजीनियरिंग से बदली राजनीतिक परंपरा

विष्णु, मोहन और भजन... के सिर सजा सत्ता का ताज

भाजपा ने मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में नए चेहरों को मौका देकर मिशन 2024 के लिए बड़ा दांव खेला है। मप्र में डॉ. मोहन यादव, छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय और राजस्थान में भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री चुना गया है। तीनों नए चेहरे हैं और अलग-अलग जातियों से आते हैं। मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को बड़ी उम्मीदों के साथ मुख्यमंत्री पद की कुर्सी सौंपी गई है। उनके सामने चुनौतियां भी बड़ी हैं। अब देखना यह है कि वे इन चुनौतियों से मप्र में विकास की गंगा किस प्रकार बहाते हैं।

● राजेंद्र आगाल

भाजपा और संघ की राजनीति का सबसे मजबूत आधार है उनकी प्रायोगिक रणनीति। इस रणनीति का प्रभाव ही रहा कि 5 राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में बड़ी जीत दर्ज की। इस जीत के बाद भाजपा ने मिशन 2024 के मद्देनजर एक ऐसी सोशल इंजीनियरिंग की है, जिससे न केवल इंडिया गठबंधन के सारे हथकंड़े पस्त पड़ गए हैं, वहीं भाजपा में भी एक नई परंपरा को जन्म दे दिया है। मप्र में मोहन यादव, छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय और राजस्थान में भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री चुना गया है। तीनों नए चेहरे हैं और अलग-अलग जातियों से आते हैं। भाजपा को तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों में मिली सफलता के बाद उसने सभी जगहों पर नए चेहरों को मौका दिया है। बताया जा रहा है कि भाजपा ने इसके जरिए दूसरी पंक्ति के नेताओं को आगे लाने का सियासी प्रयोग किया है। इसके साथ भाजपा ने एक मजबूत प्रतीकात्मक आधार भी तैयार किया है और नई सोशल इंजीनियरिंग गढ़कर नया संदेश देने की कोशिश की है।

भाजपा ने अपनी इस सोशल इंजीनियरिंग से राजनीति की पुरानी परंपरा को बदल दिया है। भाजपा आलाकमान ने बता दिया है कि सत्ता के शिखर पर पहुंचने के लिए परिवारवाद, वंशवाद, मजबूत बैकग्राउंड या राजनीतिक संरक्षण की जरूरत नहीं है। जो संगठन और जनता के लिए उपयुक्त होगा, उसे सत्ता का ताज आसानी से मिल जाएगा।

भाजपा की रणनीति

भाजपा को तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों में मिली सफलता के बाद उसने सभी जगहों पर नए चेहरों को मौका दिया है। बताया जा रहा है कि भाजपा ने इसके जरिए दूसरी पंक्ति के नेताओं को आगे लाने का सियासी प्रयोग किया है। इसके साथ भाजपा ने एक मजबूत प्रतीकात्मक आधार भी तैयार किया है और नई सोशल इंजीनियरिंग गढ़कर नया संदेश देने की कोशिश की है। सियासी जानकारों की मानें तो मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के तौर पर आदिवासी, दलित, ब्राह्मण और राजपूत चेहरों को उतारकर भाजपा ने एक संदेश दिया। पार्टी ने इसके साथ ही तीनों राज्यों में नए नेतृत्व को लेकर भी नई पॉलिटिकल पिच तैयार कर सबको चौंका दिया। जानकार बताते हैं कि संघ और भाजपा आलाकमान ने इन फैसलों के पीछे कई संदेश दिए हैं। पार्टी से बड़ा कोई नहीं है। वहीं मातृ संगठन आरएसएस भी उतना ही ताकतवर है, वो जिसे चाहे फर्श से अर्श तक पहुंचा सकता है। आने वाले सालों में भाजपा की दूसरी और नई लीडरशिप तैयार हो गई है। इसका असर आगामी लोकसभा चुनाव में भी देखने को मिल सकता है। सियासी जानकार कहते हैं कि ब्राह्मणों और बनियों की पार्टी कही जाने वाली भाजपा ने तीन राज्यों में शीर्ष नेतृत्व के चयन में नए चेहरों को लाकर न सिर्फ अपनी पुरानी छवि से बाहर आने की कोशिश की है, बल्कि पिछड़े, दलित-एसटी वर्ग को लुभाने और विपक्ष की जातीय जनगणना की मांग की धार को कुंद करने का प्रयास किया है। इसके साथ ही भाजपा ने नए और युवा चेहरों को शीर्ष पदों पर बैठाकर पार्टी के नए कैडरों को भी साधने की कोशिश की है।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि यह बदलाव सिर्फ भाजपा का अकेले का फैसला नहीं है। आरएसएस के बड़े नेता मंथन करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि अब दूसरी पंक्ति के नेताओं को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। इसकी शुरुआत उप्र से हो गई थी। 2014 में वरिष्ठ नेता मुरली मनोहर जोशी को कानपुर से चुनाव लड़वाया गया। 2019 में उनकी जगह किसी और को मौका दिया गया। उप्र की राजनीति में स्थापित नेता कलराज मिश्र हों, केशरी नाथ त्रिपाठी, ओमप्रकाश सिंह हों, इनकी जगह दूसरे नेताओं को मौका दिया गया। कुछ नेताओं को राज्यपाल बनाकर सम्मानित भी किया गया। इनकी जगह दूसरी पंक्ति के नेताओं को मौका दिया गया। योगी आदित्यनाथ, केशव मौर्य, दिनेश शर्मा, स्वतंत्र देव और ब्रजेश पाठक जैसे नेताओं को 50 से 60 साल की उम्र में आगे लाया गया।

मप्र में विकासात्मक कार्यक्रमों पर पीएचडीधारी को बनाया सीएम

मप्र में भाजपा ने उस विधायक को मुख्यमंत्री बनाया है, जिन्होंने मप्र में विकासात्मक कार्यक्रमों पर पीएचडी की है। यह इस बात का भी संकेत है कि वर्तमान मुख्यमंत्री मोहन यादव का पूरा फोकस प्रदेश के विकास पर रहेगा। मोहन यादव संगठन से जुड़े जमीनी नेता हैं। मोहन यादव ने एबीवीपी से छात्र राजनीति से सियासी सफर शुरू किया और 2013 में पहली बार विधायक बने। 2018 में दूसरी बार और 2023 में तीसरी बार एमएलए बने। मोहन यादव को चार दशकों का सियासी अनुभव है। उनकी पार्टी के अंदर अच्छी पैठ है। माना जा रहा है कि मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने यादवों खासकर उप्र-बिहार के यादवों को संदेश दे दिया है कि अगर भाजपा के साथ यादव आएंगे, तो उनको जरूर मौके मिलेंगे। उप्र में समाजवादी पार्टी और बिहार में राष्ट्रीय जनता दल के चलते यादवों का वोट भाजपा को नहीं मिलता रहा है। उप्र और बिहार दोनों राज्यों में करीब 10 से 12 प्रतिशत की आबादी यादवों की है। हरियाणा में भी यादव वोटर्स अच्छी संख्या में हैं। यादव वोटर्स और ओबीसी वर्ग को आकर्षित करने के लिए भाजपा ने मोहन यादव पर भरोसा जताया है। 11 दिसंबर को भाजपा ने मप्र में मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री के नामों की घोषणा की। भाजपा ने ओबीसी चेहरे शिवराज सिंह चौहान को दूसरे ओबीसी चेहरे डॉ. मोहन यादव से रिप्लेस किया। पार्टी ने दलित नेता जगदीश देवड़ा को उपमुख्यमंत्री बनाया, तो ब्राह्मण चेहरे राजेंद्र शुक्ला को भी उपमुख्यमंत्री बनाया। यही नहीं, भाजपा ने केंद्रीय कैबिनेट मंत्री रहे नरेंद्र सिंह तोमर को विधानसभा अध्यक्ष बनाया। इस तरह से एक बार फिर से भाजपा ने अपने सोशल इंजीनियरिंग के फॉर्मूले से विपक्षियों को चौंका दिया। चूंकि ओबीसी और खासकर यादव-मुस्लिम गठजोड़ की राजनीति करने वाली सपा के सामने अब भाजपा का सोशल इंजीनियरिंग वाला हिंदुत्व खड़ा हो गया है, ऐसे में उनकी बोलती बंद हो गई है। मप्र में जगदीश देवड़ा और राजेंद्र शुक्ला को उपमुख्यमंत्री चुना गया है। राजेंद्र शुक्ला के जरिए सूबे के ब्राह्मणों को साधने की कोशिश की गई है। वहीं जगदीश देवड़ा के सहारे पार्टी ने दलित समुदाय को साधा है। राज्य में करीब 51 फीसदी ओबीसी आबादी है। ब्राह्मण आबादी करीब पांच से छह फीसदी और दलित आबादी करीब 17 फीसदी है।

भाजपा में कार्यकर्ताओं को मौका

संघ और भाजपा की रणनीति के अनुसार, ये लोग नए लोगों को मौका देंगे। किसी को क्षत्रप बनने का मौका नहीं देंगे। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता आनंद दुबे का कहना है कि भाजपा एक कैडर बेस पार्टी है। यहां पर हर छोटे-बड़े कार्यकर्ता को अवसर मिलता है। पार्टी की असल पूंजी कार्यकर्ता होते हैं। इसका भाजपा हमेशा ख्याल रखती है। युवा जोश और अनुभव के मिश्रण का कैसे इस्तेमाल हो यह पार्टी को पता है। भाजपा ज्यादा से ज्यादा कार्यकर्ताओं को अवसर देने में सबसे आगे है। भाजपा ही राजनीति में सोशल इंजीनियरिंग लेकर आई थी। पहले भाजपा ने गोविंदाचार्य, उमा भारती, राम प्रकाश गुप्ता जैसे नामों को आगे बढ़ाया और अब इस बार तीन राज्यों के चुनावी नतीजों के बाद सभी राज्यों में मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री पदों के लिए ऐसे नाम सामने रख दिए हैं, जिनका विरोध करते विपक्षी पार्टियों को कुछ सूझ ही नहीं रहा है। भाजपा ने जनजातीय, ओबीसी और ब्राह्मण मुख्यमंत्री दिए, तो दलित, राजपूत, ब्राह्मण, ओबीसी वर्ग के नेताओं को उप-मुख्यमंत्री बनाकर फिर से अपनी सोशल इंजीनियरिंग वाली छाप छोड़ दी है। इसका असर सोशल मीडिया पर

सुरेश सोनी ने कतरवाए शिवराज के पर

मप्र ही नहीं बल्कि देश की राजनीति में भाजपा की जीत, डॉ. मोहन यादव के मुख्यमंत्री बनने से अधिक चर्चा शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री न बनने की है। हर किसी के मन में एक ही सवाल है कि आखिरकार शिवराज का पत्ता कैसे कटा? जानकारों का कहना है कि प्रदेश में विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू होने के साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य और पूर्व सह सरकार्यवाह सुरेश सोनी ने शिवराज को हाशिए पर रखने की चौसर बिछानी शुरू कर दी। इसके तहत पहले अमित शाह को प्रदेश की चुनावी कमान दिलवाकर सक्रिय किया गया और बाद में डॉ. मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनवाया गया। जानकारों का कहना है कि जिस तरह 2013 में सुरेश सोनी को मप्र की राजनीति से अलग किया गया था, उसी तर्ज पर 10 साल बाद सोनी ने शिवराज को हाशिए पर लाकर खड़ा करवा दिया है। गौरतलब है कि 2013 के विधानसभा चुनाव में भारी बहुमत हासिल कर जब शिवराज सिंह चौहान तीसरी बार मुख्यमंत्री बने, तब तक सुरेश सोनी से भाजपा और संघ के बीच समन्वय की जवाबदारी वापस लेकर डॉ. कृष्ण गोपाल को सौंप दी थी। उस समय कथित रूप से कहा गया कि मुख्यमंत्री के निकटवर्ती अधिकारियों ने सुरेश सोनी के खिलाफ कुछ जानकारियां मीडिया में लीक करके उन्हें विवादित बनाने की कोशिश की। इसके बाद सुरेश सोनी ने मप्र की राजनीति में दखल देना बंद कर दिया। सूत्रों का कहना है कि तकरीबन 10 साल बाद सुरेश सोनी ने न सिर्फ परिवर्तन की पृष्ठभूमि तैयार की बल्कि इसकी कार्य योजना भी बनाई। जिसे सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने मंजूरी दी। सोनी की योजना के अनुसार केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मप्र के चुनाव की कमान जुलाई में अपने हाथों में ले ली। इसके बाद भूपेंद्र यादव और अश्विनी वैष्णव को भेजकर चुनाव अभियान पर पूरा नियंत्रण कर लिया गया। अमित शाह को भेजने का उद्देश्य ही यह था कि चुनाव पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान हावी ना हो सकें। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के कमान संभालने के बाद सभी को लगने लगा था कि मुख्यमंत्री के रूप में शिवराज सिंह चौहान शायद ही वापसी कर पाएंगे। ऐसा हुआ भी।

भी दिख रहा है। राजस्थान में दशकों बाद ब्राह्मण मुख्यमंत्री बनाकर, मप्र में यादव मुख्यमंत्री बनाकर और छत्तीसगढ़ जैसे जनजातीय बहुल राज्य में जनजातीय व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाने के बाद सोशल मीडिया तक में भाजपा का समर्थन बढ़ा है। कई ऐसे सोशल मीडिया हैंडल, जो अब तक ओबीसी हितैषी और इंडिया गठबंधन के हितैषी बने नजर आते थे, वो भी भाजपा के इन मास्टरस्ट्रोक्स के चलते खामोश हो गए हैं। आइए, बताते हैं कि भाजपा ने तीनों राज्यों में किन-किन लोगों को कमान सौंपी है।

मिशन 2024 की जमावट

तीन राज्यों मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में शानदार जीत दर्ज करने के बाद अब भाजपा ने 2024 के लोकसभा चुनाव की तैयारियां तेज कर दी हैं। माना जा रहा है कि मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में नए चेहरों को मौका देकर भाजपा ने मिशन 2024 के लिए बड़ा दांव खेला है। मोहन यादव को मप्र, छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय और भजनलाल शर्मा को राजस्थान का मुख्यमंत्री चुना गया है। तीनों नए चेहरे हैं और अलग-अलग जातियों से आते हैं। विष्णुदेव साय आदिवासी हैं। वहीं, मोहन यादव ओबीसी कैटगरी से हैं, जबकि राजस्थान में भजनलाल शर्मा के जरिए एक ब्राह्मण को मौका दिया गया है। तीनों राज्यों में दो-दो उपमुख्यमंत्री भी होंगे। तीनों राज्यों में पार्टी ने सभी जाति-वर्गों का संतुलन बनाते हुए चेहरों को फाइनल किया है। भाजपा ने सभी सियासी समीकरण को साधने का प्रयास किया है। राजस्थान में महिला सुरक्षा बेहद अहम मुद्दा था। इसे ध्यान में रखते हुए दीया

मप्र की राजनीति का केंद्र बना मालवा

हिंदी पट्टी के तीन राज्यों में से एक ओर लोकसभा सीटों के लिहाज से भी तीसरे बड़े राज्य मप्र में दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों भाजपा और कांग्रेस में पीढ़ी परिवर्तन की सियासत अब दिलचस्प मोड़ में है। मप्र में विधानसभा चुनाव में बंपर जीत के बाद सत्तारूढ़ भाजपा अब पूरे घर को बदल डालने की तर्ज पर काम रही है तो इसके जवाब में कांग्रेस ने भी ताबड़तोड़ अपने सभी मुख्य सिपाहसालार बदल दिए हैं। मोटे तौर पर बदलाव का यह फार्मूला फ्रेश चेहरों को आगे लाने, जातीय व क्षेत्रीय समीकरण साधने और आने वाले कम से कम एक दशक राजनीति कर सकने वालों को कमान सौंपने की नीयत से लागू किया गया है। खास बात यह है कि दोनों ही पार्टियों ने इस बार राज्य के अपेक्षाकृत समृद्ध और प्रगत क्षेत्र मालवा अंचल को केंद्र में रखा है, जिसके बारे में कहा जाता है कि सत्ता का रास्ता इसी अंचल से होकर गुजरता है। मप्र की राजनीति में यह अभूतपूर्व संयोग है कि अब राज्य का मुख्यमंत्री, एक उपमुख्यमंत्री, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष भी मालवा अंचल से ही है। यानी मालवा अब प्रदेश की राजनीतिक महाभारत का नया कुरुक्षेत्र है। जो मालवा पर काबिज होगा, वह भोपाल में सत्तासीन होगा। मप्र में लोकसभा की 29 सीटें हैं। इनमें से 8 अकेले मालवा से हैं और इसी क्षेत्र में विधानसभा की 50 सीटें हैं। इनमें अगर निमाड़ को भी जोड़ लिया जाए तो ये संख्या लोकसभा की 10 और विधानसभा की 66 सीटें होती हैं। इस बार भाजपा ने 66 में से 48 सीटों पर जीत हासिल कर कांग्रेस को बहुत पीछे धकेल दिया है। भाजपा ने अपना नया मुख्यमंत्री जिन डॉ. मोहन यादव को बनाया है, वो मालवा के उज्जैन दक्षिण विधानसभा सीट से विधायक हैं और ओबीसी चेहरा हैं। जबकि उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा मालवा के ही मंदसौर जिले के मल्हारगढ़ सीट से विधायक हैं। इसके पीछे संदेश राज्य और राज्य से बाहर भी ओबीसी और आदिवासी समीकरण को साधना है। यही कारण है कि कांग्रेस में नेतृत्व का जो पीढ़ी परिवर्तन हुआ है, वह मालवा को ध्यान में रखकर ही हुआ है। इसमें जातिगत समीकरण भी साधा गया है। नए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ओबीसी से हैं तो उमंग सिंघार आदिवासी हैं। इस बदलाव के साथ ही कांग्रेस आलाकमान ने राज्य में कांग्रेस के दो पुराने दिग्गज चेहरों कमलनाथ और दिग्विजय सिंह को रिटायरमेंट का साफ संदेश दे दिया है, जबकि भाजपा में यह संदेश थोड़ा अलग ढंग से दिया गया है। अलबत्ता राज्य में भाजपा के कैलाश विजयवर्गीय, प्रहलाद पटेल जैसे मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार नेताओं को संदेश दिया गया है कि उन्हें मुख्यधारा से अभी बाहर नहीं किया गया है, यही काफी है।

कुमारी को उपमुख्यमंत्री बनाया गया है।

दरअसल, तीनों ही राज्यों में नए चेहरे को मौका देते हुए पार्टी ने मुख्यमंत्री बनाया है। वहीं पुराने और बड़े चेहरों को वीआरएस यानी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति दे दी है। इस बार वीआरएस का मतलब राजस्थान में वंसुधरा, छत्तीसगढ़ में रमन सिंह और मप्र में शिवराज हैं, जिन्हें पार्टी ने मौका न देते हुए नए चेहरों पर दांव लगाया है। जानकारों का कहना है कि खेमेबाजी या दांव-पेच करने वालों का पत्ता काटा गया है। जाति समीकरण को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री का चयन किया गया है। बड़े चेहरों की बजाय शांति से काम करने वालों को चुना गया। संघ से करीबी होने का फायदा भी मिला है। तीनों चेहरों पर गौर किया जाए, तो पता चलता है कि भाजपा ने संगठन से जुड़े पुराने कार्यकर्ताओं का चयन किया है। तीनों चेहरों ने भाजपा के साधारण से वर्कर से मुख्यमंत्री तक का सफर तय किया है। मतलब भाजपा ने इन चेहरों को चुनकर परिवारवाद वाली पार्टियों को भी सीधा संदेश दे दिया और 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए सभी जातियों को साधने का काम किया है।

भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाकर मोदी ने 2024 के समीकरण को साधा है। कारण, देश में सबसे ज्यादा ब्राह्मण राजस्थान में हैं। माना जा रहा है कि इसीलिए ही नरेंद्र मोदी ने पूरे देश में एक संदेश दिया है। राजस्थान में अब तक 15 बार मुख्यमंत्री बने हैं, जिनमें से सबसे ज्यादा यानी 6 बार मुख्यमंत्री के लिए ब्राह्मण नेता को कमान सौंपी गई है। देशभर में 5 प्रतिशत ब्राह्मण हैं। वहीं, राजस्थान में करीब 8 प्रतिशत ब्राह्मण आबादी है। ब्राह्मण को भाजपा का कोर वोटर माना जाता है। भाजपा किसी भी तरह से इस वोट बैंक को खोना नहीं चाहती। आने वाले लोकसभा चुनाव के मद्देनजर भाजपा ने राजस्थान और देशभर के ब्राह्मण वोटर्स को साधने के लिए पहली बार विधायक बने भजनलाल शर्मा पर भरोसा जताया है। राजस्थान के दोनों उपमुख्यमंत्री की बात करें तो भाजपा ने यहां भी जाति संतुलन बनाए रखा है। कारण एक उपमुख्यमंत्री राजघराने से आती हैं तो दूसरे दलित परिवार से आते हैं। दीया कुमारी का संबंध जयपुर के राजघराने से है। वह मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक मान सिंह के राजघराने से हैं। दीया कुमारी के जरिए पार्टी ने राजपूत समाज को साधने का काम किया है। मौजमाबाद तहसील के श्रीनिवासीपुरा के रहने वाले प्रेमचंद बैरवा दलित परिवार से आते हैं। दलित परिवार में जन्मे प्रेमचंद बैरवा जयपुर के दूदू सीट से भाजपा के विधायक हैं। इनके जरिए भाजपा ने दलित समुदाय को साधने की कोशिश की है। अगर बात छत्तीसगढ़ की करें, तो विष्णुदेव साय आदिवासी समाज से आते हैं। 4 बार सांसद, दो बार विधायक, केंद्रीय राज्य मंत्री और 3 बार प्रदेश अध्यक्ष रह चुके हैं। साय को मुख्यमंत्री बनाने के पीछे माना जा रहा है कि भाजपा आदिवासी गढ़ में अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखना चाहती है। कारण, इस बार के चुनाव में आदिवासी इलाकों से भाजपा को अच्छा-खासा वोट मिला है। वहीं, छत्तीसगढ़ में आदिवासी समाज की आबादी करीब 34 फीसदी है। इन्हें साधने के लिए भाजपा ने आदिवासी चेहरे पर भरोसा जताना बेहतर समझा है। लोकसभा चुनाव में कुछ ही महीने का समय बचा है और देश में अनुसूचित जनजाति यानी आदिवासियों की आबादी करीब 9 फीसदी है। ऐसे में सूबे की सत्ता तक पहुंचाने वाले इस वर्ग को भी भाजपा साधना चाहती है। इसके साथ ही भाजपा अन्य वर्गों को भी संदेश देना चाहती है कि पार्टी हर वर्ग के लोगों को मौका देती है। छत्तीसगढ़ में भी भाजपा ने दो उपमुख्यमंत्री का दांव चला है। यहां भी पार्टी ने जाति समीकरण को ध्यान में रखते हुए चेहरों का चुनाव किया है। यहां विजय शर्मा और अरुण साव को उपमुख्यमंत्री बनाया गया है। जातीय समीकरण के लिहाज से दोनों ही चेहरे महत्वपूर्ण हैं। अरुण साव साहू जाति से आते हैं और राज्य में साहू समाज और ओबीसी वर्ग की आबादी करीब 20 से 22 फीसदी है। इनका छत्तीसगढ़ की सियासत में खासा प्रभाव होता है। वहीं विजय शर्मा के जरिए ब्राह्मणों को साधा गया है।

कांग्रेस को ऐतबार तोड़ने का दंड

भाजपा की इतनी बड़ी जीत के पीछे क्या कोई अंडरकरंट था जो अधिकांश आंखों को धोखा दे गया? अगर था तो वह क्या था? ऐसे कई सवाल हैं, जो नतीजों के बाद हैरान कर रहे हैं। शायद कुछ अंदाजा 2018 के विधानसभा चुनाव के नतीजों से मिल सकता है। उस साल मप्र के मतदाताओं ने 15 वर्ष के लंबे अंतराल के बाद कांग्रेस पर एक बार फिर से ऐतबार जताया था और उसकी झोली में ठीकठाक सीटें डालकर सत्ता सौंप दी थी, लेकिन 15 महीने बाद अंदरूनी वजहों और तथाकथित ऑपरेशन कमल से कांग्रेस सत्ता से बेदखल हो गई और लोगों के ऐतबार को गहरा सदमा पंहुचा। सत्ता में शिवराज सिंह चौहान सरकार की एक बार फिर से वापसी हो गई। समय बीता और फिर विधानसभा चुनाव आ गया। इस बीच प्रदेश में ऐसा कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ जिसका असर भाजपा और कांग्रेस की छवि को नुकसान पहुंचाता। मैदान साफ था, जिसके चलते दोनों पार्टियां तैयारी के साथ चुनावी अखाड़े में जा पहुंचीं। दोनों ही पार्टियां पहले दिन से आश्वस्त थीं कि जीत का सेहरा उनके माथे बंधना तय है। लिहाजा दोनों ने जीत की उम्मीद अपने-अपने उम्मीदवारों पर छोड़ दी। भाजपा इस छोटी पर महत्वपूर्ण बात को समझने में कामयाब रही। शायद यही वजह थी कि चुनाव तारीखों की घोषणा के लगभग तीन महीने पहले ही भाजपा ने प्रदेश के सभी कद्दावर नेताओं की उम्मीदवारी की घोषणा कर दी। केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, प्रहलाद पटेल और फग्गन सिंह कुलस्ते सहित सात सांसद और राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय को मैदान में उतारा गया। पार्टी ने अपना फोकस स्पष्ट रखा कि उसे कैसे हारी हुई सीटों को हर हाल में जीतना है। वैसे भी भाजपा ने प्रदेश के कद्दावर नेताओं पर जिन आठ सीटों पर अपना दांव खेला उनमें से छह सीटें हारी हुई थीं।

भाजपा की मजबूती की वजह

मप्र सहित देशभर में भाजपा लगातार मजबूत होती जा रही है। भाजपा की मजबूती के पीछे हिंदुत्व विचारधारा, विकास का एजेंडा, राजनीतिक गठबंधन और जाति आधारित दलों का कमजोर होना बड़ी वजह है। भाजपा की मूल विचारधारा हिंदुत्व एक एकजुट हिंदू पहचान पर जोर देता है, जो जातिगत अंतरों से ऊपर है। यह

कथा कई हिंदुओं के साथ प्रतिध्वनित होती है जो अपनी सांस्कृतिक विरासत को वापस पाने और भारत में अपनी बहुसंख्यक स्थिति का दावा करने का प्रयास करते हैं। भाजपा का आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित विभिन्न हिंदू समुदायों से समर्थन आकर्षित किया है, चाहे जाति कुछ भी हो। यह समावेशी दृष्टिकोण समाज के विभिन्न स्तरों से समर्थन प्राप्त कर रहा है। भाजपा ने विभिन्न जातियों का प्रतिनिधित्व करने वाले क्षेत्रीय दलों के साथ रणनीतिक गठबंधन किए हैं, जिससे इसकी अपील बढ़ गई है और इसके चुनावी आधार को मजबूत किया गया है। पारंपरिक जाति-आधारित दलों का पतन एक ऐसी शून्यता पैदा कर चुका है जिसे भाजपा ने प्रभावी ढंग से भर दिया है। भाजपा खुद को एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में पेश कर रही है। भाजपा ने जाति आधारित पार्टियों के लिए अपनी सोशल इंजीनियरिंग से ऐसी चुनौती पेश की है, जिसकी काट निकाल पाना इन दलों के लिए आसान नहीं रहने वाला।

दूरदर्शी और सक्षम नेतृत्व

वर्तमान समय में भाजपा का नेतृत्व काफी मजबूत हाथों में है। नरेंद्र मोदी का नेतृत्व भाजपा के लिए दूरदर्शी और सक्षम रहा है। उन्होंने भारत को दुनिया की एक प्रमुख ताकत के रूप में स्थापित करने में मदद की है। उनके नेतृत्व में भारत ने आर्थिक विकास, बुनियादी ढांचे के निर्माण और सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण प्रगति की है। मोदी एक करिश्माई नेता हैं जो लोगों को प्रेरित करने में सक्षम हैं। उन्होंने भारत को एक अधिक मजबूत और समृद्ध देश बनाने के लिए एक स्पष्ट दृष्टि प्रदान की है। उनकी नीतियों ने भारत में विकास और परिवर्तन को प्रेरित किया है।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने भारत में एक नई राजनीतिक युग की शुरुआत की है। उनकी नीतियों ने भारत को एक अधिक मजबूत, समृद्ध और समावेशी देश बनाने में मदद की है। वहीं, दूसरे दलों के पास अब भी नरेंद्र मोदी का कोई तोड़ नहीं दिखता। अब लोकसभा चुनाव 2024 में महज कुछ माह का ही समय बचा है।

चूंकि अभी तक जातिगत जनगणना और मंडल की राजनीति कर एकजुट होने की कोशिश कर रही राजनीतिक पार्टियों के पास कोई मुद्दा ही नहीं बचा है। ऐसे में भाजपा को रोकने के लिए अब इंडिया गठबंधन व अन्य राजनीतिक दलों को नए सिरे से रणनीति बनानी पड़ेगी। फिर इन दलों की रणनीति जो अब तक नरेंद्र मोदी को रोकना तो दूर, उनकी चुनावी जीत की रफ्तार तक को धीमा नहीं कर पाई, वो सिर्फ कुछ माह में किस तरह की नई रणनीति बनाएंगे, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। साफ है, भाजपा ने इन तीन राज्यों में मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री पदों पर जिन नामों को बैठाया है, उनका असर लंबे समय तक रहने वाला है। वैसे भी, भाजपा को पसंद करने वाली जनता हर तरफ से भाजपा के साथ ही खड़ी दिखाई दे रही है, ऐसे में तीन राज्यों के माध्यम से पूरे देश के हिंदुओं को एकजुट करने वाले भाजपा के इस कदम से उसके लिए लोकसभा चुनाव 2024 में जीत की हैट्रिक और नरेंद्र मोदी का तीसरी बार प्रधानमंत्री बनना लगभग तय ही हो गया है।

इंडिया गठबंधन को करारा जवाब

गौरतलब है कि चुनाव के दौरान हिंदी बेल्ट के तीन राज्यों मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में विधानसभा चुनाव से पहले बिहार में जातीय जनगणना के आंकड़े जारी किए गए थे। इसके आसपास ही भाजपा के खिलाफ लामबंद हुई राजनीतिक पार्टियां सामान्य वर्सेज ओबीसी-एससी-एसटी के नाम पर जातीय राजनीति को हवा दे रही थी। वो भी उस समय, जब अगले साल लोकसभा चुनाव हैं। उससे पहले देश के सभी हिंदुओं को एकजुट करने वाले भगवान राम के जन्मस्थल पर भव्य राम मंदिर का उद्घाटन होना है। चूंकि ये जातीय कार्ड इसीलिए उछाले जा रहे थे, ताकि हिंदू एकजुट न हो सकें, लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने सभी जातिगत पार्टियों की हवा निकाल दी है।

भाजपा ने मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में मुख्यमंत्रियों और उप-मुख्यमंत्रियों के नाम पर उन 9 नामों की घोषणा की है, जिसका अंदाजा किसी को भी नहीं था। इन 9 नामों ने विपक्षी गठबंधन की हिंदुओं की एकता को खंडित करने की साजिश को एक झटके में चकनाचूर कर दिया है। इन राज्यों में विधानसभा चुनाव से पहले सड़क से लेकर संसद तक कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी खुलेआम ओबीसी-ओबीसी की रट लगाए हुए थे, तो इंडिया गठबंधन की अन्य पार्टियां जैसे सपा, आरजेडी, जेडीयू भी जिसकी जितनी संख्या भारी... के नाम पर जातिगत कार्ड खेल रही थीं। ये सभी राजनीतिक दल पूरे देश के हिंदुओं को जातीय रूप से राजनीतिक तौर पर खंड-खंड करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन 3 दिसंबर, 2023 को जब इन राज्यों में विधानसभा चुनाव के नतीजे आए, तो इंडिया गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी और दो राज्यों में सत्ता संभाल रही कांग्रेस पार्टी की बुरी तरह से हार हुई।

आगे के 15 सालों की सोच रहा संघ

भाजपा ने विधानसभा में जो प्रयोग किया, वह सफल हुआ। यह पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर उप्र से लिया गया। इसके बाद इसे आगे बढ़ाते हुए अन्य राज्यों में लागू किया जा रहा है। भाजपा और संघ आज की नहीं आगे के 10 सालों के बाद क्या होना है, इस पर काम करती है। अटल जी की सरकार में भी संघ युवाओं को आगे लाने की बात करता था, जो अब जमीन पर लागू हो रहा है। यह सिर्फ भाजपा की नहीं पूरे संघ की सोच है कि दूसरी पंक्ति के नेताओं को आगे बढ़ाया जाए। संघ और भाजपा आगे के 10 से 15 सालों की राजनीति पर फोकस कर रहे है। वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक रतनमणि लाल का कहना है कि दूसरी पंक्ति के नेताओं को आगे बढ़ाने में भाजपा ने यह प्रयोग बहुत पहले शुरू कर दिया था। हरियाणा में जहां चौटाला, फिर देवी लाल, भजन लाल या अन्य जाट, गुर्जर नेताओं का बोलबाला हुआ करता था। वहां पर भाजपा ने अचानक मनोहर लाल खट्टर पंजाबी खत्री को आगे लाकर सबको चौंका दिया था। उत्तराखंड में भगत सिंह कोश्यारी, खंडूरी, रावत और निशंक जैसे नेताओं को हटाकर छात्र राजनीति से आए पुष्कर सिंह धामी को अवसर दिया। ऐसे ही गुजरात में स्थापित नेता नितिन पटेल और रुपाणी को हटाकर वहां भूपेंद्र पटेल को स्थापित कर दिया है। यह लंबे समय की राजनीति के संकेत हैं। यह संघ की सोच और मोदी-शाह की सहमति के बाद उठाया गया कदम है। इस प्रयोग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि स्थापित क्षत्रपों के महत्व को कम किया गया और नए व्यक्ति को भी मौका मिला।

नौकरशाही का दंभ

समांतर सत्ता चला रहे नौकरशाह

भारतीय जनतंत्र में एक समानांतर सत्ता की हामी नौकरशाही अपने सर्वाधिकारवाद एवं अहंकारी रवैये का निरंतर प्रदर्शन करती रहती है। जब कोई पुलिस अधिकारी किसी जनप्रतिनिधि को सार्वजनिक रूप से गालियां देता है, तो यह उसकी मानसिकता में बैठा नौकरशाही का सर्वाधिकारवाद ही बोल रहा होता है। जब कोई प्रशासनिक अधिकारी बिना सरकारी अनुमति के सरकारी राशन के वितरण पर रोक की सूचना जारी कर देता है, या कैमरे के सामने पद की गोपनीयता का ध्यान रखने के बजाय पदाधिकार की हीरोगिरी का प्रदर्शन करता है, तो यह उसका प्रशासनिक सत्ता के बूते कुछ भी करके और अपनी अकर्मण्यता को छिपाकर भी बच जाने का अहम होता है। जब कोई आईपीएस अधिकारी सोशल मीडिया पर अपराधियों को जाति के आधार चिह्नित करे, तो यह उसकी संवैधानिक मूल्यों के प्रति अशिष्टता ही होती है। प्रश्न है, तो फिर विकल्प क्या है? इसका उत्तर हमें अतीत में स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं के विचारों तथा संविधान सभा की बहसों में तलाशना होगा। जो पहले नहीं हो पाया, उसे अब करने का प्रयास हो। हालांकि इस विषय पर स्वतंत्र भारत की सरकारों की कार्यशैली का अतीत निराशाजनक रहा है। प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट्स (1966 एवं 2005), एडी गोरेवाला समिति रिपोर्ट (मार्च, 1951), भारत में लोक प्रशासन सर्वेक्षण रिपोर्ट (एप्पलेबी रिपोर्ट-1953), राष्ट्रीय पुलिस आयोग (1977-1981), रिबेरो कमेटी (1998), पद्मनभैया कमेटी (2000), मलिमथ कमेटी (2003), पूर्व अटॉर्नी जनरल सोली सोराबजी की अध्यक्षता में मॉडल पुलिस एक्ट ड्राफ्टिंग कमेटी (2005) की रिपोर्ट्स जैसी कितनी राजनीतिक, बौद्धिक उछलकूद के लिखित प्रमाण धूल फांक रहे हैं।

वर्तमान लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था के अंतर्गत आने वाली लोक प्रशासनिक सेवाएं सरकार के अलावा निर्वाचित कार्यकारी का प्रमुख अंग हैं। इसमें चयनित अधिकारी संवैधानिक नियमों के अनुरूप निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के निर्देश के अधीनस्थ प्रशासनिक उत्तरदायित्व संभालते हैं। परंतु भारतीय लोकतंत्र में यह परिभाषा थोड़ी अलग, थोड़ी अपूर्ण है। यहां प्रशासनिक वर्ग यानी नौकरशाही उपरोक्त के अतिरिक्त एक समानांतर सत्ताधारी है, जो स्वयं को इस जनतंत्र का स्वयंभू संचालक मानती है। इसका उदाहरण पिछले दिनों देखने को मिला, जब एक स्थानीय भूमि विवाद में उप्र के बदायू जिले के एसडीएम ने सीधे प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को ही नोटिस भेजकर कोर्ट में पेश होने का आदेश दे दिया। यह सूचना सार्वजनिक होते ही प्रशासन में हड़कंप मच गया। हालांकि प्रशासन द्वारा ऐसी गड़बड़ियां करना कोई विशेष बात नहीं है।

यह भी आश्चर्य का विषय नहीं होना चाहिए कि किसी प्रशासनिक अधिकारी ने राज्यपाल को नोटिस दे दिया। गनीमत है, वरना नोटिस तो सीधे राष्ट्रपति को भी भेजा जा सकता था! और यह ऐसी घटना भी नहीं है, जिसे राष्ट्रीय महत्व दिया जाए। लेकिन महत्वपूर्ण है इस घटना का संदेश, कि ऐसे नौकरशाहों की प्रशासनिक तर्बियत किस प्रकार की होगी? जनता के कार्यों एवं सरोकारों के प्रति उनकी गंभीरता का आलम क्या होगा? नौकरशाही के ऐसे दुष्कार्यों का विश्लेषण करते हुए अमेरिकी समाजशास्त्री रॉबर्ट के मर्टन ने प्रशिक्षित अयोग्यता (ट्रेंड इनकैपेसिटी) शब्द का प्रयोग किया है। इसका तात्पर्य ऐसे मामलों से है, जिसमें किसी अधिकारी की योग्यताएं या क्षमताएं उसकी कमियों के रूप में कार्य करती हैं। क्रियाएं, जो प्रशिक्षण तथा निपुणता पर आधारित थीं और जिन्हें भूतकालीन परिस्थितियों में सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सका; आज की बदली हुई परिस्थितियों में अनुपयुक्त प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट हो सकती हैं। ऐसा नोटिस अनुच्छेद-361 का उल्लंघन है।

यह सामान्य बात है कि राष्ट्रपति एवं राज्यपाल जैसे पदों पर आसीन व्यक्तियों को ऐसे मामलों से संवैधानिक रूप से मुक्त रखा गया है। किंतु अजीब तर्क है कि प्रतिष्ठित सिविल सेवा की परीक्षा पास करने वाले इन अधिकारियों को क्या सामान्य कानूनी एवं संवैधानिक नियमों का भी ज्ञान नहीं है? यदि ऐसा है, तो उक्त प्रकरण ऐसी सम्मानित परीक्षाओं की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाता है। और यदि ऐसा नहीं है, तो इसका सीधा अर्थ है- गणतंत्र में नौकरशाही को बिना परिणाम की चिंता एवं बिना जवाबदेही की परवाह के कुछ भी करने की इजाजत है। ऐसा क्यूं है कि भारतीय नौकरशाही खुद को सभी नियमों एवं विधानों से परे मानती है? आम जनता तक तो ठीक था, अब ये अहंमन्यता में संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों को भी नहीं बख्श रहे हैं। संविधान के पालनकर्ताओं एवं संवैधानिक नियमों को जनता पर लागू कराने की जिम्मेदार जमात कैसे उसके मूल्यों की धज्जियां उड़ाती है? नौकरशाही उसका सटीक उदाहरण है।

अब जरा सोचिए कि ऐसे रूढ़िवादी परंपरा के वाहकों का आम जनता के साथ कैसा रवैया होगा? संभवत: इसी परिपेक्ष्य में हेराल्ड लास्की ने नौकरशाही को एक ऐसी व्यवस्था के रूप व्यक्त किया है, जिसमें यंत्रवत् कार्य के लिए उत्कंठा, नियमों के लिए लोचशीलता का बलिदान, निर्णय लेने में देरी, नवीन प्रयोगों का अवरोध और रूढ़िवादी दृष्टिकोण जैसी बातें प्रभावी रहती हैं। हालांकि भारतीय प्रशासनिक तंत्र बिलकुल रूढ़-लोचहीन भी नहीं है। हकीकत में भारतीय जनतंत्र में एक गजब की लोचशीलता एवं अनुकूलता का गुण है, जो राजनीतिक सत्ता प्रतिष्ठान एवं समर्थ वर्ग के सम्मुख ही दिखता है। यह नौकरशाही की सत्ता का सबसे विचित्र सत्य है कि उसकी सारी हेकड़ी आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त वर्ग के सामने गायब हो जाती है। आम वर्ग यानी निम्न वर्ग से लेकर मध्यम वर्ग के लोगों को हड़काने, धमकाने में माहिर ये प्रशासनिक सेवक सक्षम वर्ग के सामने मिमियाने लगते हैं। आम भारतीयों में नौकरशाही के प्रति हिकारत की यह एक बड़ी वजह है। वैसे भारतीय समाज में भारतीय सिविल सर्विस के आतंक एवं उसकी दुर्व्यवस्था के प्रति अरुचि एवं घृणा का इतिहास ब्रिटिश हुकूमत के समय का ही है। तब इसे इंपीरियल सिविल सर्विसेज कहते थे। सन् 1928 में मोतीलाल नेहरू समिति की रिपोर्ट ने सिफारिश की थी कि भारत में उत्तरदायी शासन लागू होने तक अखिल भारतीय सेवाओं को स्थगित कर दिया जाए। लेकिन आज तक इस दिशा में काम नहीं हो पाया।

● **डॉ. जय सिंह सेंधव**

भाजपा में नई पौध को महत्व

विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी अब नई रणनीति में रंगी नजर आ रही है। पार्टी को सींचकर बड़ा करने वाले नेताओं को दरकिनार कर नई पौध को महत्व दिया जा रहा है। इसका ताजा नजारा मप्र, छग और राजस्थान में देखने को मिला है।

चाणक्य नीति से लेकर राजनीतिक विज्ञान तक सब में सत्ता के संदर्भ में केवल एकसमान विचार चलता है और उन सबका सार भी केवल एक ही है। सार यह कि सत्ता के लिए सर उठाने वालों के आसपास के या करीबी किसी बेहद कमजोर को ही सर्वाधिक सामर्थ्यवान बना दो, ताकि ताकतवर लोगों के वे सभी रास्ते ही बंद हो जाएं, जिनके जरिये वे सत्तासीन होने के प्रयास कर सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी भाजपा ने राजस्थान में भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाने के साथ ही वसुंधरा राजे के पर कतरकर यही संदेश दिया है। वसुंधरा ही क्यों, मप्र में शिवराज सिंह चौहान और छत्तीसगढ़ में डॉ. रमन सिंह के साथ भी यही हुआ साफ लगता है। तीनों प्रदेशों के इन सर्वाधिक शक्तिशाली नेताओं के सामने कभी खड़े तक न हो पाने की क्षमता वाले लोगों को ही मुख्यमंत्री बना दिया है, ताकि नई पौध तैयार हो सके, पुरानों के बोझ से मुक्ति मिल जाए और सामान्य कार्यकर्ता को सदा यह लगता रहे कि उनके लिए भी कभी सत्ता के दरवाजे खुल सकते हैं। भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री देख राजस्थान के भाजपा कार्यकर्ता यही कह रहे हैं।

राजस्थान में भजनलाल शर्मा का चयन पार्टी कैडर को मजबूत करने और संघ परिवार के वैचारिक प्रवाह को संगठित बनाए रखने के लिए किया गया निर्णय बताया जा रहा है। हालांकि वे उस ब्राह्मण समुदाय से हैं, जिसके बारे में भाजपा के लिए कभी कहा जाता था है कि यह तो ब्राह्मण-बनियों की पार्टी है। लेकिन अब ये टैग हट गया है। शर्मा ने तीन राष्ट्रीय अध्यक्षों राजनाथ सिंह, अमित शाह व जेपी नड्डा के कार्यकाल में चार प्रदेश अध्यक्षों के साथ प्रदेश में काम किया है। अमित शाह और जेपी नड्डा उनके काम से प्रभावित रहे हैं और संघ के विचार पर अचल रहने के कारण आरएसएस भी उनको पसंद करता है।

भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाने की खास वजह ये भी है कि बहुत जूनियर और साथ ही विनम्र होने के कारण वे अपने वरिष्ठ नेताओं से वसुंधरा राजे की तरह न तो सर उठाकर बात कर सकते हैं और न ही आंख दिखा सकते हैं। वसुंधरा वैसे भी न तो केंद्रीय नेताओं की पसंद थी और न ही संघ परिवार की। वे केवल विधायकों के समर्थन बल की पुरानी परंपरा के जरिए मुख्यमंत्री बनना चाहती थी, लेकिन मोदी और भाजपा ने अब वह परंपरा ही पलट दी है। मुख्यमंत्री के रूप में शर्मा के चयन पर राजनीतिक जानकारों की राय में माना यही जा रहा है कि राजस्थान में भाजपा का यह फैसला भाजपा की पुरानी पीढ़ी के नेताओं से बचने की कोशिश तो है ही, वसुंधरा राजे के दो बार के मुख्यमंत्री काल के बैकलॉग से निजात पाने का प्रयास भी है।

भजनलाल शर्मा एक बिल्कुल नया चेहरा हैं और एक उच्च जाति के नेता के रूप में फिट भी बैठते हैं। सबसे खास बात यह भी है कि वसुंधरा राजे की तरह न तो वे सत्ता के अहंकार से ग्रस्त हैं और न ही विधायकों के समर्थन से लॉबिंग कर सकते हैं। भाजपा ने भजनलाल शर्मा के जरिए अपनी मुख्यमंत्री की पसंद से यह भी बताने की कोशिश की है कि वह 2024 के चुनावों से पहले किसी भी तरह की गुटबाजी बर्दाश्त नहीं करेगी। फिर भी नए मुख्यमंत्रियों की तरफ से यदि ऐसा हुआ, तो सत्ता का अहंकार उनको छुए, उससे पहले ही सत्ताच्युत भी बेहद आसानी से किया जा सकता है। राजस्थान भाजपा के एक बड़े नेता ने कहा कि पार्टी आलाकमान ने भजनलाल शर्मा के नाम पर निर्णय लेने से पहले कई पहलुओं पर गहन समीक्षा जरूर की होगी। इसमें सबसे प्रमुख तो यही हो सकता है कि वरिष्ठ नेतृत्व किसी भी नेता की ताकत दिखाने की कोशिश को पसंद नहीं करता इसीलिए चुनाव जीतने के बाद विधायकों का भले ही वसुंधरा राजे से लगातार मिलना हुआ और उनके समर्थकों की संख्या 70 के आसपास बताई जाती रही, लेकिन इस संख्याबल को दिखाकर ताकत पाने की कोशिश को केंद्र ने साफ नजरंदाज किया।

भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने फिलहाल पत्ते नहीं खोले हैं कि आखिर पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के लिए पार्टी का प्लान क्या हैं। 70 साल की वसुंधरा अपने प्रदेश की सर्वाधिक लोकप्रिय नेता अब भी हैं और भजनलाल शर्मा को उनकी बराबरी का कद पाने में लंबा वक्त लगेगा, मगर वे कभी भी वसुंधरा राजे जितना बड़ा राजनीतिक कद पा ही नहीं सकते, क्योंकि वे चीजें जो कद को पद से भी बड़ा बना देती हैं, वे भजनलाल शर्मा में हैं ही नहीं। बहुत संभव है कि भाजपा आलाकमान ने उनकी इस तासीर को भी भली भांति भांप लिया हो। भजनलाल शर्मा की तरह ही मोहन यादव और विष्णुदेव साय का मुख्यमंत्री के रूप में चुना जाना कई लोगों के लिए निश्चित तौर से आश्चर्य की बात है। भले ही भाजपा की धाराओं के जानकारों का कहना है कि 2024 के आम चुनाव को ध्यान में रखते हुए भाजपा ने ये रणनीतिक कदम उठाया है। जबकि कई लोग भाजपा की पसंद से आश्चर्यचकित हैं, क्योंकि

रणनीति समझ से परे

भाजपा ने तीनों राज्यों में नए मुख्यमंत्री देकर यह संदेश भी दिया है कि वह किसी एक चुनाव को हार-जीत की दृष्टि से ही नहीं देखती, हार हो या जीत, उसी में से भविष्य की रणनीति भी निकालती है। देश का शायद ही कोई पत्रकार या राजनीतिक विश्लेषक होगा, जिसने मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाने को उप्र, बिहार में चुनाव जीतने की रणनीति के तौर पर नहीं समझा होगा। लेकिन जब मोहन यादव को मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया था, क्या तब किसी ने सोचा था कि भाजपा मप्र के रास्ते उप्र बिहार की राजनीति का रास्ता निकाल लेगी। लोग तेलंगाना में कांग्रेस की जीत को भाजपा की हार के रूप में भी देख सकते हैं, लेकिन भाजपा उसे बड़ी उपलब्धि के रूप में देख रही है। पिछले विधानसभा चुनावों में उसे एक सीट और सात प्रतिशत वोट मिले थे, लोकसभा चुनावों में उसे चार सीट और 19 प्रतिशत वोट मिले थे, अब आठ विधानसभा सीट और 14 प्रतिशत वोट मिले हैं।

जीत से ज्यादा मुख्यमंत्रियों के चयन की चर्चा

छत्तीसगढ, मप्र और राजस्थान में भाजपा द्वारा जिन तीन मुख्यमंत्रियों का चयन किया गया है अगर उसका विश्लेषण करना हो तो बड़े से बड़ा राजनीतिक पंडित इस बात का विश्लेषण नहीं कर सकता कि इनको चुनने का आधार क्या है? मसलन, क्या तीनों राज्यों में सिर्फ जातीय समीकरण साधा गया है? नहीं। क्या तीनों राज्यों में बड़े जनाधार वाले नेताओं को महत्व दिया गया है? नहीं। क्या संघ से संबंध इन्हें चुनने का आधार है? नहीं। चुनावी विश्लेषक अपनी-अपनी समझ के अनुसार कोई न कोई आधार खोज ही लेंगे लेकिन असल में मुख्यमंत्री चुनने का आधार क्या है इस गुत्थी को समझ पाना असंभव है। आप जितना अनुमान लगाने की कोशिश करेंगे उतना उलझते जाएंगे कि आखिर इन तीनों राज्यों में किस फार्मूले के तहत मुख्यमंत्री नियुक्त किए गए हैं। ऐसा लगता है कि सारे आधार दरकिनार करके सिर्फ एक आधार देखा गया। वह यह कि जो भी स्थापित नेता हैं उन्हें छोड़कर किसी ऐसे को बना देना है जिसका नाम सुनकर लोग भौचक्के रह जाएं। गूगल पर सर्च करने पर भी लोगों को पता न चले कि ये आखिर हैं कौन? हर एक के मन में बस एक सवाल आए कि अरे इनको मुख्यमंत्री बनाया तो क्यों बनाया? अब प्रधानमंत्री मोदी के हर काम को मास्टरस्ट्रोक कहने वाले समर्थक सक्रिय होंगे और वो भांति-भांति के तर्कों से समझाएंगे कि ऐसा करना क्यों जरूरी था।

इनमें से किसी भी मुख्यमंत्री में बड़े पैमाने पर वोट दिलाने की क्षमता नहीं है। फिर भी हवाला तो जाति, समाज, वर्ग का दिया जा रहा है। हालांकि जाति, समाज, वर्ग और सामुदायिक संबद्धता के आधार पर नेताओं को चुनने की प्रथा भाजपा में नई नहीं है, लेकिन वर्तमान चयन विभिन्न समुदायों और जातियों के व्यापक क्षेत्रीय आधार की दिशा में एक रणनीतिक कदम हो सकते हैं।

भजनलाल शर्मा सहित मप्र व छत्तीसगढ़ के नवनियुक्त तीनों मुख्यमंत्रियों का अगला लक्ष्य अगले साल होने वाले चुनाव में अपने-अपने प्रदेशों की सभी लोकसभा सीटों पर भाजपा की जीत सुनिश्चित करना है। राजस्थान में ब्राह्मण यानी सवर्ण, मप्र में यादव यानी पिछड़ा और छत्तीसगढ़ में आदिवासी मुख्यमंत्रियों के चयन का भाजपा का निर्णय देश के तीनों महत्वपूर्ण राज्यों की सामाजिक व जातिगत संरचना को प्रभावित करने का तो है ही, 2024 के आम चुनाव से पहले सबके समर्थन को मजबूत करने के लिए पार्टी की सावधानीपूर्वक योजना का भी प्रारूप भी प्रतीत होता है। आदिवासी, ओबीसी व ब्राह्मण वोट राजस्थान सहित मप्र व छत्तीसगढ़ में बड़ी तादाद में है। भाजपा कहती रही है कि वह एक परिवार या कुनबे की पार्टी नहीं है, जहां आगे बढ़ने के अवसर केवल परिवार के लोगों को ही मिलते हैं। मोदी और भाजपा राजस्थान में भजनलाल शर्मा सहित इन तीनों नए मुख्यमंत्रियों के चयन के जरिए यह संदेश भी देने का प्रयास किया है कि उनकी पार्टी में हर किसी को आगे बढ़ने के समान अवसर प्राप्त हैं। वैसे, भाजपा के एक वरिष्ठ पार्टी नेता ने कहा कि वसुंधरा राजे आने वाले कुछ ही दिनों में बिना जिम्मेदारी के नहीं होंगी, क्योंकि उनकी सक्रियता का लाभ पार्टी को मिलना चाहिए। हालांकि, उनको क्या जिम्मेदारी मिलेगी, यह कोई नहीं जानता और जब जिम्मेदारी मिलेगी, तो वसुंधरा राजे खुद इस जिम्मेदारी को स्वीकार करेंगी या नहीं, यह भी एक सवाल है। सवाल तो भजनलाल शर्मा की मुख्यमंत्री के तौर पर सफलता को लेकर भी उठाए जा रहे हैं। शर्मा ने मुख्यमंत्री पद की शपथ भी ले ली है। फिर भी सवाल हैं, तो ऐसे सवालों का तो कोई जवाब भी नहीं होता।

दूसरी तरफ तीनों राज्यों में भाजपा को जिताने का श्रेय सीधे नरेंद्र मोदी को दिया गया है। भाजपा ने इन तीनों राज्यों में पनपी गुटबाजी से निजात पाने के लिए किसी भी चेहरे को सामने रखकर चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया था। मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान तीनों ही राज्यों में पार्टी लंबे समय से गुटबाजी का शिकार थी। गहन विचार-विमर्श के बाद फैसला हुआ था कि गुटबाजी को खत्म करने के लिए किसी व्यक्ति विशेष के चेहरे पर चुनाव लड़ने के बजाय पार्टी अपनी जड़ों में लौटे और सिर्फ चुनाव निशान को आगे किया जाए। जब कमल के निशान पर चुनाव लड़ने का फैसला हुआ था, तभी यह तय हो गया था कि इन तीनों राज्यों में आमूलचूल परिवर्तन की जरूरत है। चुनावों से पहले जब मप्र में दो केंद्रीय मंत्रियों सहित छह सांसदों को टिकट दिया गया, तो मीडिया में इसका मतलब यह निकाला गया कि इनमें से कोई शिवराज सिंह चौहान का विकल्प बनेगा। राजस्थान में भी जब छह सांसदों को टिकट दिया गया तो वहां भी यही अटकलें लगाई गई थीं कि इनमें से कोई वसुंधरा राजे का विकल्प बनेगा।

छत्तीसगढ़ में भी एक केंद्रीय मंत्री सहित चार सांसद भेजे गए थे। लेकिन इनमें से किसी को भी मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया। भाजपा को तीनों ही राज्यों में मुख्यमंत्री तय करने में आठ दिन लग गए। इससे यह भी साबित हुआ कि भाजपा ने पहले यह तो तय किया था कि आमूलचूल परिवर्तन करना है, लेकिन यह तय नहीं किया था कि स्थापित चेहरों का विकल्प कौन होगा। छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय आदिवासी, मप्र में ओबीसी मोहन यादव और राजस्थान में ब्राह्मण भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बना दिया गया है। इनमें से किसी के भी मुख्यमंत्री बनने का किसी को कोई अंदाजा तक नहीं था। इन तीनों को भी अनुमान नहीं था कि वे मुख्यमंत्री बन सकते हैं। भजनलाल शर्मा तो पहली बार ही विधायक बने हैं। भाजपा के तीनों मुख्यमंत्रियों की विशेषता यह है कि वे संघ पृष्भूमि के हैं, और तीनों ही विद्यार्थी परिषद से जुड़े रहे हैं। विद्यार्थी परिषद इस बात पर गर्व कर सकती है कि पांच राज्यों में चुनाव हुए और चार राज्यों में उसके कार्यकर्ता मुख्यमंत्री पद पर पहुंचे।

भाजपा ने मुख्यमंत्री बनाते समय जातियों को साधने की रणनीति के तहत प्रतिनिधित्व दिया है, लेकिन चुनावों से पहले महिला सशक्तिकरण का जो संदेश मोदी दे रहे थे, वह थोड़ा धुंधला जरूर पड़ा है, क्योंकि कोई महिला मुख्यमंत्री भी नहीं बनाई गई। महिला उपमुख्यमंत्री भी सिर्फ राजस्थान में दीया कुमारी बनाई गई हैं। छतीसगढ़ और मप्र में महिला उपमुख्यमंत्री नहीं बनाई गई। नए मुख्यमंत्रियों का नाम सामने आने के बाद यह भी साफ हो गया कि भाजपा ने अपने 21 सांसदों को राज्यों में मौजूदा नेतृत्व के विकल्प के तौर पर नहीं भेजा था। भाजपा ने विधानसभा चुनावों के बहाने लोकसभा चुनावों के उम्मीदवारों की भी छंटाई कर ली। भाजपा ने तीनों ही राज्यों में नया नेतृत्व उभारने का फैसला कर लिया था।

● **विपिन कंधारी**

विपक्षी दल यह समझ कर चल रहे हैं कि भारतीय जनता पार्टी नरेंद्र मोदी के कारण ही जीत रही है। इसलिए उनका सारा फोकस नरेंद्र मोदी पर बना हुआ है। पिछले 10 साल से भाजपा आगे बढ़ती जा रही है, और विपक्षी दलों की कुंठा बढ़ती जा रही है। विपक्षी दल मोदी को अपने रास्ते की सबसे बड़ी अड़चन मान रहे हैं। अपनी मंजिल पर पहुंचने के लिए सही रास्ता खोजने के बजाय, वे उन पर हमले कर रहे हैं। अपने विरोधी पर व्यक्तिगत हमले करना अच्छी राजनीति नहीं होती। वह सिर्फ निराशा और कुंठा होती है, जिससे वोटरों को कोई प्रभावित नहीं कर सकता। यही कारण है कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल मोदी पर हमले करके वोटरों का दिल नहीं जीत पा रहे।

मतिभ्रम का शिकार विपक्ष

विपक्षी दल मोदी के अंधे विरोध के चलते देश और मोदी में फर्क भी नहीं कर पा रहे। उनकी वही हमलावर रणनीति उनके लिए घातक साबित हो रही है। राजनीति विचारधारा पर आधारित होनी चाहिए, व्यक्ति आधारित नहीं। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल यूनाईटेड सभी व्यक्ति और परिवार आधारित पार्टियां है, इसलिए उनकी सोच भी व्यक्ति और परिवार तक सीमित हो गई है।

कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को पहले यह खोज करनी होगी कि भारतीय जनता पार्टी क्यों जीत रही है। उन कारणों की समीक्षा करनी होगी, फिर उनका तोड़ निकालना होगा। अगर मोदी अपनी नीतियों के कारण जीत रहे हैं, तो विपक्ष को अपनी नीतियां बदलनी होंगी। क्योंकि वोटर मोदी की नीतियों को पसंद कर रहे हैं। नीतियों में वर्ग विशेष को ध्यान में रखकर बनाई गई नीतियां काम नहीं आतीं, अगर आप वर्ग विशेष को ध्यान में रख कर नीतियां बनाते हैं, तो आप उस वर्ग के साथ जोड़ कर देखे जाते हैं।

कांग्रेस को शायद इतना नुकसान किसी नीति ने नहीं किया होगा, जितना यूपीए सरकार के समय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के उस एक बयान ने किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि देश के संसाधनों पर पहला हक इस देश के अल्पसंख्यकों का है। अल्पसंख्यक का मतलब यहां मुस्लिम ही माना जाता है। 2014 में देश में सत्ता परिवर्तन के कई कारणों में से एक सबसे बड़ा कारण यह था। देश के संसाधनों पर पहला हक किसी भी वर्ग विशेष का नहीं हो सकता। इस तरह के बयान और कृत्य करके कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने समाज कल्याण का व्यापक दृष्टिकोण त्याग दिया था। यूपीए सरकार के किसी घटक दल ने मनमोहन सिंह के बयान को सुधारने की कोशिश नहीं की। इसके जवाब में जब मोदी सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास की बात करते हैं, तो वह सभी वर्गों को प्रभावित कर रहे होते हैं।

यूपीए जब 10 साल तक सत्ता में थी, भारतीय जनता पार्टी ने उन दस सालों में 2004 और 2009 में हुई हारों की समीक्षा की। वे कारण खोजे, जिनके कारण वह वाजपेयी जैसे स्पष्टवादी, विशाल हृदय वाले लोकप्रिय नेता के होते हुए भी हार गई। क्या कांग्रेस या अन्य किसी विपक्षी दल ने कभी समीक्षा की कि भाजपा 2014 और 2019 में क्यों जीती और उसके बाद भी क्यों जीत रही है। अभी तो कांग्रेस और विपक्षी दल यह मानकर चल रहे हैं कि बेरोजगारी और महंगाई की वजह से देश में मोदी के खिलाफ आक्रोश है। अगर ऐसा होता, तो इन विधानसभा चुनावों में मोदी के खिलाफ आक्रोश सामने आता। हिंदी बेल्ट के तीनों राज्यों में मोदी खुद ही अपने चेहरे पर चुनाव लड़ रहे थे। विपक्ष यह नहीं कह सकता कि तीनों राज्यों में भाजपा अपने

क्या कांग्रेस की हार से खुलेगा इंडिया गठबंधन की मजबूती का रास्ता?

उत्तर भारत के तीन प्रमुख राज्यों मप्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में मिली करारी हार के बाद कांग्रेस पार्टी के कस-बल थोड़े ढीले हुए हैं। पार्टी ने आगामी लोकसभा चुनाव में सत्ताधारी भाजपा को आईएनडीआइए (इंडिया) गठजोड़ के जरिए चुनौती देने के लिए जो ब्लूप्रिंट तैयार किया था, उसे लेकर भी असमंजस बढ़ता जा रहा है। गठबंधन में शामिल दलों के दबाव में 6 दिसंबर 2023 को इंडिया गठबंधन की बैठक बुलाई गई थी, लेकिन कई क्षेत्रीय दलों की बेरुखी को भांपते हुए कांग्रेस पार्टी को इस बैठक को टालना पड़ा। हालांकि इंडिया गठबंधन के मजबूत पैरोकार शरद पवार ने पांच राज्यों के चुनाव परिणाम आने के बाद कहा है कि गठबंधन पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। लेकिन परिणाम के तत्काल बाद हो रही बैठक में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री तथा गठबंधन में शामिल बड़े क्षेत्रीय दल तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी ने व्यक्तिगत व्यस्तता का हवाला देते हुए बैठक में शामिल होने से इंकार किया था। दरअसल 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव को देखते हुए गठबंधन में शामिल सभी क्षेत्रीय दल कांग्रेस पार्टी से दो टूक बात कर सीटों का बंटवारा सुनिश्चित कर लेना चाहते हैं। क्षेत्रीय दलों को यह लग रहा है कि कांग्रेस पार्टी का जिन राज्यों में जनाधार कमजोर है, उन राज्यों में भी आधिकाधिक सीट हथियाना चाहती है।

मुख्यमंत्रियों के चेहरों के कारण जीती।

उत्तर भारत के तीनों राज्यों ने विपक्ष की इस धारणा को ही नकार दिया कि वोटर बेरोजगारी और महंगाई के कारण मोदी से खफा है। दूसरा विपक्षी नेता यह मानकर चल रहे हैं कि विपक्षी दल भाजपा के सामने साझा उम्मीदवार खड़ा करेंगे, तो वे मोदी को हरा देंगे। क्या उन्होंने कभी सोचा है कि भाजपा मोदी के अलावा भी किन्ही कारणों से जीत रही होगी। क्योंकि विपक्षी दलों ने यह सोचा ही नहीं, इसलिए इन विधानसभा चुनावों में कांग्रेस बुरी तरह हार गई।

विधानसभा चुनाव हों, या लोकसभा चुनाव, विपक्ष भाजपा को तब तक नहीं हरा सकता, जब तक वह भाजपा की असली ताकत को नहीं समझेगा। भाजपा की ताकत सिर्फ मोदी का व्यक्तित्व ही नहीं है। भाजपा चार कारणों से जीत रही है। सबसे पहला कारण है, उसकी हिंदुत्व की विचारधारा, दूसरा कारण है राष्ट्रवादी सोच। तीसरा है संगठन की ताकत। नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद इन तीनों कारणों में चौथा कारण जोड़ा है गरीबों, जरूरतमंदों और वास्तव में वंचितों को सरकारी खजाने से सीधा लाभ पहुंचाना। जब तक समूचा विपक्ष, या जिसे अब इंडी एलायंस कहा जा रहा है, वह इन चार में से तीन पर भाजपा की बराबरी नहीं करता, वह भाजपा को कभी नहीं हरा सकता। जिन अहिंदी भाषी राज्यों में क्षेत्रीय दल जीत रहे हैं, उसका एक बड़ा कारण यह है कि अहिंदी भाषी राज्यों में राष्ट्रवाद की जगह क्षेत्रीय स्वाभिमान ज्यादा हावी हो जाता है। कांग्रेस भी उन्हीं राज्यों में जीत रही है, जहां क्षेत्रीय आकांक्षाएं और क्षेत्रीय भाषा का जोर ज्यादा है। दक्षिण के राज्यों में भाजपा को हिंदी भाषी माना जाता है, इसलिए उसके पांव वहां नहीं जम रहे।

मोदी ने भाजपा की हिंदुत्व और राष्ट्रवाद की विचारधारा को और प्रखर करने का काम गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए शुरू कर दिया था। उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाने में भी उनके उसी काम की भूमिका थी। प्रधानमंत्री बनने के बाद काशी विश्वनाथ कोरिडोर और उज्जैन के महाकालेश्वर कोरिडोर का निर्माण करवाकर तथा पड़ोसी मुस्लिम देशों में सताए जा रहे हिंदुओं को भारत की नागरिकता देने का कानून बनाकर उन्होंने हिंदुत्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। बालाकोट में सर्जिकल स्ट्राइक करवाकर, आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले पाकिस्तान से किसी भी तरह की बातचीत को बंद करके और जम्मू-कश्मीर से 370 हटाकर मोदी ने राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने यह धारणा बनाई कि भारत विश्वगुरू था, और वह ऊंचाई फिर से हासिल करनी है। अगर मोदी अपनी विचारधारा के कारण जीत रहे हैं, तो विपक्ष को भी वक्त के मुताबिक अपनी विचारधारा में परिवर्तन लाना होगा। क्योंकि विपक्षी दलों की विचारधारा वक्त की कसौटी पर खरी नहीं उतर रही थी, इसलिए जनता ने उनको सत्ता से बाहर फेंक दिया।

देश की अधिकांश जनता आजादी के बाद से इंतजार कर रही थी कि कोई नेता आए, जो उनकी रोजमर्रा की जिंदगी की समस्याओं का निवारण करने के साथ ही भारत की सांस्कृतिक विरासत को फिर से ऊंचाईयों पर ले जाने का काम करे। मोदी ने सिर्फ विचारधारा और राष्ट्रवाद पर उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं की, लोगों की आम जिंदगी की दुश्वारियां खत्म करने के लिए भी बहुत काम किए। मोदी भाजपा की विचारधारा की कसौटी पर भी खरे उतरे हैं, और लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी की दुश्वारियां दूर करने में भी खरे उतरे हैं। क्या देश के किसी प्रधानमंत्री ने पहले यह सोचा था कि एससी, एसटी और ओबीसी के अलावा आर्थिक आधार पर आरक्षण का भी प्रावाधान होना चाहिए। किसी भी सरकार का उद्देश्य खास वर्गों का ख्याल रखना होना चाहिए या सभी का ख्याल रखना होना चाहिए। अधिकांश जनता को मोदी की विचारधारा और कार्यक्रम विपक्ष की विचारधारा और कार्यक्रमों से बेहतर लगे, इसलिए वोटर बार-बार मोदी को चुन रहे हैं। इसके जवाब में कांग्रेस कह सकती है कि जिस विचारधारा पर चलते हुए उसने 60 साल तक जनादेश हासिल किया, वह गलत कैसे हो सकती है। तो कांग्रेस को मंथन करना पड़ेगा कि देश में शिक्षा का विस्तार होने के बाद देश के वोटरों की सोचने की क्षमता में भी विस्तार हुआ है। आप अपनी विचारधारा उन पढ़े-लिखे वोटरों पर लाद नहीं सकते, जो खुद सही और गलत का फर्क करना जानने लगे हैं। कांग्रेस ने आजादी के बाद से ही हिंदुओं को बाहरी और बेगाना बना दिया था। जवाहरलाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया में कांग्रेस को थ्योरी दे दी थी कि जैसे मुगल बाहर से आए थे, वैसे ही हिंदू भी बाहर से आए थे। कांग्रेस उस झूठी थ्योरी से कभी बाहर नहीं निकल पाई, जबकि आजादी के बाद से देश का 80 प्रतिशत हिंदू खुद को लूटा हुआ आहत महसूस कर रहा था।

● इन्द्र कुमार

कांग्रेस के विरोध में जनमत तैयार कर जगह बनाए हुए हैं क्षेत्रीय दल

पंजाब और दिल्ली में आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस की खटिया खड़ी कर रखी है। इन सभी राज्यों के क्षेत्रीय दलों के नेता समय-समय पर यह बताते रहे हैं कि उनके राज्य में उनकी मर्जी के खिलाफ उन्हें कुछ भी स्वीकार नहीं है। मप्र विधानसभा चुनाव में सीटों को लेकर जब सपा और कांग्रेस के बीच गतिरोध बढ़ा तो लखनऊ लौटते ही सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने दो टूक शब्दों में कह दिया था कि समाजवादी पार्टी सीटें मांगने वाली पार्टी नहीं बल्कि सीट बांटने वाली पार्टी है। मप्र में कांग्रेस पार्टी को करारी शिकस्त मिलने के बाद समाजवादी पार्टी और अधिक हमलावर हो रही है। सपा प्रमुख की तरह ही ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल ने भी विभिन्न मौकों पर यह कहा है कि गठबंधन में कांग्रेस पार्टी को एक सीमा से अधिक तवज्जो देने का मतलब है, भारतीय जनता पार्टी का रास्ता आसान करना। कमोबेश यह सभी क्षेत्रीय दल कांग्रेस पार्टी के विरोध में जनमत तैयार कर अपनी जगह बनाए हुए हैं। इन क्षेत्रीय दलों को कांग्रेस पार्टी की कार्य संस्कृति का भी पूरी तरह से ज्ञान है। ज्ञात हो कि भाजपा को पूरे देश में चुनौती देने की गरज से जब इंडिया का गठन हुआ था तब कांग्रेस पार्टी का रवैया अपेक्षाकृत मिलनसार था। लेकिन पहले हिमाचल और फिर कर्नाटक में कांग्रेस की जीत के बाद कांग्रेस के नेताओं के सुर बदलने लगे थे। कांग्रेस के बदलते तेवर देखते हुए गठबंधन में शामिल सभी दल जल्द से जल्द सीटों का बंटवारा और इसकी औपचारिक घोषणा के लिए लगातार दबाव बना रहे थे। गठबंधन में शामिल एक बड़े राज्य के क्षेत्रीय दल के नेता ने तो यहां तक कहा था कि अगर 15 दिसंबर तक गठबंधन की मीटिंग नहीं होती तो इस गठजोड़ का भविष्य अंधकारमय मान लिया जाना चाहिए।

सत्ता में चौंकाने वाली वापसी...

छत्तीसगढ़ की सत्ता में वापसी के बाद भाजपा ने विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी दे दी है। बड़ा दांव खेलते हुए भाजपा ने आदिवासी नेता को सूबे का चेहरा बनाया है। गत दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में विष्णुदेव साय ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी मिलने के बाद विष्णुदेव साय ने कहा कि बतौर मुख्यमंत्री सरकार के जरिए भाजपा के संकल्प पत्र (मोदी की गारंटी) को पूरा करने की कोशिश करूंगा। सरकार द्वारा किया जाने वाला पहला काम आवास योजना के तहत 18 लाख आवासों की मंजूरी होगा। लेकिन सबसे चौंकाने वाली बात रही है राज्य में भाजपा की वापसी।

वजह चाहे कोई भी रही हो, पिछली बार छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री का चेहरा रहे टीएस सिंहदेव सरगुजा से 14 की 14 सीटें जीतकर ले आए थे लेकिन मुख्यमंत्री नहीं बन पाए थे। तो इस बार जनता ने पूरी 14 की 14 सीटें भाजपा की झोली में पटक दीं। इतना ही नहीं, जनता ने भाजपा के झंडे पर पहली बार चुनाव लड़े राजेश अग्रवाल को चुना और सिंहदेव को हार का चेहरा दिखा दिया। सात बार के कांग्रेस विधायक रवींद्र चौबे को साजा विधानसभा सीट से हार का सामना करना पड़ा। रवींद्र के माता-पिता भी विधायक रहे हैं। उन्हें हराने वाले कोई और नहीं बल्कि पहली बार चुनाव मैदान में उतरे भाजपा के प्रत्याशी ईश्वर साहू हैं। साहू फटी हुई चप्पल और फटे कपड़े पहनकर साइकिल से चुनाव प्रचार करते रहे और लोगों को दंगों में अपने बेटे को खोने का दर्द बताते रहे। अग्रवाल, साहू और उनके जैसे तमाम लोगों की जीत ने सारे एग्जिट पोल के दावे को झूठा साबित कर दिया जो छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बरकरार रहने की बात कह रहे थे। कांग्रेस चुनाव हार गई।

पिछले चुनाव में 15 सीटें बटोर न पाने वाली भाजपा की वापसी की कहानी चौंकाने वाली है क्योंकि पिछले पांच वर्षों में प्रदेश संगठन ने बड़े मुद्दों को उस तरह से नहीं उठाया जैसे उठाया जाना चाहिए था। पार्टी पांच साल तक मैदान और सड़क से गायब रही। उसकी सारी कवायद प्रेस विज्ञप्ति और ट्वीट तक सीमित रह गई थी। जानकारों का कहना है कि विपक्ष की सक्रियता का आगाज लगभग एक साल पहले प्रदेश अध्यक्ष के बदलाव से हुआ। यह बात और है कि एक साल का ज्यादातर समय आपसी झगड़ों और गुटबाजी के चलते निपट गया और भाजपा कोई बड़ा आंदोलन खड़ा कर पाने में सफलता हासिल नहीं कर पाई। फिर भी एक बात तो साफ है कि प्रदेश अध्यक्ष के बदलाव के साथ भाजपा जातिगत और सामाजिक समीकरण का फॉर्मूला अपने लोगों तक पहुंचाने में कामयाब रही। धीरे-धीरे पार्टी दिखने लगी और सरकार के खिलाफ स्वाभाविक एंटी-इंकम्बेंसी फैक्टर झलकने लगा। दो महीने पहले तक भाजपा चुनाव में कहीं भी नहीं दिखाई दे रही थी।

अपने प्रदेश इकाई की कमजोरी को भांपते ही केंद्रीय नेतृत्व सक्रिय हो गया और छत्तीसगढ़ भाजपा की कमान गृहमंत्री अमित शाह ने अपने हाथों में ले ली। ओम माथुर और मनसुख मंडाविया प्रदेश संगठन से जुड़कर संगठन को मथते रहे। साथ ही साथ सामाजिक और जातिगत समीकरणों के तहत टिकट बांटने के फॉर्मूले पर काम किया जाने लगा। 2003 से 2023 तक जितने भी विधानसभा चुनाव हुए, उनमें 2013 के ट्रेंड को छोड़कर सभी में एक समान बात नजर आई। बस्तर और सरगुजा क्षेत्र, जहां कांग्रेस को पिछले चुनाव में सबसे ज्यादा बढ़त मिली वहां वोटिंग एकतरफा हुई। इस बार भी यह ट्रेंड बरकरार रहा, पर बाजी पलट गई। भाजपा को बस्तर की 12 सीटों में से 8 जबकि सरगुजा की 14 में से 14 सीटें पार्टी के खाते में आ गईं। सरगुजा का परिणाम इसलिए चौंकाने वाला है क्योंकि पिछली बार 14 की 14 सीटें कांग्रेस के पास थीं।

बहरहाल, नए और पुराने प्रत्याशियों का तालमेल कायम कर भाजपा ने सामाजिक और जातिगत समीकरणों के तहत टिकट बांटे जिसका सीधा फायदा पार्टी को मिला- 47 नए प्रत्याशी उतारे गए, जिनमें से 30 जीतकर आए। पार्टी ने तो मानो साहू समाज को एक तरीके से हाइजैक ही कर लिया था। बता दें कि प्रदेश की राजनीति में ओबीसी सबसे बड़ा वोट बैंक माना जाता है। यहां की कुल जनसंख्या का 52 फीसदी ओबीसी वर्ग से है। इसमें सबसे बड़ी संख्या साहू समाज की है। भाजपा ने खुलकर 10 टिकट साहू समाज को दिए। यही वजह है कि चुनाव में छत्तीसगढ़ का साहू समाज भाजपा के पक्ष में एकतरफा दिखा। इस बीच पार्टी ने कांग्रेस से पहले अपना घोषणापत्र जारी किया और महतारी वंदन योजना लेकर लोगों के घर पहुंचने की शुरुआत की। पार्टी के कार्यकर्ता फॉर्म लेकर घर-घर पहुंचने लगे और खासकर महिलाएं इस फॉर्म का इंतजार करने लगीं।

● **रायपुर से टीपी सिंह**

आदिवासी नेता को कमान

कहा जा रहा है कि विधायक दल की बैठक में मुख्यमंत्री का नाम तय होने के बाद दिल्ली से मुहर लगी। जैसा कि अटकलें लगाई जा रही थीं कि भाजपा किसी आदिवासी नेता को सूबे का मुख्यमंत्री बनाएगी। कहा ये भी जा रहा था कि किसी महिला नेता को भी मौका मिल सकता है। भाजपा ने इस बार किसी भी राज्य में मुख्यमंत्री का चेहरा प्रोजेक्ट नहीं किया था। छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री पद पर कई दावेदार थे। इसमें खुद रमन सिंह थे। साथ ही अरुण साव, ओपी चौधरी और रेणुका सिंह के नाम शामिल रहे। आदिवासी मुख्यमंत्री के रूप में पूर्व केंद्रीय मंत्री विष्णुदेव साय के साथ ही रेणुका सिंह का नाम आगे चल रहा था। बता दें कि छत्तीसगढ़ में सारे कयासों को पलटते हुए भाजपा ने शानदार जीत हासिल करते हुए 54 सीटें हासिल की हैं। जबकि कांग्रेस 34 सीटें जीत सकी। जून 2020 में भाजपा ने साय को छत्तीसगढ़ का अध्यक्ष नियुक्त किया था। इस पद पर वो अगस्त 2022 तक रहे। साथ ही रायगढ़ से चार बार (1999-2014) सांसद चुने गए। पहली नरेंद्र मोदी सरकार में केंद्रीय मंत्री बनाया गया। 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने उन्हें चुनाव मैदान में नहीं उतारा था। इसकी वजह ये थी कि छत्तीसगढ़ में भाजपा ने 2018 में राज्य विधानसभा चुनाव हारने के बाद अपने किसी भी मौजूदा सांसद को चुनाव नहीं लड़ाने का फैसला किया था।

नवाब को लेकर रार

महाराष्ट्र की राजनीति अक्सर चर्चाओं में रहती है। कभी शिवसेना तो कभी एनसीपी के दो फाड़ होने का मामला लगातार सुर्खियों में रहा है। इस बीच अब महाराष्ट्र की शिंदे-फडणवीस सरकार में तकरार नजर आने लगी है। कारण, डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने दूसरे डिप्टी सीएम अजित पवार को पत्र लिखकर नवाब मलिक को लेकर आपत्ति जताई है। उन्होंने कहा कि नवाब मलिक पर आरोप लग रहे हैं और उन्हें सत्तारूढ़ गठबंधन महायुति में शामिल करना सही नहीं होगा।

महाराष्ट्र के सताधारी गठबंधन (भाजपा-शिवसेना-एनसीपी-अजित पवार) में नवाब मलिक को शामिल करने को लेकर सवाल उठ रहे थे कि इसमें एनसीपी का विपक्षी खेमा भी कूद पड़ा है। शरद पवार गुट की सांसद और उनकी बेटी सुप्रिया सुले ने कहा है कि भाजपा ने नवाब मलिक के साथ गलत किया। दरअसल, डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने दूसरे डिप्टी सीएम अजित पवार को चिट्ठी लिखकर एनसीपी विधायक नवाब मलिक को सत्ताधारी महायुति गठबंधन का हिस्सा बनाने पर ऐतराज जताया था। नवाब मलिक केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई की वजह से ही जेल में थे। अब एनसीपी सांसद सुप्रिया सुले ने कहा है, नवाब मलिक के साथ भाजपा ने किया वह गलत है। नवाब मलिक ड्रग माफिया के खिलाफ लड़े। भाजपा भ्रष्ट जुमला पार्टी बन गई है और नवाब मलिक ने उसे लगातार बेनकाब किया है। जब तक दोषी साबित नहीं हो जाता हर कोई बेगुनाह है। तो भाजपा गलत आरोप कैसे लगा सकती है? मुझे विश्वास है कि अदालत न्याय देगी और नवाब मलिक को न्याय मिलेगा। हम उनके और उनके परिवार के साथ खड़े हैं। इससे पहले एनसीपी का दूसरा खेमा यानि अजित पवार ने कहा था कि जब नवाब मलिक अपना स्टैंड आधिकारिक रूप से साफ कर देंगे, तभी इस मसले पर वे अपनी बात रखेंगे। उन्होंने कहा, मुझे चिट्ठी मिली है। मैं अपनी बातें तभी रखूंगा जब मुझे पता चलेगा कि नवाब मलिक का आधिकारिक स्टैंड क्या है, विधानसभा में कौन कहां बैठता है ये मैं नहीं तय करता, यह फैसला स्पीकर करते हैं।

दरअसल, यह मामला इसलिए सामने आया है कि कहा जा रहा है कि नवाब मलिक अजित पवार गुट के साथ मिल गए हैं, जिसकी वजह से महाराष्ट्र में सत्ताधारी गठबंधन के बीच असहजता की स्थिति पैदा हो गई है। इसी वजह से आनन-फानन में फडणवीस ने अजित पवार को चिट्ठी लिख दी थी। अजित पवार ने फडणवीस की चिट्ठी के बाद जो प्रतिक्रिया दी है, उन्हीं के गुट के नेता अमोल मिटकरी की बातों में उससे अंतर नजर आ रहा है। उन्होंने कहा है, बैठने की व्यवस्था सरकार की ओर से की जाती है। जब विधानसभा के स्पीकर ने सीटिंग अरेंजमेंट की हैं तो मुझे लगता है कि उन्हें जरूर ज्यादा पता होगा। नवाब मलिक पार्टी के प्रवक्ता हैं और वरिष्ठ नेता हैं। एनसीपी के हमारे प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे ने स्थिति साफ कर दी थी। मैं इससे ठीक पहले अजित पवार से मिला, वे या पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता इस पर अपना स्टैंड साफ करेंगे। वैसे सुनील तटकरे ने कहा था कि नवाब मलिक वर्षों पुराने वरिष्ठ सहयोगी हैं। वह स्वास्थ्य के आधार पर जेल से बाहर आए हैं। उनसे हम मिले, लेकिन उसमें कोई राजनीतिक चर्चा नहीं हुई।

इस मसले पर शिवसेना (यूबीटी) ने भी सत्ताधारी गठबंधन के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। पार्टी की राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने नवाब मलिक को लेकर फडणवीस की ओर से अजित पवार को लिखी चिट्ठी को पाखंड बताया है। उन्होंने कहा, यह पाखंड है। उनके शब्दों और कार्यों में बहुत ज्यादा अंतर है...यह पाखंड इसलिए है कि वे सत्ता के मद में चूर हैं। जनता देख सकती है, भाजपा ने महाराष्ट्र में सत्ता के लिए जो समझौता किया है। लोग देख सकते हैं कि एकनाथ शिंदे ने अपनी पार्टी के साथ दगा किया है। लोग देख सकते हैं जो अजित पवार ने खुद को क्लीन चिट देने के लिए किया। इसलिए यह चिट्ठी पाखंड है।

गौरतलब है कि नवाब मलिक मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों में उद्धव ठाकरे सरकार में कैबिनेट मंत्री रहते हुए जेल गए थे। उन पर देश के विरोधियों से भी साठगांठ के आरोप लग चुके हैं। फिर भी उद्धव ने उनसे इस्तीफा नहीं लिया था। पिछले अगस्त में वह मेडिकल ग्राउंड पर जमानत लेकर जेल से बाहर आए हैं। इसी वजह से भाजपा उन्हें सत्ताधारी महायुति गठबंधन में शामिल करने पर आपत्ति जता रही है। लेकिन, नवाब मलिक के प्रति एनसीपी के दोनों गुटों के साथ-साथ उद्धव ठाकरे की शिवसेना का भी समर्थन दिख रहा है। 2004 में मलिक शरद पवार की एनसीपी में शामिल हो गए और नेहरू नगर सीट से जीत की हैट्रिक लगाई। 2009 के विधानसभा चुनाव में परिसीमन के बाद मलिक ने अणुशक्ति नगर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा और लगातार चौथी बार विधायक बने। 2014 के चुनाव में अणुशक्ति नगर सीट से शिवसेना के उम्मीदवार ने मामूली वोटों से हरा दिया था। 2019 के चुनाव में मलिक ने फिर चुनाव लड़ा और पांचवी बार विधायक बने। 2020 में वो एनसीपी मुंबई के अध्यक्ष भी बने। उन्हें एनसीपी प्रमुख शरद पवार का बेहद करीबी माना जाता है।

● **बिन्दु माथुर**

फडणवीस की चिट्ठी में क्या है?

दरअसल, नवाब मलिक को नागपुर में चल रहे महाराष्ट्र विधानसभा के शीतकालीन सत्र में सत्तापक्ष के साथ बैठे देखा गया था। इस पर विपक्ष ने खासकर भाजपा और उसके नेताओं को निशाना बनाना शुरू किया था। इसी के बाद फडणवीस ने अपने कैबिनेट सहयोगी अजित पवार को चिट्ठी लिखकर इस पर आपत्ति जताई और कहा कि नवाब मलिक जैसे नेताओं की वजह से गठबंधन में दिक्कतें पैदा हो सकती हैं। उन्होंने अपनी चिट्ठी में कहा था कि सत्ता आती-जाती रहती है। लेकिन, देश सत्ता से अधिक महत्वपूर्ण और सबसे ऊपर है। वे (नवाब मलिक) अभी सिर्फ मेडिकल ग्राउंड पर बेल पर बाहर हैं।

उप मुख्यमंत्री
महाराष्ट्र राज्य

रेत में खिला कमल

कांग्रेस के बहुत बड़े चेहरे चुनाव हारे

अलबत्ता, कांग्रेस के घर की अंदरूनी हालात बहुत खराब होने और सरकार के विधायकों के दबाव में होने से भाजपा की जीत की राह बहुत आसान रही। उसने 115 सीटें जीतीं, जो उसके पिछले प्रदर्शन से 42 सीटें ज्यादा हैं। इस चुनाव में कांग्रेस के बहुत बड़े चेहरे चुनाव हारे हैं और पराजित होने वाले मंत्रियों की तादाद 17 है, लेकिन इस बार सबसे अधिक चोट नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़ और उपनेता प्रतिपक्ष तथा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भाजपा सतीश पूनिया के साथ हुई है। ये दोनों चुनाव हार गए हैं। राठौड़ चुनावी राजनीति के अनूठे शिल्पकार हैं, लेकिन उनका हार जाना मानो उन्हें मुख्यमंत्री पद की दौड़ से बाहर कर देने वाला पहलू माना जा रहा है। सतीश पूनिया एक अलग शख्सियत हैं और वे भी मुख्यमंत्री पद की दौड़ के छुपे रुस्तम थे। कुछ लोगों का मानना है कि इस बार भाजपा के मुख्यमंत्री पद के कई दावेदारों को सलीके से निबटाया गया है। इनमें पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी जैसे लोग भी हैं, जिन्हें टिकट से ही वंचित कर दिया गया। पूनिया और राठौड़ जैसे नेताओं के साथ तो ऐसा हुआ मानो तुझे दुश्मनों की खबर न थी और मुझे दोस्तों का पता नहीं। तेरी दास्तां कोई और थी मेरा वाकया कोई और है।

राजस्थान के विधानसभा चुनाव में ओल्ड पेंशन स्कीम, 50 लाख रुपए तक का हेल्थ इंश्योरेंस, महिलाओं को मुफ्त फोन देने की स्कीम, विद्यार्थियों को फ्री लैपटॉप जैसी कितनी ही योजनाओं का शोरशराबा चुनाव नतीजों की शुरुआत में ही दिल-फरेब साबित हुआ और मतदाताओं ने कांग्रेस को हरा दिया। कांग्रेस ने सिर्फ सरकार नहीं खोई, अपनी सियासत के दोनों जहान भी खो दिए हैं। वह पहली बार इस तरह भाजपा के हिंदुत्व और सनातन के रंग में रंगी नजर आई और 200 सीटों वाली विधानसभा के लिए 199 उम्मीदवारों में से महज 69 को ही जिता पाई। पार्टी ने बात तो की मुहब्बत की दुकान की, लेकिन इस दुकान में भाजपा के हिंदुत्व और सनातन के सरोकारों वाला हर सामान लेकर वह बैठी थी। भाजपा ने 57 शहरी सीटों में से 38 सीटें जीती हैं जबकि ग्रामीण इलाकों की 143 सीटों में से 77 सीटें जीती हैं। यह बताता है कि भाजपा का आधार अब शहरी से ग्रामीण इलाकों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रभावी शो किए, शानदार सभाएं कीं और खूब गरजे-तरजे। अमित शाह और केंद्रीय नेताओं ने भी कमी नहीं रखी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे ने जमकर सभाएं कीं। पायलट ने सियासी जहाज उड़ाए और आखिर सत्ता के शीर्ष पद पर एक बार फिर लैंड करने से वंचित हो गए। भाजपा के एक अंदरूनी सूत्र बताते हैं कि प्रदेश की शीर्ष नेता और खास प्रभामंडल वाली वसुंधरा राजे की हालत मोदी-शाह युग में ऐसी है जो बहादुर शाह जफर की इस गजल की याद दिला दे- बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी, जैसी अब है तेरी महफिल कभी ऐसी तो न थी।

राजस्थान की राजनीति की बात आती है तो सबसे पहले जाति से ही कहानी शुरू की जाती है। कौन जाति किस उम्मीदवार या किस दल के पक्ष या विपक्ष में डटी है और इस बार जाति का ऊंट किस करवट बैठेगा? मानो विचार या विचारधारा की कोई जगह ही नहीं है। इस लिहाज से देखें तो कांग्रेस ने इस चुनाव में और खासकर भाजपा की विचारधारा की नकल करने के चक्कर में दोनों जहान हार कर शबे-गम की राह पकड़ ली है। 200 सीटों वाली विधानसभा के लिए इस बार 199 सीटों पर चुनाव हुआ है। गंगानगर जिले की करणपुर सीट के कांग्रेस उम्मीदवार का निधन हो जाने से वहां चुनाव प्रक्रिया थम गई थी। इन सीटों से वह दल सरकार बनाने के काबिल था जो 100 सीटें जीत लेता, लेकिन भाजपा ने इस बार 115 सीटें जीती हैं, जबकि कांग्रेस 69 सीटों पर सिमटकर रह गई है।

अगर हालात और हकीकत को जानना हो तो मतगणना के दिन के सुबह-सुबह के नजारे को याद करना भर पर्याप्त होगा। टोंक रोड के निकट एसएमएस हॉस्पिटल के पास कांग्रेस का वॉर रूम बना हुआ है, लेकिन उसमें एकदम सन्नाटा पसरा है। इस वॉर रूम कहलाने वाले परिसर के बाहर एक प्रहरी खड़ा है और कहता है कि भीतर कोई नहीं जा सकता; ये आदेश प्रदेशाध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा के हैं। सत्ता से जुड़ा पहला रुझान अभी आया भी नहीं है कि कांग्रेस के वॉर रूम नाम के इस मयकदे की वीरानी उदासियों की फेहरिस्त तैयार कर रही है। कांग्रेस के नेताओं में कोई उत्साह नहीं था कि वे सुबह-सुबह वॉर रूम में जाकर डटें, लेकिन पास ही दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित भाजपा कार्यालय में ही नहीं, आसपास भी भारी चहल-पहल थी और ऐसा लग रहा था कि बहार के दिन इधर चले आए हैं और कांग्रेस से रूठ गए हैं।

कांग्रेस समर्थक एक बुद्धिजीवी कहते हैं, देखो वोटर बड़े दिलफरेब निकले। इतनी सारी स्कीमें दी थीं। भाजपा को जिता दिया और कल्याणकारी योजनाएं लाने वाली सरकार को हरा दिया। वहीं मौजूद एक सज्जन चुटकी लेते हैं, सरजी, सारी तदबीरें उलटी हो गई हैं और दवा ने काम करना बंद कर दिया है। अब दवा ही दर्द बन गई है। आप तो शुक्र मानिए कि तेलंगाना ने नाक बचा ली, नहीं तो वह भी हाथ आ जानी थी। छत्तीसगढ़ और मप्र में कांग्रेस का न आना साफ बता रहा है कि कुछ तो हुआ है, जो कॉमन है। कुछ लोग बोल रहे हैं, यह तोहमत आम लोगों पर ठीक नहीं है कि अच्छी योजनाओं ने काम नहीं किया। असल में सच यह है कि राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पार्टी के बड़े नेता सचिन पायलट के बीच कशमकश दूर करने की कोशिश ही नहीं की गई। नतीजा यह निकला कि गुर्जर वोट हाथ से खिसक गया, जिन पर राज्य की 40 से ज्यादा सीटें जिताने या हराने का दारोमदार है। और क्या यह मौत का पैगाम नहीं था जब राजस्थान लोक सेवा आयोग से पेपर लीक हो रहे थे? प्रदेश में 20 लाख से अधिक युवाओं के साथ हो रहा खिलवाड़ सिर्फ किस्मत के तो भरोसे नहीं रह सकता था। कांग्रेस नेता सचिन पायलट लगातार आरपीएससी के पुनर्गठन की मांग कर रहे थे। यह आरोप मुखर होकर लगे कि राज्य में सत्तारूढ़ दल के मुखिया ने आयोग में काबिल और निर्विवादित लोगों की नियुक्तियों के बजाय अपने गिरोह के लोगों को उपकृत करने के लिए वहां भेज दिया है। कुछ खास नजदीकी लोगों की यह भी शिकायत है कि सरकार हर समय साथ रहते हैं, लेकिन न मिलते हैं कभी और न सुनते हैं कभी। इसी बात की एक मिसाल है चुनाव परिणाम के दिन वह चर्चित ट्वीट जो पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के ओएसडी और सोशल मीडिया संभालने वाली टीम के प्रभारी लोकेश शर्मा ने अपने हैंडिल से किया था।

● **जयपुर से आर.के. बिन्नानी**

क्या कतरे जाएंगे योगी के पर?

भाजपा में इन दिनों अंदरखाने बड़ी खलबली मची हुई है। दरअसल यह खलबली अपने ही नेताओं को किनारे लगाने की कोशिश को लेकर मची हुई है। आमतौर पर इन दिनों यह चर्चा हर जगह छिड़ी हुई है कि भाजपा की सबसे सफल जोड़ी और केंद्र की सत्ता की भी सबसे मजबूत जोड़ी यानी प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह विपक्षी नेताओं को जेल में डालना चाहते हैं। लेकिन एक और बड़ी जानकारी कथित तौर पर भाजपा और संघ के ही लोगों के बीच से छनकर बाहर आ रही है और वो यह है कि भाजपा और देश की सत्ता में सबसे ऊपर बैठी यह सबसे ताकतवर जोड़ी अपनी ही पार्टी के उन नेताओं को नहीं पनपने देना चाहती, जिनका रुतबा बढ़ रहा है। यह बात भले ही चौंकाने वाली लग रही होगी; लेकिन इसकी सच्चाई भाजपा के अंदर पड़ी दरारों को ध्यान से देखने और भाजपा नेताओं के बीच की कड़वाहट का गहनता से अध्ययन करने के बाद साफ-साफ नजर आने लगती है। दरअसल यहां इशारा उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर है, जिनका कद और रुतबा रात-दिन बढ़ता जा रहा है।

भाजपा और संघ के कथित सूत्रों की मानें, तो 3 दिसंबर को पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणाम सामने आने के बाद अब उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पर कतरे जा सकते हैं। हैरत की बात यह है कि गुजरात के बाद भाजपा का सबसे मजबूत गढ़ उप्र है, जिसके दम पर केंद्र की सत्ता किसी भी पार्टी को हासिल होती है। भाजपा भी उप्र के दम पर केंद्र में है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जब लोकसभा चुनाव लड़कर केंद्र की सत्ता में आना चाहते थे, तब उन्होंने उप्र के पौराणिक शहर वाराणसी को अपना चुनाव क्षेत्र चुना, जिससे केंद्र की सत्ता तक पहुंच सकें; और वह पहुंचे भी। लेकिन ऐसी चर्चा कहीं-न-कहीं अंदरखाने कानाफूसी के तौर पर चल रही है कि आज उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, जो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी पहले से लोकसभा के सदस्य हैं; गुजरात की जोड़ी को किसी कांटे की तरह खटकने लगे हैं। यह तब हो रहा है, जब योगी आदित्यनाथ के कंधे पर उप्र में लोकसभा चुनाव जिताने का दारोमदार रखा गया है और वह इसके लिए भरपूर मेहनत भी कर रहे हैं।

सूत्र बता रहे हैं कि मोदी-शाह को योगी आदित्यनाथ न सिर्फ एक खतरे के तौर पर दिख रहे हैं, बल्कि उनका यकीन योगी आदित्यनाथ पर से खत्म हो गया है और नियंत्रण भी कम होता जा रहा है। आपको याद दिला दें कि गुजरात की इस बड़ी जोड़ी, जिसकी वजह से कहीं-न-कहीं भाजपा केंद्र की सत्ता में आ सकी है; उसके और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बीच पहले भी अंदरखाने टकराव होता रहा है और इसके बाद कई बार सुलह-समझौते भी हुए हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि मोदी-शाह को योगी आदित्यनाथ से वैसे कोई दिक्कत नहीं है; लेकिन उनके बढ़ते कद को लेकर कहीं-न-कहीं दिक्कत है। क्योंकि यह बात पिछले कई साल से हो रही है कि योगी आदित्यनाथ भविष्य में प्रधानमंत्री बनेंगे। शायद यही बात मोदी-शाह को परेशान कर रही हो? हालांकि यह बात योगी के समर्थकों की ओर से आगे बढ़ी है; क्योंकि अभी तक उन्होंने इस बारे में न तो कुछ कहा है और न ही ऐसी कोई इच्छा अभी तक जाहिर की है। लेकिन इसके बावजूद अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के निशाने पर उप्र के मुख्यमंत्री हैं, तो इसका मतलब यह भी है कि उप्र में भाजपा के लिए आने वाले समय में मुश्किलें खड़ी होंगी।

बिहार में नीतीश कुमार की मास्टर स्ट्रोक कही जाने वाली जातीय जनगणना के आधार पर माना जा रहा है कि उप्र में भी पिछड़ों और दलितों की संख्या तकरीबन 60 से 65 फीसदी ही है। ऐसे में आलाकमान ने पिछड़ी जाति से आने वाले केशव मौर्य को इशारा कर दिया है कि वह प्रदेश में जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी भागीदारी के आधार पर माहौल बनाकर मांग उठाएं कि मुख्यमंत्री भी पिछड़ा होना चाहिए। जानकारों का मानना है कि इसी रणनीति के तहत पिछले दिनों मुख्यमंत्री योगी द्वारा अयोध्या में बुलाई गई मंत्रिमंडल की बैठक से केशव प्रसाद मौर्य नदारद रहे। इसके अलावा कई कार्यक्रमों और बैठकों से भी केशव मौर्य का नदारद रहना जताता है कि उन्हें कहीं-न-कहीं दिल्ली से इशारा कर दिया गया है। सवाल यह है कि क्या मोदी-शाह की जोड़ी योगी आदित्यनाथ को किनारे लगाकर 2024 में वो लक्ष्य हासिल कर सकेगी, जो खुद भाजपा के दिग्गज नेता ऐलान कर चुके हैं? यानी क्या भाजपा 2024 में 400 से ज्यादा लोकसभा सीटें जीतने का लक्ष्य हासिल कर सकेगी? क्या योगी को किनारे करके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उप्र फतह कर पाएंगे?

● **लखनऊ से मधु आलोक निगम**

तनातनी बनी रही

राजनीति के कुछ जानकार मानते हैं कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हिंदुओं के सबसे पसंदीदा यानी ब्रांड नेता बन चुके हैं, और उनके समर्थक उन्हें हिंदू सम्राट कहने लगे हैं और उनकी यही छवि उनके लिए सबसे बड़ा खतरा बन रही है। दरअसल प्रधानमंत्री मोदी के बाद योगी के नाम के नारे दूसरे प्रदेशों में भी लोग लगाने लगे हैं और यह बात भी कहीं-न-कहीं केंद्रीय जोड़ी को खटकने लगी है। कहा जा रहा है कि भले ही पिछले 6 वर्षों से योगी आदित्यनाथ उप्र के मुख्यमंत्री बने हुए हैं; लेकिन वहां नियुक्तियां और तबादले अमूमन मोदी-शाह की जोड़ी के मन मुताबिक ही होते रहे हैं। चाहे वो अधिकारियों की नियुक्ति का मामला हो या फिर उप्र मंत्रिमंडल में मंत्रियों के गठन का मामला हो। गौरतलब है कि कई अधिकारियों की तैनाती में योगी और केंद्रीय जोड़ी में तनातनी भी बनी रही, क्योंकि जिस अधिकारी को योगी पसंद करते थे, उसे केंद्र की तरफ से रिजेक्ट कर दिया जाता था और जिसे केंद्र सरकार नियुक्त करना चाहती थी, उसे योगी आदित्यनाथ पसंद नहीं करते थे, जिसके चलते काफी समय तक अंदरखाने तनातनी का दौर चला है। और ये वाकिया कोई एक बार नहीं, कई-कई बार सामने आया है; लेकिन इसकी चर्चा मीडिया में नहीं हुई। जाहिर है मामला यहीं नहीं थमा, बात इतनी बढ़ी कि केंद्रीय जोड़ी ने उन लोगों को भी एनडीए का हिस्सा बनाया, जिन्हें योगी आदित्यनाथ पसंद नहीं करते थे, और शायद आज भी नहीं करते हैं।

राहुल-नीतीश में उलझी बिहार कांग्रेस

बिहार कांग्रेस के एक और विधायक ने नीतीश कुमार के हाथ में नेतृत्व देने की बात कहकर बिहार की राजनीति में हलचल मचा दी है। यह कोई पहली बार नहीं, कुछ ही दिन पहले कांग्रेस की एक और महिला विधायक ने नीतीश कुमार को पीएम का उम्मीदवार बताते हुए कहा था कि 2024 का लोकसभा चुनाव नीतीश कुमार के नेतृत्व में होना चाहिए। इन बयानों के सापेक्ष देखें तो प्रदेश कांग्रेस दो धड़ों में बटी नजर आ रही है। एक धड़ा राहुल गांधी को पीएम बनाना चाह रहा है और दूसरा धड़ा नीतीश कुमार को। कांग्रेस की विधायक नीतू सिंह के बाद बक्सर विधायक सुनील तिवारी उर्फ मुन्ना तिवारी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पीएम बनाने के लिए मोर्चा खोल लिया है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन का नेतृत्व करेंगे तो ज्यादा बेहतर परिणाम आएंगे। मकर संक्रांति के बाद नीतीश कुमार को महत्वपूर्ण पद देकर इंडिया गठबंधन का नेतृत्व सौंप देना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं कि आगामी लोकसभा चुनाव 2024 अगर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ा जाएगा तो बेहतर परिणाम आएगा।

नवादा जिले के हिसुआ से कांग्रेस की विधायक नीतू सिंह ने कहा कि पार्टी को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में 2024 का लोकसभा चुनाव लड़ना चाहिए। विधायक नीतू सिंह पांच राज्यों के चुनाव परिणाम में मिली हार के बाद प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही थीं। मेरा तो विश्वास है कि कांग्रेस को बड़ा दिल दिखाना चाहिए और इंडिया गठबंधन का नेतृत्व नीतीश कुमार को सौंप देना चाहिए। नीतीश कुमार लगातार बिहार में हर क्षेत्र में अच्छे काम कर रहे हैं। इंडिया अगर नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़े तो बेहतर होगा। यह गठबंधन के लिए और देश के लिए अच्छा रहेगा। नीतू सिंह यहीं नहीं रुकीं, उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने देश में विपक्षी दलों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह गठबंधन का नेतृत्व करने में सक्षम हैं।

जदयू के कई मंत्रियों और प्रवक्ताओं ने नीतीश कुमार को पीएम बनाने का राग अलापने के बाद यह मुहिम कांग्रेस के भीतर से भी शुरू हो गई। विधायक नीतू सिंह और मुन्ना तिवारी की ओर से नीतीश कुमार को पीएम बनाने के बाद यह साफ हो गया कि पीएम मुहिम को लेकर दो धाराओं में बंट गई है। कांग्रेस के भीतर एक धड़ा राहुल गांधी को पीएम बनाना चाहता है। इस मुहिम में कांग्रेस का एक धड़ा राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की उस मुहिम के साथ खड़ा है जो लगातार इंडिया गठबंधन की बैठक में किसी न किसी बहाने राहुल गांधी को पीएम बनाने का राग छेड़ ही देते हैं। चाहे वह राहुल को दूल्हा बनाने की बात हो या पीएम का नाम सांसद करेंगे। कांग्रेस का एक धड़ा राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद को कांग्रेस सम्मानित करती है। लालू प्रसाद को सोने का मुकुट पहनाती है और श्रीकृष्ण सिंह के जन्मदिन पर मुख्य अतिथि भी बनाती है। वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस के विधायक नीतू सिंह और मुन्ना तिवारी ने नीतीश कुमार के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव 2024 लड़ने का सुझाव देती है और साथ यह भी कहा जाता है कि मकर संक्रांति के बाद नीतीश कुमार के हाथ इंडिया गठबंधन की बागडोर सौंप दी जाए।

लगातार 18 साल से बिहार का सीएम बनते रहे नीतीश कुमार ने पहले ही घोषणा कर दी है कि 2025 का बिहार विधानसभा चुनाव आरजेडी नेता और डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। संकेत साफ है कि 2025 से नीतीश सीएम की कुर्सी पर नहीं रहेंगे। वे पीएम भी नहीं बनेंगे। एक बार नहीं, कई बार वे इस बात को दोहरा चुके हैं। वे लोकसभा चुनाव लड़ने के बारे में भी तो जुबान ही नहीं खोलते। इसके ठीक उलट उनकी पार्टी के नेता उन्हें पीएम मटेरियल कहते हैं। पीएम पद के लिए परफेक्ट फेस बताते हैं। पोस्टरों और प्रतीकों के जरिए उन्हें पीएम के रूप में दिखाने की लगातार कोशिश भी करते रहे हैं। इन सबके बावजूद नीतीश कुमार ने पिछले छह महीनों से अपनी सियासी सक्रियता बढ़ा दी है। पार्टी नेताओं, सांसदों-विधायकों के साथ कई दौर की मीटिंग, जाति सर्वेक्षण की रिपोर्ट और पांच राज्यों के हाल ही संपन्न चुनावों के ऐन पहले आरक्षण का ऐलान नीतीश इतनी हड़बड़ी में करते रहे हैं कि इससे उनकी असल मंशा का पता नहीं चलता। गतिविधियों को देखकर सिर्फ कयास ही लगाए जा सकते हैं। इसी बीच नीतीश की वाराणसी और रामगढ़ रैली की घोषणा भी हो गई। यह अलग बात है कि नीतीश को रैली के लिए उनकी मांगी जगह देने से उप्र के शासन-प्रशासन ने मना कर दिया। नीतीश कुमार को अकेले रैली करने की घोषणा क्यों करनी पड़ी, यह बात किसी की समझ में नहीं आ रही। इसलिए कि नीतीश कुमार विपक्षी एकता के प्रबल पैरोकार और सूत्रधार रहे हैं। उन्हीं की पहल पर पहली बार तकरीबन डेढ़ दर्जन विपक्षी दलों के नेता इस साल 23 जून को पटना में जमा हुए थे। यह नीतीश की सांगठनिक क्षमता का सबसे बड़ा उदाहरण था कि कांग्रेस से सदा छत्तीस का आंकड़ा रखने वाले आम आदमी पार्टी (आप) के नेता अरविंद केजरीवाल, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की प्रमुख और बंगाल की सीएम ममता बनर्जी जैसे लोग एक मंच पर बैठने को तैयार हुए। नीतीश के नाम की संयोजक के रूप में घोषणा भले नहीं हुई हो, पर वास्तव में उन्होंने संयोजक का ही काम अब तक किया है। यह बात सभी जानते हैं। गठबंधन के आरंभ से अब तक की हर बैठक में वे शामिल होते रहे हैं। मोदी को शिकस्त देने वाले बड़े रणनीतिकारों में वे शामिल रहे हैं। इसके बावजूद उन्होंने अलग अकेले रैलियों का ऐलान किया तो जरूर इसकी कोई बड़ी वजह होगी।

● **विनोद बक्सरी**

क्या चल रहा है कांग्रेस के भीतर

दरअसल, कांग्रेस के भीतर अंतर्कलह चरम पर है। यही वजह भी है कि प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश सिंह नए संगठन की रूप रेखा तक तैयार नहीं कर पाए हैं। पार्टी के भीतर अनुशासन भी नहीं रह गया है। इस वजह से जिसे जो भा रहा है उसके पक्ष में बयान दे रहा है। कांग्रेस के शीर्ष नेता या प्रवक्ताओं से बात करेंगे तो उनका रटा-रटाया बयान आता है यह उनका व्यक्तिगत बयान है, यह पार्टी का नहीं है। सच्चाई यह भी है कि जिस दिन श्रीकृष्ण सिंह की जयंती के दिन राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया था, कांग्रेस दो फाड़ हो गई थी। यह पहला वक्त था जब लालू प्रसाद सदाकत आश्रम आए थे। नतीजतन राजद सुप्रीमो जब नीतीश कुमार को इंडिया गठबंधन से अलग-थलग करने लगे तो कांग्रेस के भीतर से ही दूसरे धड़े ने नीतीश कुमार का न केवल समर्थन किया, बल्कि उन्हें पीएम का उम्मीदवार तक बता डाला।

एलएसी पर सैन्य निष्क्रियता

युद्ध में बड़ी तेजी के बिना उभरे संकट

2017 में राष्ट्रीय सुरक्षा और अपनी सार्वजनिक छवि की खातिर किए गए वैचारिक निवेशों के चलते मोदी ने भूटान की सहमति से उसके डोकलाम इलाके में चीन द्वारा सड़क निर्माण में मोदी ने अचानक हस्तक्षेप किया। इसके बाद 73 दिनों तक गतिरोध की स्थिति रही, दोनों तरफ से सेना की तैनाती बढ़ाई गई। यह संकट कूटनीतिक वार्ताओं के जरिए खत्म किया गया, लेकिन डोकलाम में दखलअंदाजी रणनीतिक भूल थी। चीन को शर्मसार होना पड़ा। उसने जो लक्ष्मण रेखा खींची थी उसका उल्लंघन हुआ। मोदी ने इसे सार्वजनिक तौर पर जीत के रूप में पेश किया, मगर वुहान और महाबलीपुरम में अनौपचारिक शिखर बैठकें करके मामले को संभालने की हताश कोशिश की। लेकिन यह बेकार साबित हुई, क्योंकि सत्ता तो बंदूक की नली से निकलती है! नेहरू की तरह मोदी ने भी, आर्थिक मजबूरियों के चलते और अधिक आश्चर्य की बात यह कि इच्छाशक्ति की कमी के चलते, भारतीय सेना को चीनी सेना की बराबरी के लिए तैयार करने के लिए बहुत कुछ नहीं किया। चीन ने जब पूर्वी लद्दाख में संकट पैदा कर दिया तो मोदी ने खुद को उसी स्थिति में पाया जिस स्थिति में नेहरू 1962 के युद्ध के बाद थे।

इस विडंबना की अनदेखी कर देना बहुत मुश्किल है। चीन के साथ भारत के आर्थिक संबंध खूब फल-फूल रहे हैं, लेकिन सीमाओं पर स्थिति खतरनाक बनी हुई है, दोनों देशों ने वहां अपनी-अपनी सेना की भरी तैनाती कर रखी है। अप्रैल 2020 के अंत तक भारत जिस 1,000 वर्ग किलोमीटर इलाके में गश्त करता था और जिस इलाके पर उसका नियंत्रण था उस पर अब चीन ने मजबूती से कब्जा जमा लिया है। दोनों देशों के बीच कूटनीतिक गतिविधियां ठप पड़ी हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चर्चित कूटनीतिक कौशल चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग पर कोई प्रभाव नहीं डाल पाया है, न ही उन्होंने सैन्य कार्रवाई के जरिए मई 2020 से पहले वाली स्थिति बहाल करने की कोई राजनीतिक इच्छा शक्ति दिखाई है। यह सब मोदी की करीब एक दशक से जारी चीन नीति का दुखद परिचय ही देता है। इस दशक का अंत वैसा नहीं हुआ है, जैसा 1947 से 1962 के बीच की अवधि का हुआ था- युद्ध में पराजय और अपनी 38,000 वर्ग किमी जमीन गंवाने के रूप में, लेकिन चीन जबकि सीमा पर दबदबे वाली स्थिति में है तब यथास्थिति को चुपचाप स्वीकार करना भारत के सम्मान और मोदी की विरासत के लिए अच्छी बात नहीं है। चीन, भारत को अपने बराबर नहीं मानता बल्कि आर्थिक और सैन्य मामलों में प्रतियोगी मानता है। 1950 के दशक से उसकी रणनीति एक जैसी रही है। आर्थिक और सैन्य मामलों में अंतर का लाभ उठाकर वह भारत पर अपनी धौंस कायम करना चाहता है, सीमा विवाद का जबरन अपने हक में निपटारा करता है और जब भी जरूरी लगे अपनी मनमानी चलाने के लिए ताकत का इस्तेमाल करना चाहता है। भारत ने जब तक अंतरराष्ट्रीय मंच पर या सीमा पर उसकी स्थिति को सीधे चुनौती नहीं दी थी तब तक उसने भारत के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे।

पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने चीन की इन शर्तों को नहीं माना। उन्होंने भारत को दुनिया के मंच पर एक स्वतंत्र खिलाड़ी के रूप में प्रस्तुत किया, बावजूद इसके कि उसकी अपनी राष्ट्रीय ताकत सीमित थी। उन्होंने लद्दाख के अग्रिम क्षेत्रों में आगे बढ़ो (फॉरवर्ड पॉलिसी) की जो नीति अपनाई या पूर्व नेफा (अब अरुणाचल प्रदेश) का जो गठन किया, उसके कारण 1959 में सीमा पर झड़पें हुईं। बाद में, अपनी बड़ी लोकप्रियता और संसद में बहुमत के बावजूद नेहरू ने जनता और संसद के दबाव में अधिक आक्रामक फॉरवर्ड पॉलिसी अपनाने का फैसला किया और लड़ाई लड़ने की भूल कर बैठे, जबकि अपनी सेना की तैयारी आधी-अधूरी थी और इसके लिए सीमा पर इन्फ्रास्ट्रक्चर भी नहीं था।

1962 में भारत की बुरी पराजय के बावजूद सीमा पर चीन की मौजूदगी निरंतर बनी रही है। लद्दाख में वह 1959 वाली दावा रेखा को मानता है, जिसे उसने 1962 में अपने कब्जे में कर लिया था। उत्तर-पूर्व में वह पूरे अरुणाचल प्रदेश पर अपना दावा करता है, इसके बावजूद वह मैकमोहन लाइन को वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) मानता है, लेकिन उसकी और भारत की व्याख्या में 5-10 किमी का अंतर है क्योंकि छोटे-से नक्शे पर मोटी लिखने वाली कलम से रेखा खींची गई है। 1959-60 में चीन ने यह जो समझौता पेश किया था वह 2005 तक चला। इसके बाद भारत की कथित आक्रामकता के कारण इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। 2008 तक, नाथु ला और सुमडोरांग में सैन्य तनातनी के बावजूद चीन ने सीमा पर और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपना दबदबा बनाए रखा, लेकिन अमेरिका के साथ भारत की उभरती रणनीतिक साझेदारी, 2008 में उसके साथ परमाणु संधि पर दस्तखत और 2007 के बाद से सीमा पर इन्फ्रास्ट्रक्चर में विकास को चीन ने सुरक्षा मामले में अपने लिए चुनौती के रूप में देखा। उसने सीमा पर अपनी दावेदारी पर और ज्यादा जोर देना शुरू किया, उदाहरण के लिए देपसंग के मैदानी इलाके में 2013 में की गई घुसपैठ को लिया जा सकता है।

राष्ट्रवादी विचारधारा से ओत-प्रोत भाजपा अखंड भारत के सपने देखती रही है, जो कि नए संसद भवन में लगे भित्तिचित्र से उजागर है। इसलिए, चीन और पाकिस्तान के अवैध कब्जे में पड़ी भारतीय जमीन को वापस हासिल करना राष्ट्रीय सुरक्षा के उसके लक्ष्य में हमेशा से समाहित रहा है। लेकिन, नेहरू की तरह मोदी को भी एहसास हो गया है कि चीन को चुनौती देने के लिए भारत को आर्थिक और सैन्य रूप से मजबूत होना होगा। इसलिए, मोदी ने चीन से सुरक्षा संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए कूटनीतिक और आर्थिक संबंधों का सहारा लेने का फैसला कर लिया है। मोदी की दीर्घकालिक रणनीति यह रही है कि भारत को आर्थिक और सैन्य दृष्टि से इतना सक्षम बनाया जाए कि वह चीन को चुनौती दे सके और सीमा विवाद को अपनी शर्तों पर निपटा सके। अपनी पार्टी की विचारधारा और एक मजबूत नेता की अपनी छवि के अनुरूप उन्होंने चीन को सावधान करने के लिए सीमा पर इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास और मजबूत सैन्य रुख अपनाने पर जोर दिया है। शी जिनपिंग के साथ लेन-देन वाला रिश्ता बनाने के लिए लिए उन्होंने व्यक्तिगत कूटनीति पर काफी जोर दिया और 2020 से पहले उनसे 18 बार मिले। गौरतलब है कि मोदी के कार्यकाल के पहले तीन वर्षों में दोनों देशों के आर्थिक और कूटनीतिक संबंध शिखर पर पहुंच गए थे।

● **ऋतेन्द्र माथुर**

शी जिनपिंग का नारीवाद

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग इन दिनों नारियों और नारीवादियों के निशाने पर हैं। चीनी महिलाएं उनके उस बयान से काफी नाराज हैं, जिसमें उन्होंने वहां की युवतियों और अकेली महिलाओं से बच्चे पैदा करने के लिए शादी करने की अपील की है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा है कि परिवार का नया ट्रेंड स्थापित करने में महिलाओं की भूमिका समाज में सबसे अहम है। गौर करने वाला बिंदु यह है कि राष्ट्र प्रमुख ने हाल ही में बीजिंग में आयोजित नेशनल वुमेन कांग्रेस की बैठक में यह बयान दिया। यह इकाई चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के अंतर्गत काम करती है और हर पांच साल में एक बार ऐसी बैठक का चीन में आयोजन किया जाता है। सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी लंबे समय से इस मंच का इस्तेमाल महिलाओं के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त करने के लिए करती आ रही है। पूर्व में ऐसे मौकों पर चीनी महिलाओं की घरेलू व कामकाजी दोनों भूमिकाओं पर अधिकारिक बयान आते थे; लेकिन इस बार शी जिनपिंग के संबोधन में कार्यस्थल पर महिलाओं वाला मुद्दा नदारद था और उनका सारा जोर शादी करके बच्चे पैदा करने पर था। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि हमें सक्रिय होकर शादी की नई संस्कृति और बच्चे पैदा करने वाली संस्कृति को प्रोत्साहित करना चाहिए। यही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि युवाओं की प्रेम व शादी, बच्चे पैदा करने और परिवार संबंधी विचारों को लेकर जो भी राय है, उस राय को प्रभावित करने में पार्टी के अधिकारियों को अपनी भूमिका निभानी चाहिए। दरअसल शी जिनपिंग की इस चिंता के पीछे चीन के सामने खड़ा आर्थिक व सामाजिक संकट है। चीन इस बात से भी भयभीत है कि जिस तरह विश्व में उसके खिलाफ घेरेबंदी की जा रही है, उससे दुनिया की फैक्ट्री का तमगा उसके हाथ से छिन सकता है। विश्व में उसके प्रति अविश्वास का माहौल गहराता जा रहा है और दूसरी तरफ घरेलू मोर्चे पर भी कई चुनौतियों का सामना चीन कर रहा है। इसमें प्रमुख वजह वहां जनसंख्या वृद्धि दर का कम होना है। चीन अब आबादी के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर आ गया है और भारत पहले नंबर पर। चीन के राष्ट्रीय सांख्यिकी ब्यूरो ने इस साल के शुरुआत में एक जानकारी साझा की थी। इसमें कहा गया है कि पिछले 6 दशक में पहली बार जनसंख्या में गिरावट आई है। इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया था कि देश की आबादी बड़ी तेजी से बूढ़ी होती जा रही है। गौरतलब है कि चीन ने पहले जो एक बच्चा नीति अपनाई और सख्ती से उस पर अमल किया, उससे इस देश में कई जनसांख्यिकीय बदलाव आए। चीन ने सन् 2016 में दो बच्चा नीति लागू की। लेकिन बहुत कम समय में इसके विपरीत नतीजे उसके सामने आने लगे। इस योजना के अपेक्षित नतीजे सामने नहीं आने पर सन् 2021 में चीन तीन बच्चा नीति की पैरवी करने पर उतर आया।

इन दो वर्षों में चीन ने बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई कदम उठाए; पर सफलता नहीं मिली। इस असफलता से चीन प्रमुख शी जिनपिंग व सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी मौजूदा चिंता में हैं। लेकिन क्या यह किसी तरह महिलाओं को बच्चे पैदा करने व उनके पालन-पोषण की ओर धकेलना नहीं है? इसमें महिलाओं की मर्जी के बिना भी उनका शोषण होगा व उन्हें जबरदस्ती बच्चे पैदा करने के लिए बाध्य किया जा सकता है। शी जिनपिंग ने नेशनल वीमेन कांग्रेस में महिला नेताओं को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वे महिलाओं को परिवार से जुड़ी अच्छी कहानियां सुनाएं और उनका मार्गदर्शन करें कि वे चीन के पारंपरिक गुणों को किस तरह आगे लेकर जा सकती हैं। यह हकीकत है कि चीन में महिलाएं बच्चे पैदा करने से बच रही हैं और ऐसे में बच्चे भी कम पैदा हो रहे हैं। इस देश में बच्चों को पालना व उन्हें अच्छी शिक्षा देना बहुत महंगा है। इसके साथ ही लैंगिक भेदभाव व युवा पीढ़ी में शादी न करने का रुझान भी कारण हैं। ऐसे में शी जिनपिंग को महिलाओं से अपील करने के बजाय पारिवारिक संस्कृति पर जोर देना चाहिए और महिलाओं को इसके लिए सम्मानित व पुरस्कृत करना चाहिए। दरअसल चीन में महिलाएं घर से बाहर निकलकर काम करने पर फोकस कर रही हैं। लेकिन वहां सत्ताधारी सरकार व पितृप्रधान समाज, दोनों ही उनके दमन में खड़े हो जाते हैं। लेकिन महिलाओं का एक वर्ग ऐसा है, जो इस तरह के दमन के खिलाफ संघर्षरत है। बहरहाल सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी, खासकर शी जिनपिंग और चीन की नारियां व नारीवादी एक बार फिर आमने-सामने हैं।

● **कुमार विनोद**

जिनपिंग की गलती

चीन को राष्ट्रपति शी जिनपिंग की कार्यशैली भारी पड़ रही है। पिछले साल कम्युनिस्ट पार्टी की नेशनल कांग्रेस के बाद चीन पर जिनपिंग की पकड़ और मजबूत हुई है। पार्टी से लेकर सरकार तक पर उनका जैसा नियंत्रण है, वैसा माओ त्से तुंग के बाद नहीं देखा गया था। इसके साथ ही चीन की इकॉनोमी और उसकी विदेश नीति में राष्ट्रवादी रंग ज्यादा ही गाढ़ा होने लगा है। जिनपिंग के इस तेवर की तुलना भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के तेवर से की जाने लगी है। कहा जा रहा है कि जिनपिंग उसी तरह की गलती करते नजर आ रहे हैं, जैसी कभी इंदिरा ने की थी। 1960 के दशक में इंदिरा गांधी ने कांग्रेस के पुराने नेताओं यानी सिंडिकेट से दो-दो हाथ किया था। उसके साथ ही इंदिरा ने निर्णायक रूप से वाम रुझान को अपना लिया। 1969 में उन्होंने 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इसके बाद 1970 के दशक के शुरुआती दिनों में कोयला खनन का भी राष्ट्रीयकरण हो गया। इंदिरा गांधी ने 1971 में राजा-महाराजाओं को दिया जाने वाला प्रिवी पर्स भी बंद कर दिया। इन सभी कदमों को मिलाकर देखें तो भारत में समाजवाद शबाब पर आ गया। ये वही दिन भी थे, जब इनकम टैक्स रेट 99 प्रतिशत तक हुआ करता था।

मप्र में आत्मनिर्भर हो रही महिलाएं

महिलाएं जितनी आत्मनिर्भर बनेंगी देश भी उतनी ही तेजी से आगे बढ़ेगा। खासकर ग्रामीण इलाकों में रहने वाली महिलाओं के सशक्तिकरण की आवश्यकता की जरूरत आज भी बरकरार है। ग्रामीण इलाकों में रहने वाली महिलाओं का जीवन हमेशा से पारिवारिक कामों में ही सिमटकर रह जाता है। लेकिन समय के बदलते स्वरूप और शिक्षा तकनीकी के प्रभाव ने महिलाओं को एक नई उड़ान दी है। आज गांव की महिलाएं भी घरों से बाहर निकल कर आत्मनिर्भर बन रही हैं। इसका असर यह देखने को मिल रहा है कि मप्र में कामकाजी महिलाओं की संख्या में अप्रत्याशित रूप से बढ़ोतरी हुई है। यह राष्ट्रीय औसत 61.6 से करीब 6 प्रतिशत से भी ज्यादा है। चीन का औसत 75.6 फीसदी है। भारत में 83.2 प्रतिशत पुरुष व 39.8 प्रतिशत महिलाएं किसी न किसी काम धंधे से जुड़े हैं। पिछले पांच सालों में इसमें काफी बढ़ोतरी हुई है। पांच वर्ष पहले 2017-18 में राष्ट्रीय औसत 53 प्रतिशत ही था। इसमें भी पुरुष 80.2 प्रतिशत तथा महिलाओं की संख्या महज 25.3 प्रतिशत थी।

गौरतलब है कि एक दशक पहले तक मप्र में महिलाएं रोजगार से काफी दूर थीं। लेकिन सरकारी योजनाओं और शिक्षा का सहारा लेकर उन्होंने आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाया। इसका परिणाम यह हुआ कि मप्र में कामकाजी महिलाओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी है। आज आलम यह है कि मप्र में 86.8 प्रतिशत पुरुष व 47.8 प्रतिशत महिलाएं किसी न किसी काम-धंधे से जुड़े हैं। सबसे अधिक संख्या महिलाओं की करीब 22 प्रतिशत बढ़ी है। मप्र में पिछले 10 वर्षों में काफी कुछ परिवर्तित हुआ है। महज पांच वर्ष पहले की ही बात करें तो मप्र में महिलाओं के रोजगार का स्तर अंसतोषजनक था। 100 महिलाओं में से महज 25 महिलाओं को रोजगार मिला था, यानी 75 महिलाएं बेरोजगार थीं। उनके पास कोई भी धंधा नहीं था। किंतु इसमें बढ़ोतरी हुई और पांच साल में ही यह राष्ट्रीय औसत से भी ऊपर निकल गया।

कोरोनाकाल के बाद आज की स्थिति में करीब 50 फीसदी महिलाएं किसी न किसी तरह के काम धंधे, खासकर ऑफिस कार्य, कृषि, उद्योग धंधे आदि सभी तरह के कार्यों में संलग्न हैं। दरअसल, अभी हाल ही में भारत की श्रम बल सहभागिता दर (एलएफपीआर) की वार्षिक रिपोर्ट जारी हुई है। इसमें 18 वर्ष के ऊपर तथा 60 वर्ष के नीचे के पुरुष व महिलाओं के रोजगार के स्तर को दर्शाया गया है। इसी के तहत पौडियाट्रिक लेबर फोर्स सर्वे (पीएलएफएस) की भी रिपोर्ट जारी हुई। इसमें कई तरह की जानकारी दी गई है। भारत की श्रम बल सहभागिता दर (एलएफपीआर) में बढ़ोतरी हुई है, जो 2017-18 के 53 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022-23 में औसत 61.6 प्रतिशत हो गई है। इसमें पुरुषों की एलएफपीआर 83.2 प्रतिशत है और महिलाओं की 39.8 प्रतिशत है। रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं के कामकाजी बल में बढ़ती सहभागिता का पता चलता है। इसमें बढ़ती एलएफपीआर का मतलब यह भी हो सकता है कि यदि पर्याप्त रोजगार का सृजन नहीं होता है, तो रोजगार में बढ़ोतरी नहीं हो सकती। मप्र में एलएफपीआर 67.8 प्रतिशत है, जो कि राष्ट्रीय औसत से ऊपर है, लेकिन यहां पर महिला और पुरुष की एलएफपीआर में बड़ा अंतर है। इन आंकड़ों का गहराई से विश्लेषण करने पर मप्र में कामकाजी महिलाओं व पुरुषों के रोजगार की वास्तविक स्थिति और प्रदेश के आर्थिक स्वास्थ्य को समझ सकते हैं।

महिलाओं के लिए आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के कई फायदे हैं। जब एक महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती है तो वो बेहतर तरीके से अपने परिवार को हर तरह से सपोर्ट कर पाती है। महंगाई के इस युग में केवल एक इंसान की सैलरी से घर चलाना आसान नहीं होता। ऐसे में महिला की आमदनी घर खर्च को काफी आसान बना देती है। जब महिलाएं कमाई खुद करती हैं तो उन्हें हर छोटे-बड़े खर्चे के लिए पति से परमिशन मांगने की जरूरत नहीं पड़ती। वह खुद पर खर्च भी कर सकती हैं। जो महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती हैं उन्हें घर-परिवार में अधिक सम्मान मिलता है। हालांकि, यह सच है कि एक गृहिणी का कार्य अधिक कठिन होता है लेकिन फिर भी हमारे समाज में उनके काम को अहमियत नहीं दी जाती। लेकिन अगर आप आत्मनिर्भर हैं तो रिश्तेदार और पड़ोसी भी आपको एक सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। हमारे देश में अधिकतर महिलाएं ऐसी हैं जिन्हें घरेलू हिंसा का शिकार होना पड़ता है और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होने की वजह से अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठा पातीं। लेकिन अगर आप आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं तो आपको अन्याय सहन करने की आवश्यकता नहीं होती। जब महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती हैं तो उनमें अधिक आत्मविश्वास होता है। यह आत्मविश्वास उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए हर क्षेत्र में प्रोत्साहित करता है। यही नहीं, वो अपने परिवार और बच्चे के भविष्य के लिए बेहतर विकल्प ढूंढने और निर्णय लेने में सक्षम होती हैं।

● **ज्योत्सना**

मप्र में 47.8 फीसदी महिलाएं कामकाजी

देशभर के एलएफपीआर की बात करें तो सबसे अधिक रोजगार हिमाचल प्रदेश में है। वर्ष 2022-23 की एक रिपोर्ट के अनुसार यहा 86.2 प्रतिशत पुरुष व 76.6 फीसदी महिलाओं को रोजगार मिला हुआ है। यह देश में सबसे अधिक है। जबकि सबसे कम रोजगार लक्षद्वीप में है। यहां 81.6 प्रतिशत पुरुषों को रोजगार मिला है, जबकि महज 20 प्रतिशत महिलाएं ही रोजगार में हैं। सबसे अधिक रोजगार वाले राज्यों में दूसरे नंबर पर सिक्किम है। यहां 84.6 प्रतिशत पुरुष और 711 प्रतिशत महिलाएं रोजगार में हैं। यह औसत 18.1 प्रतिशत है। छत्तीसगढ़ तीसरे नंबर पर है। मप्र इस मामले में 9 वें नंबर पर है। मप्र में 86.8 फीसदी पुरुष व 47.8 फीसदी महिलाएं किसी न किसी काम-धंधे से जुड़ी हैं। यह औसत 67.8 प्रतिशत है। महिला व पुरुषों के रोजगार के मामले में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की स्थिति कई राज्यों की स्थिति से भी खराब है। यह बिहार व दिल्ली में एक जैसा है। बिहार में रोजगार की दर 5098 जबकि दिल्ली का महज 50.4 फीसदी है। दिल्ली में महज 16 फीसदी महिलाओं को रोजगार मिला हुआ है। बिहार में यह 23.9 फीसदी है। इसी से आंकलन किया जा सकता है कि देश की राजधानी दिल्ली में रोजगार का स्तर किस तरह से है।

बड़े भाग मानुष तनु पावा

संवाद का ऐसा सांगोपांग निर्वहन संसार के किसी स्मृति साहित्य में नहीं मिलेगा, जो श्रीरामचरितमानस में है। पूरा मानस भक्त काकभुशुंडि और ज्ञानी पक्षीराज गरुड़ के बीच का संवाद है। भक्त काकभुशुंडि वक्ता हैं और ज्ञानी गरुड़ श्रोता हैं। भक्त प्रतिपादन कर रहा है और ज्ञानी जिज्ञासा कर रहा है। भक्त के प्रतिपादन में भावना का वह समुद्र लहराता है, जिसमें तनिक भी खारापन नहीं होता है और ज्ञानी की जिज्ञासा में कुतर्क का अभाव होता है। भक्त और ज्ञानी दोनों का परम उद्देश्य रामराज्य है, जो आचरण के उपादान के बगैर संभव नहीं है।

समग्र रामकथा श्रवण के पश्चात पक्षीराज गरुण काकभुशुंडि जी से सात प्रश्नों की जिज्ञासा करते हैं। पहला प्रश्न पूछते हुए वह कहते हैं कि सबसे दुर्लभ शरीर कौन सा है? काकभुशुंडि जी उत्तर देते हैं कि मनुष्य शरीर सबसे दुर्लभ है, क्योंकि मैंने स्वयं भी इसी शरीर के रहते भगवान और उनकी भक्ति को पाया है। वह कहते हैं कि मनुष्य तन ही वह उपलब्धि है, जो मोक्ष सुख का अनुभव भी करा सकता है। स्वर्ग के सुख को लोग भले ही श्रेष्ठ मानते हों, पर अंत में वह भी अल्प है और दुख का कारण बनता है। तब भक्ति रस का प्रतिपादन करते हुए वह कहते हैं कि...

नर तन सम नहिं कबनेउ देही।
जीव चराचर जांचत जेही।।
एहि तनु राम भगति मैं पाई।
तांतें मोहि ममता अधिकाई।।

भक्त के जीवन में जो प्राप्त शरीर है, वह भी आराध्य को पाने का उपादान होने के कारण पूज्य हो जाता है। संसार में भी किसी व्यक्ति के सहयोग से यदि हमें कुछ विशेष उपलब्धि हो गई हो तो हम जीवन भर उसके कृतज्ञ रहते हैं, उसी प्रकार काकभुशुंडि जी कह रहे हैं कि शरीर मिथ्या तो तब होगा, जब इसका उद्देश्य भोगों की प्राप्ति हो, पर जब वही शरीर भगवत प्राप्ति का साधन बन जाए तो वह अपने अभीष्ट को पाकर धन्य हो जाता है। प्रमाण रूप में वे अपना अनुभव प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि मैंने मनुष्य शरीर में रहते ही भगवान शिव की कृपा से धन्यता प्राप्त की थी, पर जो कृपालु शिव जिन बालक राम को अपने हृदय में धारण करते हैं, उनको ही मैंने अपना ईश्वर माना है।

वह कहते हैं, मेरे इस भाव परिवर्तन से मेरे परमकृपालु सदाशिव विश्वनाथ मुझ पर और भी अधिक प्रसन्न हो गए। उन्हें लगा कि मेरे इस भक्त (काकभुशुंडि) का प्रवेश मेरे हृदय में हो गया है और इसने देख लिया कि मेरे इष्ट तो बालक राम हैं, जो अयोध्या में दशरथ के अजिर में मालपुआ लेकर घूमते रहते हैं। काकभुशुंडि जी हमें और आपको यह बताना चाहते हैं कि जब उन्होंने कौआ होकर भी भगवान को पा लिया तो हम लोगों के भाग्य के लिए तो शब्द ही नहीं हैं। प्रभु श्रीरामचंद्र जी ने स्वयं भी समस्त चराचर के कल्याण के लिए मनुष्य का ही शरीर धारण कर लिया है। वे कहते हैं कि इस शरीर को पाने का मात्र एक ही लाभ है कि व्यक्ति भगवान का भजन करे। भक्त काकभुशुंडि ने मनुष्य शरीर से भजन करने के प्रताप और फल को बताते हुए कहा कि ज्ञानी ऋषि लोमश ने मेरे अंदर भक्ति के प्रति पक्षपात देखकर भले ही मुझे अपनी दृष्टि से कौआ बनने का श्राप दिया था, पर वह मेरे लिए वरदान हो गया। इसका श्रेय वे भगवान के भजन के प्रभाव को देते हैं:-

भगति पच्छ हठ करि रहेउं दीन्ह महारिषि श्राप।
मुनि दुर्लभ बर पायउं देखहु भजन प्रताप।।

महत्व इसका नहीं है कि हम किस शरीर, किस देश, किस जाति और धर्म के हैं। काकभुशुंडि जी कहते हैं कि महत्वपूर्ण यह है कि हम भगवान की भक्ति और भजन कर रहे हैं या नहीं? भजन ही शरीर का प्राण है, क्योंकि गुरु वशिष्ठ जी कहते हैं:-

प्रान प्रान के जीव के जिव सुख के सुख राम।
तुम्ह बिनु तात सुहात गृह जिन्हहिं तिन्हहिं बिनु बाम।।

गोस्वामी जी ने इस बात पर जोर दिया है कि जिसने इस धरा पर जन्म लेकर भगवान का भजन कर लिया, बस वही धन्य है:-

सोइ विजयी विनयी गुन सागर,
जासु सुजसु त्रैलोक उजागर।

उसी की विजय होती है, वही संसार में सबके प्रति विनयी होता है, वही गुणों की खान होता है और सारे विश्व में उसी का यश त्रैलोक्य में उजागर होता है, जिसने जन्म लेकर भगवान के दिए हुए इस शरीर का सदुपयोग कर लिया। यही स्वयं भगवान ने कहा है कि :-

बड़े भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।
पाइ न जेहिं परलोक संवारा।।

यह मनुष्य शरीर बड़े भाग्य से मिला है। सब ग्रंथों ने यही कहा है कि यह शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है। यह साधन का धाम और मोक्ष का दरवाजा है। इसे पाकर भी जिसने परलोक न बना लिया तो फिर यही कहेंगे कि :-

सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताई।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाई।।

प्राप्त शरीर और साधनों का जो सदुपयोग न करे, वही नास्तिक है। ऐसा नास्तिक आस्तिकता को आरोपित करते हुए काल, कर्म, स्वभाव और गुणों को दोषी बताकर अपना सिर धुनता रहता है और जीवन भर पछताता है। भगवान का भक्त अपनी इंद्रियों का उपयोग पर दोषों के दर्शन में न करके भगवान की कृपा के दर्शन में करता है, जो सत्संगी मति के अभाव में संभव नहीं है। रावण के वध के पश्चात ब्रह्मा जी ने भगवान की स्तुति करते हुए कहा कि धन्य हैं ये सब वानर, जिन्होंने पशु शरीर पाकर भी आपकी सेवा करके जीवन में कृतकृत्यता पा ली। यदि हम देवता शरीर पाकर भी भगवान की भक्ति से दूर रहें तो हमारे जीवन को धिक्कार है। मनुष्य शरीर ही वह सीढ़ी है, जिसको उठाकर कहीं भी लगाया जा सकता है। स्वर्ग, नर्क और मोक्ष कुछ भी मिल सकता है। यहां तक कि सद् और असद् का ज्ञान तथा असद् का त्याग करके सद् को स्वीकारने वाला वैराग्य भी इसी शरीर नसेंनी से ही संभव हो जाता है :-

सरग नरक अपवर्ग नसेंनी।
ग्यान बिराग भगति सुख देनी।।

काकभुशुंडि जी ने मनुष्य शरीर की महिमा का मानस में बहुत विस्तार से वर्णन किया है। संवाद की यही गरिमा है, जिसमें ज्ञानी भक्त बन गया और भक्त ज्ञानी बनकर एक-दूसरे में पूर्णता देखने लगे। दूसरे में पूर्णता और गुणों का दर्शन करना ही संवाद का सुफल है।

● **ओम**

अर्थ का अनर्थ

हिन्दी भाषा में कभी-कभी वर्तनीगत अशुद्धियां कैसे अर्थ का अनर्थ कर देती हैं, वह इस कहानी से स्पष्ट हो जाएगा।

हमने बड़े ही प्यार और सम्मान से अपने पुत्र के नामकरण संस्कार का कार्ड प्रोफेसर साहब को दिया। कार्ड पढ़ते ही उन्होंने कार्ड स्वीकार करने से इनकार कर लौटा दिया। हमने आश्चर्यचकित हो इनकार का कारण पूछा।

प्रोफेसर साहब ने बताया, कार्ड के मुताबिक आप तो कार्यक्रम में कुत्तों को बुला रहे हैं। मैं क्या करूंगा वहां?

हम बोले, सर आप तो मजाक कर रहे हैं?

प्रोफेसर साहब बोले, बिल्कुल नहीं। मैं एकदम सीरीयस हूं। आप कार्ड देखिए, इसका दूसरा ही शब्द श्वजन लिखा है, जिसका मतलब है कुत्ते। उचित होता कि इसके स्थान पर स्वजन लिखा जाता, जिसका मतलब है-अपने लोग।

हम बोले, ओह, तो ये बात है। इस बार गलती हो गई सर। आइंदा ध्यान रखेंगे। अब तो आमंत्रण पत्र स्वीकार कर लीजिए।

प्रोफेसर साहब बोले, पहले आप पेन से इसे सुधारिए। फिर कार्ड दीजिए। मुझे ही नहीं, सभी आमंत्रित लोगों के कार्ड में सुधार कर आमंत्रण पत्र बांटिए।

हमने आश्वस्त किया और प्रोफेसर साहब को सुधरा हुआ कार्ड दिया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया।

- डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा

नारी की जंग जारी है

नारी नित मुश्किल से लड़ती,
संघर्षी है नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,
पर दुख पाता नारी जीवन।।
कर्म निभाती है वो तत्पर,
हर मुश्किल से लड़ जाती।
गहन निराशा का मौसम हो,
तो भी आगे बढ़ जाती।।
पत्नी, मां के रूप में सेवा,
तो क्यों खलता नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,
पर दुख पाता नारी जीवन ।।
संस्कार सब उससे चलते,
धर्म नित्य ही उससे खिलते।
तीज-पर्व नारी से पोषित,
नीति-मूल्य सब उसमें मिलते।।
आशा और निराशा लेकर,
नित ही पलता नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,
पर दुख पाता नारी जीवन।।
वैसे तो हैं दो घर उसके,
पर सब कुछ बेमानी।
फर्ज और कर्मों से पूरित,
नारी सदा सुहानी।।
त्याग और नित धैर्य,
नम्रता, संघर्षों में नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,
पर दुख पाता नारी जीवन।।

- प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे

ऑनलाइन संदेश

देविका के सुपुत्र में कोई कमी नहीं थी। सुंदर, सुशील, ज्ञानवान, उच्च शिक्षित था उसका सलोना।

सीखने-सिखाने का हुनर भी ऐसा कि सब देखते ही रह जाएं! उच्च शिक्षा के बावजूद भी जाने क्यों उसे नौकरी से वंचित होना पड़ रहा था! खाने-पीने की कमी नहीं थी। सीखने-सिखाने का हुनर भी ऑनलाइन क्लास के माध्यम से उसके काम आ रहा था। फिर भी स्थाई नौकरी की दरकार तो थी ही! देवी की पुजारिन देविका हर रोज देवी मां से उसकी नौकरी की गुहार भी करती थी। सलोना जगह-जगह अप्लाई भी कर रहा था।

प्रभु जब देने पर आता है तो, छप्पर फाड़कर भी दे देता है। एक दिन एक ऑनलाइन संदेश ने सबको चौंका दिया! वर्क वीजा के साथ विदेश में अच्छी नौकरी, अच्छी पगार, तुरंत जॉइन करने के लिए टिकट भी तैयार!

सलोने को और क्या चाहिए था! हां करके तुरंत जाने की तैयारी में जुट गया!

- लीला तिवानी

वीपीएल की अनकैप्ड करोड़पति

वीमेंस प्रीमियर लीग यानी वीपीएल के दूसरे संस्करण में खिलाड़ियों की नीलामी हो चुकी है। इस सीजन में एक ओर जहां ऑस्ट्रेलियाई आलराउंडर सदरलैंड और कर्नाटक की आलराउंडर काशवी गौतम 2-2 करोड़ रुपए के साथ सबसे महंगी खिलाड़ी रहीं तो कई खिलाड़ी अपने बेस प्राइस से कई गुना ज्यादा कीमत पर बिकीं। काशवी को गुजरात जायंट्स ने 2 करोड़ तो वृंदा को यूपी वॉरियर्ज ने 1.3 करोड़ में खरीदा। वहीं सबसे बड़ा आश्चर्य श्रीलंका की कप्तान चमारी अट्टापट्टू के लिए हुआ। वो भी तब जब पिछली बार डब्ल्यूवीपीएल में वह दूसरी सबसे अधिक रन बनाने वाली बल्लेबाज रही थी। वह एक्लेरिड राउंड में भी जगह पाने में कामयाब नहीं हो पाईं। 50 लाख के बेस प्राइस में आक्शन में शामिल होने वाली ड्रिएंड्रा डॉटिन, किम गार्थ को भी खरीददार नहीं मिले। जबकि स्कॉटलैंड की कैथरीन ब्रेस ऐसोसिएट देश की अकेली ऐसी खिलाड़ी बनी जिनको 10 लाख में गुजरात ने खरीदा।

दूसरी तरफ एकता बिष्ट पर आरसीबी ने 60 लाख की बोली लगाई जो कैप्ड भारतीय खिलाड़ियों में सबसे अधिक रही। इसके अलावा वेदा कृष्णमूर्ति को गुजरात और एस मेघना को आरसीबी ने उनके बेस प्राइस 30 लाख में खरीदा। भारतीय खिलाड़ियों में देविका वैघ को भी कोई खरीददार नहीं मिला। लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा भारत की अनकैप्ड खिलाड़ी काशवी गौतम और वृंदा दिनेश की हो रही है। काशवी डिमांड में रहीं क्योंकि उन्होंने लगातार अपनी गेंदबाजी और डेथ ओवरों में बल्लेबाजी से प्रभावित किया है। पिछले दिनों खेली गई महिला टी-20 ट्रॉफी में उन्होंने सात मैचों में 4.14 की इकॉनामी से 12 विकेट लिए थे। वह इंडिया ए में भी चुनी गई और जून में हांगकांग में हुई एसीसी एमर्जिंग टूर्नामेंट की अंडर-23 टीम का भी हिस्सा रहीं।

काशवी की तरह, वृंदा भी चयनकर्ताओं और स्काउट्स के रडार पर रही हैं। अगस्त में वृंदा ने सभी पांच फ्रेंचाइजी के साथ ट्रायल किया। उनके लिए गृह राज्य की फ्रेंचाइजी आरसीबी ने सबसे पहले बोली लगाई इसके बाद गुजरात भी आगे आई, लेकिन अंत में वह 1.3 करोड़ रुपए में यूपी वॉरियर्ज के साथ गईं। पिछले दो घरेलू सीजन में वृंदा ने पावर हिटर के तौर पर नाम कमाया है। 22 साल की उम्र में वह इंडिया-ए के लिए चुनी गई और इंग्लैंड-ए के लिए तीनों मैच खेलीं। इस साल की शुरुआत में उन्होंने कर्नाटक को सीनियर महिला वनडे टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। वह टूर्नामेंट में पांचवीं सबसे अधिक रन बनाने वाली बल्लेबाज थीं, जिसमें सेमीफाइनल में राजस्थान के खिलाफ 81 रन की पारी भी शामिल थी। ऑस्ट्रेलिया की फीब लिचफील्ड पहली खिलाड़ी थी जिन्हें गुजरात जायंट्स ने 1 करोड़ रुपए में खरीदा। बाएं हाथ की यह बल्लेबाज जिसने 2019 में 16 साल की उम्र में सनसनी फैलाई थी। उन्होंने इस डब्ल्यूबीबीएल सीजन में भी काफी रन बनाए थे। इसके अलावा डैनी वायट को यूपी वॉरियर्ज ने उनके बेस प्राइज और कैट क्रॉस को आरसीबी ने खरीदा। साउथ अफ्रीका की तेज गेंदबाज शबनिम इस्माइल को मुंबई इंडियंस ने 1.2 करोड़ में खरीदा। एक साक्षात्कार में वृंदा ने कहा, जब मैं नेट्स में बॉलिंग कर रही थीं, तब साथी खिलाड़ी शिशिरा गौडा टीम एनालिस्ट माला रंगास्वामी के कान में कुछ बोलते नजर आईं। वृंदा को लगा कि कुछ बड़ा हुआ है। इसके बाद पूरी कर्नाटक टीम उन्हें बधाई देने के लिए पहुंच गईं। वृंदा ने बताया, हम ट्रेनिंग कर रहे थे, मैं बॉलिंग कर रही थी। मैंने मेरी टीम-मेट को दूसरी साथी से बात करते सुना, उन्होंने 1.30 में ले लिया है। मैं बीच में आई और पूछा क्या, क्या! 1.3 लाख? तो उन्होंने जवाब दिया नहीं। मैं भी जानती थी कि 1.3 लाख तो नामुमकिन है। फिर मैंने पूछा, क्या? 1.3 करोड़' तब उसने कहा, हां। तब अचानक से सभी बल्लेबाज, विकेटकीपर मेरे पास आए और मुझे गले लगा लिया। वृंदा अनकैप्ड भारतीय खिलाड़ी हैं, उन्होंने इंटरनेशनल डेब्यू नहीं किया है। उनकी बेस प्राइस 10 लाख थी और किसी को उम्मीद नहीं थी कि उनकी कीमत 1 करोड़ को छू जाएगी। लेकिन वह 1.30 करोड़ रुपए में बिकीं और सभी को चौंकाकर इस ऑक्शन की तीसरी सबसे महंगी खिलाड़ी बन गईं। वृंदा की वीपीएल में एंट्री का सबसे बड़ा कारण घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन और वीपीएल टीम को दिए ट्रायल्स रहे। पहले सीजन के बाद वीपीएल टीमों ने ऑफ सीजन ट्रायल्स रखे, इनमें वृंदा भी शामिल हुईं। हिस्सा लेने के कारण टैलेंट हंट स्काउट्स का ध्यान वृंदा पर गया और ऑक्शन में उन पर बोली लग गई। वृंदा ने बताया कि जून में उन्हें सभी पांच फ्रेंचाइजी ने ट्रायल के लिए बुलाया। इससे पहले स्काउट्स ने हांगकांग में एसीसी विमेंस एमर्जिंग टीम कप टूर्नामेंट के फाइनल में उनकी बैटिंग भी देखी थी। एसीसी विमेंस एमर्जिंग टीम एशिया कप टूर्नामेंट का फाइनल इंडिया और बांग्लादेश के बीच खेला गया था। फाइनल मुकाबले में उन्होंने 29 बाल में 36 रन की पारी खेली और भारत की जीत में अहम रोल निभाया। वृंदा इस टीम का शुरू से हिस्सा नहीं थी, एस यशस्त्री के चोटिल होने के बाद उन्हें टीम में शामिल किया गया। फाइनल की प्लेइंग-11 में भी उनके शामिल होने की संभावनाएं बहुत कम लग रही थीं, लेकिन समय पर मुस्कान मलिक ग्राउंड में नहीं पहुंच पाई थी तो वृंदा को मौका मिल गया। इस साल वृंदा ने डोमेस्टिक वनडे टूर्नामेंट में भी अपने प्रदर्शन से सभी को प्रभावित किया। सीनियर वनडे में वृंदा तीसरी टॉप रन स्कोरर रहीं। उन्होंने 11 परियों में 477 रन बनाए हैं।

● **आशीष नेमा**

इस बार बदलेगा स्वरूप

गौरतलब है कि पिछले साल वीपीएल का पहला संस्करण केवल मुंबई में दो स्थानों पर खेला गया था और वर्तमान में इंग्लैंड महिला टीम के खिलाफ खेली जा रही टी-20 सीरीज का आयोजन भी सिर्फ मुंबई में ही किया जा रहा है। पिछली बार महिला प्रीमियर लीग के मुकाबले 4 मार्च से शुरू हुए थे। वहीं, 26 मार्च को लीग का फाइनल मुकाबला खेला गया था जो मुंबई इंडियंस ने जीता था। इस बार वीपीएल लीग के दूसरे संस्करण के मुकाबलों को लेकर संभावना जताई जा रही थी कि इस बार इसका आयोजन अलग-अलग प्रदेशों में होगा लेकिन अब बताया जा रहा है कि महिला प्रीमियर लीग का दूसरा सीजन अगले साल 22 फरवरी से 17 मार्च के बीच खेला जा सकता है। यह जानकारी बीसीसीआई की ओर से सभी फ्रेंचाइजियों को दे दी गई है। हालांकि आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। संभवतः जनवरी में इस लीग का पूरा शेड्यूल सामने आ सकता है। इस बीच बीसीसीआई सचिव जय शाह ने नीलामी के बाद कहा कि यह तय हो गया है कि हम फरवरी में इस टूर्नामेंट का आयोजन करेंगे।

राज कपूर को जब रूस में नहीं मिला सम्मान, महसूस होने लगी तगड़ी बेइज्जती... फिर जो हुआ फटी रही गईं थी शोमैन की आंखें

बॉलीवुड के शो मैन कहे जाने वाले राज कपूर साहब भले आज हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनके फिल्मी किस्से लोग आज भी याद करते हैं। राज कपूर की शोहरत भी कई देशों में थी। लेकिन जब वे रूस पहुंचे तो लोगों ने उन्हें कोई भाव नहीं दिया। ये बात उनके दिल पर लग गई और उन्हें तगड़ी बेज्जती महसूस होने लगी।

दरअसल, राज कपूर की फिल्म आवारा भारत में रिलीज हो चुकी थी और भारत में इस फिल्म को लेकर उनकी खूब वाहवाही हो रही थी। राज कपूर को लग रहा था कि जैसे उन्हें भारत में स्टारडम मिल गया है, विदेश में भी वैसे ही लोग उनके दीवाने होंगे। प्रतिनिधि-मंडल जब मॉस्को पहुंचा तो औपचारिक रूप से उसकी आवभगत की गई। सभी को एक नामी होटल में ठहराया गया। रूस के संस्कृति-मंत्री द्वारा प्रतिनिधियों का स्वागत किया गया और उनके मॉस्को घूमने-फिरने की पूरी व्यवस्था की गई।

फिल्म समारोह चूंकि दो दिन बाद शुरू होने वाला था, इससे मॉस्को के गली-कूचों, वहां की सांस्कृतिक धरोहरों को जानने समझने का मौका भारत के प्रतिनिधि-मंडल के पास था। सभी खुश थे, लेकिन राज कपूर को ये रास नहीं आ रहा था। दरअसल, राज कपूर ये मान चुके थे कि उनकी आवारा को देखने के बाद भीड़ जुटेगी, उनसे मिलने के लिए फैंस पागल हो जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

ये सब देख राज कपूर हताश और निराश हो गए। उन्होंने अपने साथ गए लोगों से यह कहना शुरू कर दिया कि वहां रुकने में अब उनका कोई फायदा नहीं है और उन्हें अब अपने देश भारत वापस जाना है। निराश राज साहब को देख हालांकि बिमल दा और ख्वाजा साहब जैसे अनुभवी साथियों ने उन्हें यह समझाने की कोशिश भी की कि कम से कम 1-2 दिन का इंतजार तो वह कर लें, लेकिन वह अपनी पुरानी रट में लगे ही रहे। और फिर आई वो शाम जब आवारा का प्रीमियर हुआ। राज कपूर की उस फिल्म को देखने के बाद रूस से उन्हें भरपूर प्यार मिलना शुरू हो गया। दर्शक राज कपूर के ऐसे दीवाने हो उठे। वहां मौजूद उनके फैंस ने उनकी कार को उठाया और उनकी कार को होटल ले गए। होटल में घुसना मुश्किल था। दर्शक होटल के एंट्री पर आवारा के गीत-संगीत से झूम रहे थे। दर्शको का ये प्यार देखने के बाद राज कपूर की आंखे फटी की फटी रह गईं थी।

फ्लॉप फिल्मों का बादशाह रहा नामी एक्टर का बेटा! खिला रहा कबड्डी

बॉलीवुड में एक के बाद एक स्टार किड्स इंडस्ट्री में दस्तक दे रहे हैं। ऐसे कई स्टारकिड हैं जो फ्लॉप रहे हैं, लेकिन एक नामी एक्टर के बेटे इस लिस्ट में टॉप पर हैं। इनका जब जन्म हुआ, तब इनके पिता ब्लॉकबस्टर फिल्मों के सुपरस्टार बन चुके थे, मां भी नामी एक्ट्रेस थीं। मां-पिता की तरह इन्होंने भी फिल्मों में एंट्री ली, लेकिन पहली ही फिल्म डिजास्टर साबित हुई। पिता का नाम बड़ा था, तो फिल्मों के ऑफर भी मिले, लेकिन करियर में अब तक वो मुकाम हासिल नहीं कर सके, जो पिता ने हासिल कर लिया है। यहां बात हो रही है महानायक अमिताभ बच्चन के बेटे यानी अभिषेक बच्चन की। अभिषेक ने अपने करियर में 60 से ज्यादा फिल्मों में काम किया, जिसमें से 38 फ्लॉप रही हैं।

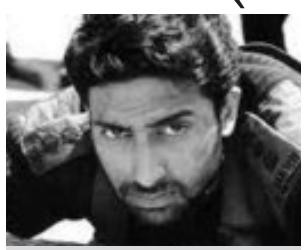

हिट से ज्यादा फ्लॉप, लेकिन बेहतरीन कलाकार... फिल्में भले हिट ज्यादा नहीं दी हों, लेकिन इसमें कोई दोराह नहीं कि अभिषेक बच्चन एक बेहतरीन कलाकार हैं। धूम, गुरु और बंटी और बबली जैसी हिट फिल्मों में काम किया है। उन्होंने दसवीं और घूमर जैसी फिल्मों में काम कर क्रिटिक्स और ऑडियंस से वाहवाही बटोरी है। इसके अलावा, वेब सीरीज ब्रीद इनटू द शैडोज से ओटीटी डेब्यू किया। ओटीटी पर आई स्कैम के लिए भी उन्हें खूब सराहा गया था।

काजोल पर लट्टू है साउथ का सुपरस्टार, अजय देवगन से है 36 का आंकड़ा

काजोल को लेकर साउथ के एक सुपरस्टार में ऐसी दीवानगी है कि इन्हें अजय देवगन से तक जलन होने लगी थी। हम बात कर रहे हैं साउथ सुपरस्टार किच्चा सुदीप की, जो साउथ सिनेमा का जाना-माना नाम हैं। किच्चा सुदीप की साउथ में जबरदस्त फैन फॉलोइंग है, लेकिन इन्हें पसंद हैं बॉलीवुड की बबली एक्ट्रेस काजोल। एक इंटरव्यू में जब किच्चा सुदीप से पूछा गया कि उन्हें काजोल इतनी पसंद क्यों हैं। तो जवाब में किच्चा ने कहा कि- क्योंकि वो काजोल हैं और यही वजह है कि मुझे अजय देवगन से जलन होती है।

क्या थी अजय देवगन से मिलने की वजह...एक इंटरव्यू में जब किच्चा सुदीप से पूछा गया कि वह किन 2 बॉलीवुड एक्ट्रेस के साथ काम करना चाहते हैं, तो जवाब में किच्चा सुदीप ने फिर काजोल का नाम लिया और कहा कि 1 से लेकर 9 तक में काजोल का ही नाम है। वहीं एक इंटरव्यू में वह कह रहे हैं कि काजोल को लेकर 20-25 साल से उनका जवाब नहीं बदला है। कुछ इंटरव्यूज में किच्चा सुदीप काजोल के साथ काम करने की भी इच्छा जाहिर कर चुके हैं। एक इंटरव्यू में उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा था कि वह सिर्फ और सिर्फ अजय देवगन से इसलिए मिले थे, ताकि काजोल का नंबर ले सकें।

बलम बिकै चाहे सौत बिकै

युग-युग से चली आ रही प्रथाओं और परंपराओं को यूं ही नहीं भुलाया जा सकता। ये प्रथाएं और परंपराएं आदमी का संस्कार बन जाती हैं। बन भी चुकी हैं। 1976, 1977 में बाबा नागार्जुन के उपन्यासों पर शोध कार्य करते समय पढ़ा था कि उनके रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ आदि हिंदी-उपन्यासों में बिकौवा प्रथा का गुणगान डंके की चोट पर किया गया है। इसके लिए बिहार के मिथिलांचल में वहां के मैथिल ब्राह्मणों द्वारा विधिवत मधुबनी जिले में प्रतिवर्ष सौराठ के मेले नाम से एक बृहत आयोजन किया जाता है। इस मेले में विवाहार्थी पुरुष और वरार्थी कन्याओं के पिता एकत्र होते हैं। वे अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार वहां से लड़कियों को अपनी दुलहिन बनाने के लिए खरीद लाते हैं। इसीलिए इसे बिकौवा प्रथा कहा जाता है। उनके द्वारा साठ-सत्तर या इससे अधिक आयु में ग्यारह-ग्यारह या इक्कीस-इक्कीस शादियां करना स्वाभाविक बात मानी जाती रही है। जब एक-एक पुरुष बहु विवाह करेगा तो यह स्वाभाविक ही है कि बच्चे भी ज्यादा ही उत्पन्न होंगे। और यदि लड़कियों की संख्या अधिक हो गई तो उन लड़कियों को जरूरतमंदों को बेच देना और कुछ धन अर्जित कर लेना उनकी आवश्यकता ही बन जाती है। ऐसे-ऐसे भी युवा महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन में इक्यावन शादियां कीं और एक नए इतिहास की स्थापना की। यह तथ्य कोई कपोल-कल्पना नहीं है।

आज हमारा महान भारतवर्ष भी उन प्राचीन प्रथाओं और परंपराओं का निर्वाह बखूबी करने में जुटा हुआ है। यहां स्व-अस्मिता से लेकर हर भौतिक और अभौतिक वस्तु किंवा तत्व की दुकानें खुली हुई हैं। बराबर व्यापार चल रहा है। बेचने-खरीदने के लिए क्या कुछ शेष है? लोगों के ईमान कब से बिकते चले आ रहे हैं। संतान बिकना सामान्य-सी बात हो गई है। स्वयं मां-बाप, हॉस्पिटल की नर्सें, दलाल किसी की संतान को जरुरतमंद लोगों को बेचकर पुण्यार्जन कर रहे हैं। वे रात के अंधेरे में निसंतान को सन्तानवती और संतानवान बनाने में जुटे हुए हैं। मानो विधाता का काम उन्होंने भी संभाल लिया है। बल्कि कहना ये चाहिए कि विधाता का काम हलका कर दिया है।

आटा, दाल, सब्जी, मसाले, गुड़, चीनी, फल, फूल, दवाएं आदि की खरीद-फरोख्त अब घिसी-पिटी बात हो चुकी है। अब तो हम और आप इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि ऐसी-ऐसी चीजें भी देश के बृहत बाजार में बिक रही हैं, बिक चुकी हैं और रही-बची बिकने के लिए तैयार की जा रही हैं। ये बिकौवा प्रथा निश्चय ही महान है। बैंक, बीमा, स्टेशन, हवाई अड्डे, रेलगाड़ी, सड़कें, पटरियां, पुल, सीमेंट, सरिया, स्टील, चारा, पेट्रोलियम पदार्थ आदि-आदि क्या कुछ नहीं बिका या बिक रहा! बस खरीदार चाहिए। जैसा विक्रेता वैसा ही क्रेता भी हो, तो बात बने। अंग्रेजों ने व्यापार के लिए आकर ही तो देशभर को खरीद लिया! पुरानी परंपराएं सहज नष्ट नहीं हो पातीं। जैसा युग वैसी खरीद-बिक्री। अब सोचिए भला आलू-गोभी बेचने वाला बेचारा कुंजड़ा क्या खाकर रेलगाड़ी या स्टेशन बेचेगा या खरीदेगा। विक्रेता और क्रेता की औकात भी तो तदनुरूप होनी चाहिए।

अपनी आन-बान और शान की रक्षा के लिए आदमी व्यापार करता है अर्थात् बेचने-खरीदने का धंधा करता है। आज तो सारा देश ही बनिया हो गया है, व्यापारी हो गया है। पूंजीपति शिक्षा बेचने का धंधा कर रहा है! स्व वित्त पोषित समस्त संस्थानों का यही कार्य है। गहराई में जाकर पता चलेगा कि उन्हें किसी को शिक्षा मिलने या न मिलने से कोई मतलब नहीं है। शिक्षालय हथकंडों से चलाए जा रहे हैं। न शिक्षक पढ़ाना चाहता है और न छात्र पढ़ना चाहता है। उससे पढ़ने के अलावा कुछ भी करवा लो। बस पढ़ने की मत कहो। नंबर चाहिए शत-प्रतिशत। यह कॉलेज का ठेकेदार मालिक जाने कि उसे क्या करना है! पैसा चाहे जितना ले लो, पर नंबरों से पेट भर दो। योग्यता को कौन पूछता है? बस डिग्री का कोरा पट्टा चाहिए। यही मानसिकता आदरणीय पूज्य पिताजी और आदरणीया पूज्या माताजी की भी रहती है। फिर क्या पढें फारसी बेचे तेल, ये देखो कर्ता के खेल। चार-पांच दशकों पहले एक लोकगीत बहुत लोकप्रिय हुआ था:-

'चाहे बिक जाय हरौ रुमाल
बैठूंगी मोटर कार में।
चाहे सास बिके चाहे ससुर बिके,
चाहे बिक जाय ननद, बैठूंगी मोटर कार में।
चाहे जेठ बिकै चाहे जिठनी बिकै,
चाहे बिक जाए सब घरबार,
बैठूंगी मोटर कार में।
चाहे दिवर बिकै दिवरानी बिकै
चाहे बिक जाए सब ससुराल,
बैठूंगी मोटर कार में।
चाहे बलम बिकै चाहे सौत बिकै
चाहे बिक जाय सासु कौ लाल,
बैठूंगी मोटर कार में।

नई ब्याहुली मोटर कार में बैठने के लिए सास-ससुर, घर-बार, जेठ-जेठानी, ननद, देवर-देवरानी, बलम, सौत सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार है। यही स्थिति आज एक जुवारी-शराबी की तरह देश की भी है। सत्तासन के लिए कुछ भी बेच देने की बात देखी और अनुभव की जा रही है। पर कहावत यह भी तो है कि जबरा मारे और रोने भी न दे। जुबान से बोलना तो दूर एक आंसू बहाना भी गुनाह है। कुल मिलाकर देश इन्ही की पनाह है। देश को गुलामी की ओर पुन: ले जाने का जबरदस्त व्यापार! मानों विक्रेताओं के सिर पर चढ़ा हुआ है खुमार। क्या करें साहित्यकार और क्या करें रचनाकार! निकाल ही सकता है लिख-लिख कर मन का गुबार। बिका हुआ है टीवी और अखबार। फिर क्या जो दुकानदार चाहें छपते हैं वही समाचार। शायद दुकानदारी से खुलता हो विकास का नवम द्वार!

● **डॉ. भगवत स्वरूप 'शुभम'**

PRISM®
CEMENT

प्रिज़्म® चैम्पियन प्लस

ज़िम्मेदारी मज़बूत और टिकाऊ निर्माण की.

- ज्यादा मज़बूती
- ज्यादा महीन कण
- ज्यादा वर्कबिलिटी
- बेहतरीन निर्माण कार्य
- इको–फ्रेन्डली
- कन्सिसटेंट क्वालिटी
- ज्यादा प्रारम्भिक ताक़त
- ज्यादा बचत

PRISM®
चैम्पियन प्लस
सीमेंट

दूर की सोच®

Toll free: 1800-572-1444 Email: cement.customerservice@prismjohnson.in

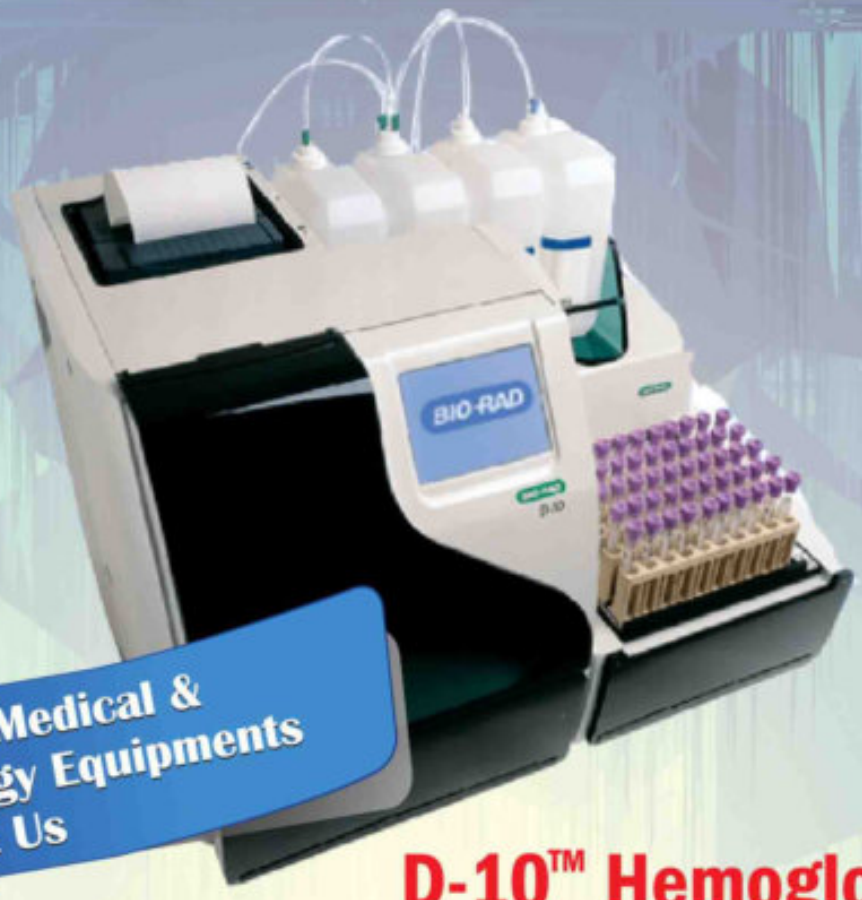

For Any Medical & Pathology Equipments Contact Us

D-10™ Hemoglobin Testing System

For HbA_{1c}, HbA_2 and HbF

Flexible
to solve more testing needs

Comprehensive
B-thalassemia and diabetes testing

Easy
for simple operation

Dependability is about more than keeping your laboratory running smoothly; It's about the quality diabetes care you support. That's why we developed the D-10™ System with reliability and efficiency in mind.

A simple, fully-automated solution, the D-10™ System Combines diabetes and B-thalassemia testing, enabling rapid HbA_{1c} or $HbA_2/F/A_{1c}$ testing using pripary tube sampling-so you can accomplish more in fewer steps, With the D-10™ System, It's easier to deliver a full picture of diabetes treatment progress-and that can be the difference for the people who count on you most.

SCIENCE HOUSE MEDICAL PVT. LTD.

C-65, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
GST.No. : 23AAPCS9224G1Z5 Email : shbple@rediffmail.com
Phone : +91-0755-4241102, 4257687, Fax : +91-0755-4257687